''कोटा संभाग में पर्यटन की दशा-दिशा''
सामाजिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य में

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

की

पीएच.डी. (अर्थशास्त्र) की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

2015

शोध निदेशक

डॉ. जी.एल.मालव

विभागाध्यक्ष (अर्थशास्त्र)

राजकीय महाविद्यालय, कोटा (राज.)

शोधार्थी

इन्द्रेश पचौरी

कोटा विश्वविद्यालय,कोटा

डॉ. जी.एल. मालव
विभागाध्यक्ष - अर्थशास्त्र
राजकीय महाविद्यालय, कोटा

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि इन्द्रेश पचौरी पुत्र श्री केशव देव शर्मा ने मेरे निर्देशन में ''**कोटा संभाग में पर्यटन की दशा-दिशा, सामाजिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य में**'' विषय पर कोटा विश्वविद्यालय, कोटा से पीएच.डी. (अर्थशास्त्र) की उपाधि हेतु शोध कार्य किया है।

मैं इस शोध प्रबन्ध को पीएच.डी. (अर्थशास्त्र) हेतु मूल्यांकनार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करता हूँ तथा इनकी उपस्थिति पूर्ण रही है।

शोध निदेशक

दिनांकः
स्थान :

(डॉ. जी.एल. मालव)
विभागाध्यक्ष - अर्थशास्त्र
राजकीय महाविद्यालय, कोटा

प्रमाण-पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि कोटा विश्वविद्यालय, कोटा से पीएच.डी. (अर्थशास्त्र) में ''**कोटा संभाग में पर्यटन की दशा-दिशा, सामाजिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य में**'' विषय पर लिखित शोध- प्रबन्ध मेरे द्वारा किया गया पूर्णतः मौलिक कार्य है । इस समग्र विषय अथवा इसके किसी भी अंश पर कोई भी उपाधि प्रदान नही की गई है।

मैं इस शोध प्रबन्ध को पीएच.डी. (अर्थशास्त्र) हेतु मूल्यांकनार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

शोधार्थी

दिनांकः
स्थान :

(इन्द्रेश पचौरी)

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

प्राक्कथन

मानव की घूमने-फिरने की प्रवृत्ति में वृद्धि होने से पर्यटन का विकास तीव्र गति से हो रहा है और आज एक प्रमुख उद्योग के रुप में उभर कर सामने आया है। इस क्षेत्र से वर्ष 2008 में 11.7 अरब अमरीकी डॉलर की विदेशी मुद्रा के रुप में भारत को प्राप्त हुए। इसमें घरेलू पर्यटकों की बढ़ती इच्छा, जिज्ञासा, कमाई में बढ़ोतरी और घुमक्कड़ी के ताजा शोक को भी शामिल कर लें तो हमारे सम्मुख जिस पर्यटन क्षेत्र की तस्वीर तैयार होती है वह संभवतः दुनियाभर में सबसे तेज गति से बढ़ रहे पर्यटन उद्योग की तस्वीर है।

पारम्परिक रुप से विरासत, संस्कृति और तीर्थाटन पर केन्द्रित पर्यटन क्षेत्र में नवीन क्षितिज खुले हैं और पर्यटक अब भारतीय अस्पतालों, स्वास्थ्य केन्द्रों, योग केन्द्रों, आयुर्वेद तथा चिकित्सा की अन्य वैकल्पिक प्राविधियों की ओर पहुँच रहे हैं। ''अतुल्य भारत'' एक ब्रॉड बन चुका है और सरकार इसके विपणन के सभी प्रयास कर रही है। इस मजबूती के बावजूद भारतीय पर्यटन क्षेत्र में अभी काफी कुछ किये जाने की दरकार है। हालांकि हमारे पास पर्यटन की बढ़ोतरी के लिए अपेक्षित संसाधन मौजूद हैं, लेकिन अधिकांश जगहों पर बुनियादी सुविधाऐं बेहद नगण्य और प्राथमिक हैं।

पर्यटन आय के साथ सामाजिक दृष्टि से भी सामंजस्य का काम करता है। पर्यटन की असीम संभावनाओं को देखते हुए शोधार्थी द्वारा पर्यटन को शोध विषय के रुप में चुना गया है।

यहाँ प्रस्तुत शोध का संबंध राजस्थान राज्य जो अपने ऐतिहासिक स्थलों, संस्कृति के कारण विश्व भर में जाना जाता है, के कोटा संभाग के पर्यटन से संबंधित है।

प्रस्तुत शोध का शीर्षक **''कोटा संभाग में पर्यटन उद्योग की दशा-दिशा सामाजिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य में''** है। प्रस्तुत शोध के अंतर्गत कोटा संभाग के पर्यटन का गहन निरीक्षण किया गया है। जिसे आठ अध्यायों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय-प्रथम : ''परिचय'' प्रस्तुत अध्याय में विषय का परिचय दिया गया है। साथ ही संबंधित साहित्य का अध्ययन, शोध प्रारुप, शोध विधि को प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय द्वितीयः- ''पर्यटन उद्योग'' इस अध्याय में पर्यटन उद्योग की अवधारणा, पर्यटन के भेद, पर्यटन की विशेषताऐं, पर्यटन के प्रभाव, भारत में पर्यटन का उद्भव एवं विकास आदि को प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय तृतीयः- ''पर्यटन का वर्गीकरण'', इस अध्याय में पर्यटन को घरेलू पर्यटन व अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन के स्वरुप को विस्तृत रुप से उल्लेखित किया गया है।

अध्याय चतुर्थः- ''पर्यटन के प्रकार एवं स्वरुप'' इस अध्याय में पर्यटन के प्रकार व उसके स्वरुप का विस्तृत वर्णन किया गया है।

अध्याय पंचमः- ''कोटा संभाग के पर्यटन स्थल'' इस अध्याय में कोटा संभाग के पर्यटन स्थलों का विस्तृत रुप से वर्णन किया गया है। साथ ही कोटा संभाग में पर्यटन की संभावनाओं को स्पष्ट किया गया है।

अध्याय षष्ठमः- ''कोटा संभाग में पर्यटन की आधारभूत सुविधाऐं''। इस अध्याय में कोटा संभाग में उपलब्ध पर्यटन सुविधाओं जैसेः- सड़क परिवहन, रेल परिवहन, होटल, मनोरंजन साधन, मॉल आदि को विस्तृत रुप से प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय सप्तमः-"कोटा संभाग में पर्यटन विकास का आर्थिक एवं सामाजिक प्रभाव" प्रस्तुत अध्याय में पर्यटन विकास में सरकारी क्षेत्र केन्द्र व राज्य की भूमिका, कोटा संभाग में पर्यटन के फलस्वरुप सामाजिक व आर्थिक प्रभाव को जाना गया है।

अंतिम अध्याय अष्टमः- "उपसंहार", इस अध्याय में अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो को प्रस्तुत किया गया है।

किसी भी व्यक्ति का कोई भी कार्य जब तक सफल नहीं होता जब तक ईश्वर की कृपा व गुरुजनों एवं माता-पिता का आशीर्वाद व उचित मार्गदर्शन तथा प्रेरणा नहीं मिलती। प्रस्तुत शोध प्रबंध में मुझे जिन महापुरुषों से अपार स्नेह और सहयोग प्राप्त हुआ है। उनके प्रति आभार व्यक्त करना मेरा परम कर्तव्य है।

सर्वप्रथम में अपने परम श्रद्धेय आदरणीय गुरुजी एवं मार्गदर्शक डॉ. जी.एल. मालव जी का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होने मुझे शोध संबंधी मार्गदर्शन एवं मेरे ज्ञान को विस्तारित करने का सौभाग्य प्रदान किया, जिनके आर्शीवाद से मैनें अपना शोध कार्य पूर्ण किया।

इसके पश्चात मैं भारतीय सामाजिक अनुसंधान परिषद, (आई.सी.एस.एस.आर.) नई दिल्ली का आभार व्यक्त करता हूँ जिसने शोध के लिये आवश्यक वित्त उपलब्ध कराया तथा अर्थशास्त्र विभाग के व्याख्याता श्री अभिताभ बासु का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होने समय-समय पर अपने ज्ञान द्वारा मुझे शोध कार्य के लिये प्रेरित किया।

मैं गणित विभाग के डॉ. अरुण कुमार जी का भी आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होनें अपनी व्यस्तता में से समय निकालकर शोध संबंधी जानकारीयाँ प्रदान की। साथ ही लोक प्रशासन विभाग के डॉ. वी.के.सिंह जी का भी आभारी हूँ जिन्होनें अपने ज्ञान द्वारा शोध कार्य में मेरी मदद की तथा राजनीति शास्त्र की व्याख्याता श्रीमती डॉ. मंजू मालव का भी मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होनें शोध संबंधी जानकारियाँ मुझे प्रदान की तथा

शोध के लिये समय-समय पर प्रेरित किया। डॉ. राजेन्द्र सिंह विभागाध्यक्ष (अर्थशास्त्र) डी.ए.वी. कॉलेज, बुलन्दशहर द्वारा भी मुझे समय-समय पर शोध कार्य के लिये प्रेरित किया गया।

इसके साथ ही पर्यटन विभाग क्षेत्रीय कार्यालय कोटा के उपनिदेशक नंद लाल अलावदा जी का भी हृदय से आभार प्रदर्शित करता हूँ जिन्होनें पर्यटन संबंधी सामग्री समय-समय पर उपलब्ध करायी। साथ ही कोटा संभाग के पर्यटन के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारियाँ दीं।

साथ ही मैं अपनी धर्मपत्नी श्रीमती रीनू कुमारी का भी आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होनें अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

इनके अतिरिक्त अन्य व्यक्तियों जिनमें मंथन कम्प्यूटर के संचालक श्री प्रदीप्त सिंह पँवार एवं मोहम्मद अफजल हुसैन, मोहित अंसारी द्वारा भी अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया गया तथा मेरे मित्र नवनीत जैन, डॉ. बृजेश कुमार, डॉ. अरुण कुमार, सुनील कुमार, उमेद सिंह जी, कोमल कुमार, जगदीश कुमार आदि द्वारा भी मुझे शोध कार्य के लिए प्रेरित किया गया।

अंत में मैं उन सभी श्रेष्ठजनों एवं महानुभावों का पुनः आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होनें प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रुप से शोध कार्य पूर्ण करने में पूर्णतः सहयोग प्रदान किया, मैं अपना शोध प्रबंध परीक्षण के लिए प्रस्तुत करता हूँ।

दिनांकः

इन्द्रेश पचौरी

अनुक्रमणिका

अध्याय क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
अध्याय : प्रथम	परिचय	01-25
	1.1. संबंधित साहित्य का अध्ययन	
	1.2. शोध पैराडाइम	
	1.3. अध्ययन विधि	
अध्याय : द्वितीय	पर्यटन उद्योग	26-46
	2.1 पर्यटन की अवधारणा	
	2.2 पर्यटन उद्योग का क्षेत्र	
	2.3 पर्यटन के भेद	
	2.4 पर्यटन की विशेषताऐं	
	2.5 पर्यटन के प्रभाव	
	2.6 पर्यटन का विकास	
अध्याय : तृतीया	पर्यटन का वर्गीकरण	47-72
	3.1 घरेलू पर्यटन	
	3.2 अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन	
अध्याय : चतुर्थ	पर्यटन के प्रकार एवं स्वरूप	73-92
	4.1 उद्देश्यों के आधार पर पर्यटन के प्रकार	
	4.2 पर्यटन के स्वरुप	
अध्याय : पंचम्	कोटा संभाग के पर्यटन स्थल	93-113
	5.1 कोटा के पर्यटन स्थल	

5.2 बूँदी के पर्यटन स्थल

5.3 सवाईमाधोपुर के पर्यटन स्थल

5.4 झालावाड़ के पर्यटन स्थल

5.5 कोटा संभाग में पर्यटन की संभावनाऐं

5.6 कोटा संभाग में आयोजित होने वाले उत्सव व मेले

अध्याय : षष्ठ्म कोटा संभाग में पर्यटन की आधारभूत सुविधाऐं 114-161

6.1 यातायात सुविधाऐं

6.2 आवास सुविधाऐं

6.3 कोटा संभाग में पर्यटन की अन्य सुविधाऐं

अध्याय : सप्तम कोटा सम्भाग में पर्यटन विकास का आर्थिक एवं सामाजिक प्रभाव 162-196

7.1 पर्यटन विकास में सरकारी क्षेत्र की भूमिका

7.2 राजस्थान राज्य सरकार की पर्यटन में भूमिका

7.3 कोटा संभाग में पर्यटन की स्थिति

7.4 कोटा संभाग की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति

7.5 कोटा संभाग में पर्यटन का आर्थिक एवं सामाजिक प्रभाव

7.6 कोटा संभाग में शहरी विकास एवं जीवन स्तर

7.7 कोटा संभाग में पर्यटन का सामाजिक प्रभाव

अध्याय : अष्टम् उपसंहार 197-203

8.1 निष्कर्ष

8.2 सुझाव

परिशिष्ठ (i) सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

परिशिष्ठ (ii) प्रश्नावली

अध्याय– प्रथम

परिचय

1.1 संबंधित साहित्य का अध्ययन

1.2 शोध पैराडाईम

1.3 अध्ययन विधि

अध्याय–प्रथम
परिचय

पर्यटन आज विश्व का सर्वाधिक गतिशील, रोजगारोन्मुख, श्रम अभिमुख, विकासशील, धुआँ रहित एवं विदेशी मुद्रा अर्जन करने वाला उद्योग है। आज विश्व के सम्मुख विशेषकर विकासशील देशों के सामने भुगतान असन्तुलन, विदेशी मुद्रा भण्डार एवं विदेशी मुद्रा अर्जन को भयंकर समस्या है। पर्यटन एक ऐसा उद्योग है जो बिना कुछ निर्यात किये अन्तर्राष्ट्रीय जगत की विदेशी मुद्रा भुगतान की समस्या के निराकरण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। यही कारण है कि आज विश्व का प्रत्येक देश पर्यटन विकास के लिए प्रयत्नशील एवं जागरूक है। वर्तमान समय में पर्यटन आर्थिक, सामाजिक, सास्कृतिक एवं राजनैतिक विचारों के विनिमय का एक मात्र सुलभ उपादान है विकासशील देशों के लिए विदेशी मुद्रा प्राप्ति के अलावा अन्य बहुमुखी उपादेयताएं इस उद्योग से प्राप्त होती है। सांस्कृतिक आदानप्रदान का तो पर्यटन उद्योग पर्याय ही बन गया है। विभिन्न देशों के मध्य सद्भाव और सौहार्द उत्पन्न करने में पर्यटन उद्योग का कोई मुकाबला नहीं है। यही कारण है कि आज सम्पूर्ण विश्व में पर्यटन विकास को प्राथमिकता दी जाने लगी है।

पर्यटन मनुष्य के विकास का पर्याय है, उसकी क्षमता का मूल्यांकन करने तथा उसकी क्षमता का विकसित करने का साधन और माध्यम भी। केवल भौतिक नहीं अपितु मानसिक व आध्यात्मिक क्षमता का विकास है पर्यटन। स्वयं की भौतिक क्षमता को जानने के लिए आवश्यक है मानसिक विकास। अतः भौतिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक तीनों तत्वों के विकास का मार्ग और साधन हैपर्यटन।

पर्यटन अर्थात देशदेशांतर का भ्रमण सतयुग के तुल्य है क्योंकि चलना ही जीवन है, रूकना मृत्यु है। भारत भूमि पर जहां चप्पाचप्पा असीम प्राकृतिक

सुषमा और सौन्दय, भौगोलिक विशिष्टता तथा आध्यात्मिक ऊर्जा से भरपूर है, पर्यटन जीवन शक्ति का अजस्त्र श्रोत है भौतिकता की जड़ता को निकालकर निःसर्ग से संसर्ग करना ही सही अर्थो में पर्यटन की अवधारणा को साकार करता है। यही कारण है कि 21 वीं सदी में पर्यटन न केवल एक आर्थिक क्रिया बनकर उभरा है अपितु यह विश्व के सबसे लाभप्रद एवं सबसे बड़े उद्योग के रूप में प्रतिष्ठित होने जा रहा है। विगत दो दशको से पर्यटन उद्योग का इतनी तीव्र गति से विकास हुआ है कि पर्यटन के प्रति लोगों का दृष्टिकोण ही बदल गया है और सभी राष्ट्रों में पयटन के प्रति नई अवधारणा विकसित हो रही है। आज पर्यटन उद्योग न केवल विदेशी मुद्रा उत्पन्न करने वाला महत्वपूर्ण साधन है अपितु यह राष्ट्रीय एकता एवं अन्तर्राष्ट्रीयवाद का भी पोषक है। पहले जहाँ हर राष्ट्र केवल धार्मिक एवं एतिहासिक महत्व के पर्यटन स्थाला के भमण को महत्व देते थे लेकिन वहीं वतमान समय में यह पर्यटका की पसन्द, अभिरूची, मनोरंजन और सुख सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न प्रकार की गतिविधयों के माध्यम से पर्यटको को आकर्षित करने वाली क्रिया के रूप में विकसित हो रहा है।[1]

पर्यटन के बढते स्वरूप का अनुमान इन तथ्यों से लगाया जा सकता है कि वर्ष 2000 में अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटको की संख्या जहां 69.88 करोड़ थी वहीं 2005 में अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटको की संख्या 75 करोड़ हो गई। टुरिज्म बेरामीटर UNWTO के अनुसार वर्ष 2013 में अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटको की वृद्धि दर 5 प्रतिशत रही है। UNWTO का अनुमान है कि 2020 में विश्व पर्यटको की संख्या 1.20 अरब हो जाएगी।[2]

विश्व के सकल घरेलू उत्पाद में पर्यटन क्षेत्र का योगदान लगभग 12 प्रतिशत है तथा विश्व के कुल रोजगार में प्राप्त लोगों मे से 10 प्रतिशत लोग इस उद्योग में कार्यरत है। भारत में अब पर्यटन को मुख्य आर्थिक सामाजिक क्रिया मानकर उद्योग का दर्जा दिया जा चुका है।[3]

भारत में पर्यटन क्षेत्र प्रफुल्लित हो रहा है। विदेशी पर्यटक आगमन वर्ष 2002 में 23.8 लाख की तुलना में वर्ष 2008 में 52.8 लाख हो गया और पर्यटन क्षेत्र में विदेशी मुद्रा की कमाई वर्ष 2002 में 3.1 अरब अमेरीकी डॉलर से बड़कर 2008 में 11.7 अमेरीकी डॉलर पर पहुच गई। दुनिया भर में पर्यटन क्षेत्र पर असर डालने वाली वैश्विक मंदी के बावजूद 2010 की पहली तिमाही के दौरान अन्य देशों से पर्यटको के आगमन और उनसे विदेशी मुद्रा अर्जन में क्रमशः 12.8 प्रतिशत और 41.3 प्रतिशत वृद्धि हुई है। अनुमानों के अनुसार पर्यटन क्षेत्र का भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 5.92 प्रतिशत और कुल रोजगार के अवसरों (प्रत्यक्ष एंव परोक्ष) में 9.24 प्रतिशत या 4 करोड़ 98 लाख का सृजन होता है। योजना आयोग ने अपनी 11 वीं योजना के दस्तावेज में कहा है कि यह देश का सबसे बड़ा सेवा क्षेत्र है और इसका महत्व इस बात में है कि यह आर्थिक विकास एवं रोजगार सृजन और खासतौर से दूरदराज और पिछड़े इलाकों में रोजगार के अवसर पैदा करने का महत्वपूर्ण साधन है। पर्यटन केवल आर्थिक उन्नति का साधन ही नहीं है बल्कि सामाजिक रूप से भी एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता है।[4]

पर्यटन भारत की आर्थिकसामाजिक विकास की रीढ़ रहा है क्योंकि यह राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं बल्कि स्थानोय स्तर पर भी रोजगार के असीमित अवसर प्रदान करता है। भारत में तोर्थस्थलों की यात्रा का इतिहास सदियों पुराना है और धार्मिक पर्यटन के रूप में ख्याति प्राप्त की है। भारत में पर्यटन एक ऐसे उद्योग के रूप में स्थापित हो चुका है। जो करीब 32 लाख डॉलर का कराबार कर रहा है। भारत के GDP में इसका हिस्सा 5.3 प्रतिशत है। विदेशी पर्यटको की तादाद सालाना 20 से 25 प्रतिशत वार्षिक दर से बढ़ रही है। सन् 2010—12 के बीच इनकी तादाद एक करोड़ पहुच जाएगी।[5]

राजस्थान भारत का पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण राज्य है। राजस्थान अपने गौरव पूर्ण अतीत, वीरों की अमर गाथाओं से गुंजित, प्राचीन भव्य स्मारकों, किलों तथा अनुपम स्थापत्य कला के प्रतीक महलों, मन्दिरों, हवेलियों, रंगीले त्याहारों, रितिरिवाजों तथा मोहक रंगबिरंगी पोशाकों के लिए

प्रसिद्ध है। राजस्थान में जहां एक ओर जैसलमेर का 800 वष से भी पुराना सोनार किला है, वहीं दूसरी ओर महाराणा प्रताप की शौर्य गाथा का प्रतीक चित्तौड़गढ़ का शानदार किला है। भरतपुर में जहाँ एक ओर विश्व प्रसिद्ध घाना राष्ट्रीय पक्षी विहार है जो लगभग 400 किस्म के देशी व विदेशी पक्षियों की प्रजातियों का अक्षय स्थल है, वहीं दूसरी ओर झीलों की नगरी उदयपुर है। संसार का एक मात्र बह्माजी का मन्दिर भी राजस्थान के पुष्कर में है तो वहीं मुस्लिम धर्मावलम्बियों का श्रद्धास्थल दरगाह शरीफ भी अजमेर में है। रणथम्भौर व सरिस्का स्थित बाघ परियोजना एवं राष्ट्रीय मरूउद्यान जैसलमेर में जहां ग्रेट इण्डियन बस्टर्ड को देखा जा सकता है। राजस्थान के कोने–कोन में ऐतिहासिक एव सांस्कृतिक दृष्टि से सम्पन्न इमारतों का एक खजाना है।

प्रशासनिक दृष्टि से राजस्थान में 33 जिले ह और सात सम्भाग ह जो इस प्रकार ह : अजमेर, भरतपुर, बीकानेर, जयपुर, जोधपुर, कोटा और उदयपुर तथा 33 जिलो में 244 तहसील है।[6]

राजस्थान राज्य की पर्यटन विशेषताओं को देखते हुए राजस्थान सरकार द्वारा 1989 में पर्यटन को उद्योग का दर्जा प्रदान किया गया।

प्रस्तुत शोध कोटा सम्भाग (कोटा, बून्दी, झालावाड़, बारा) तथा सवाईमाधोपुर पर्यटन के क्षेत्र पर आधारित है।

ऐतिहासिक पृष्ठ भूमिः

राजस्थान राज्य का दक्षिण–पूर्वी क्षेत्र हाड़ौती नाम से जाना जाता है जो हाड़ा राजपूतों की भूमि है जो चौहान राजपूतो की शाखा है। हाड़ौती में 1342 ई. में चौहान वंश का शासन स्थापित हुआ। इसकी स्थापना देव सिंह ने की। 1374 ई. में कोटा को इसकी राजधानी बनाया गया। हाड़ौती में वर्तमान में कोटा, बून्दी, झालावाड़, बारा क्षेत्र आते हैं। इस क्षेत्र में महाभारत के समय से मीणा जाति का निवास स्थान था। मध्यकाल में यहाँ मीणा जाति का राज्य स्थापित हो गया था। कोटा प्रारम्भ में बून्दी रियासत का हो एक

भाग था। शाहजहाँ के समय बूँदी नरेश राव रतन सिंह के पुत्र माधोसिंह के समय कोटा स्वतंत्र राज्य के रूप में अस्तित्व में आया कोटा पूर्व में कोटीया भील के नियंत्रण में था, जिसे बूंदी के चौहान वंश के संस्थापक देवा के पौत्र जैत्र सिंह ने मारकर अपने अधिकार में कर लिया था। कोटीया भील के कारण इसका नाम कोटा पड़ा।[7]

सवाईमाधोपुरः

सवाईमाधोपुर नगर 1763 ई. में सवाई माधोसिंह न बसाया। जयपुर महाराजा ईश्वर सिंह द्वारा आत्म बलिदान कर लेने के बाद माधोसिंह जयपुर की गद्दी पर बैठे। माधोसिंह के राजा बनने के बाद मराठा सैनिको का कत्लेआम कर दिया गया। मुगल बादशाह अहमदशाह ने रणथम्भौर किला माधोसिंह को दे दिया। इससे नाराज होकर कोटा महाराव ने जालिम सिंह के नेतृत्व में जयपुर पर आक्रमण कर 1761 ई. में भटवाड़ा के युद्ध में जयपुर की सेना को हराया। इसके बाद सवाई माधोसिंह ने रणथम्भौर दुर्ग के पास सवाई माधोपुर नगर बसाया। 1768 ई. में इनकी मृत्यु हो गई।[8]

भौगोलिक स्थितिः

कोटा–बारा[9]:

कोटा राजस्थान के दक्षिणी पूर्वी भाग में स्थित है। यह $24^0 25'$ से $25^0 51'$ उत्तरी आक्षांश तथा $75^0 35'$ से $77^0 29'$ दक्षिणी देशान्तर के बीच स्थित है। इसके पश्चिम में चित्तौड़गढ़, दक्षिण में झालावाड़ व मध्यप्रदेश का मन्दसोर जिला, पूर्व में बारा जिला एंव पश्चिम में बूंदी जिला है। इसका क्षेत्रफल 193. 58 वर्ग कि.मी. है समुद्रतल से उँचाई 251.1 मी. है। गर्मी में न्यूनतम तापमान 29.7 ब^0 तथा औसत तापमान 41.6 C^0 रहता है। जबकि सर्दियों में न्यूनतम तापमान 11.6 C^0 तथा औसत तापमान 24.5 C^0 रहता है।

यहा वर्षा का औसत 88 सेंटीमीटर रहता है। यहाँ पर्यटन के लिए अनुकूल मौसम अक्टूबर से फरवरी तक रहता है। यहाँ के लोगों द्वारा हिन्दी, अंग्रजी, राजस्थानी भाषा बोली जाती है।

बूँदी[10]:

राजस्थान राज्य के दक्षिणपूर्व में स्थित एक अनियमित, समतल व चतुभुजाकार बूंदी जिला $24^0 59''$ और $25^0 33''$ उत्तरी आक्षांश तथा $75^0 19$ 30" से $76^0 19$ 30" पूर्वी देशान्तर के अन्दर फैला हुआ है। बूँदी मुख्यतः पहाड़ी क्षेत्र है, पश्चिम भाग में अरावली की पहाड़ीयाँ है। यहा विध्याचल और अरावली दोना पहाड़ी श्रेणियाँ हैं। क्षेत्रफल लगभग 5628 कि.मी. है समुद्रतल से उंचाई 515 मी. है। यहा न्यूनतम औसत तापमान 35.0 c^0 तथा औसत अधिकतम तापमान 43.0 c^0 रहता है। जबकी सर्दियों में न्यूनतम तापमान 5.0 c^0 तथा अधिकतम तापमान 30.7 c^0 रहता है। औसत वर्षा 75 सेंटीमीटर होती है। यहां पर्यटन के लिए अनुकूल मौसम अगस्त से फरवरी तक रहता है। यहाँ हिन्दी, अंग्रेजी व राजस्थानी भाषाएं बोली जाती है।

झालावाड़[11]:

झालावाड़ सौन्दर्य तथा खनिज सम्पदाओं से समृद्ध विध्यांचल पर्वत मालाओं में अधिष्ठित यह जिला दक्षिणी पूर्व कोने पर $23^0 45'$ 20" से 24^0 52' 17" उत्तरी अक्षांश एंव $75^0 27'$ 35" से $76^0 56'$ 48" पूर्वी देशान्तर के मध्य मालवा पठार के पास स्थित है इसका क्षेत्रफल 6,215 वर्ग कि.मी. है। समुद्रतल से ऊँचाई 316 मी. है तथा गर्मी में न्यूनतम औसत तापमान 27.0 c^0 और अधिकतम औसत 42.0 c^0 रहता है तथा सर्दी में न्यूनतम औसत तापमान 9.5 c^0 रहता है तथा अधिकतम औसत तापमान 25.0 c^0 रहता है औसत वर्षा 6075 सेन्टीमीटर होती है। पर्यटकों के लिए अनुकूल मौसम सितम्बर से मार्च तक रहता है।

सवाईमाधोपुर[12]:

सवाईमाधोपुर राज्य के दक्षिणपूर्व भाग में $25^0 45$ से 27^0 उत्तरी अक्षांश एंव $75^0 59$ से $77^0 23$ से पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है यहाँ न्यूनतम औसत तापमान गर्मी में 23.0 c^0 और अधिकतम औसत तापमान 45.0 c^0 रहता है और सर्दियों में न्यूनतम 5.0 c^0 तथा अधिकतम 29.0 c^0 रहता है औसत 75 सेन्टीमीटर वर्षा होती है।

पर्यटन सामाजिक आर्थिक विकास में महत्पूर्ण भूमिका निभाता है। अन्य उद्योगों की तरह ही पर्यटन भी रोजगार तथा आय के साधन उत्पन्न करता है। राजस्थान राज्य में पर्यटन सामाजिक व आर्थिक विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है और यहाँ पर्यटन व्यक्तियों को रोजगार व आय के अवसर उपलब्ध करा सकता है। अतः पर्यटन की राज्य में भूमिका को देखते हुए उपयुक्त शोध विषय का चुनाव किया गया है जिसके निम्न उद्देश्य निर्धारित किऐ गए हैं।

1. कोटा सम्भाग में पर्यटन के लिए आधारभूत सुविधाओं का पता लगाना।
2. कोटा सम्भाग में पर्यटन के क्षेत्र में रोजगार की सम्भावनाओं का पता लगाना।
3. पर्यटन का आथिक एव सामाजिक प्रभाव जानना।
4. कोटा सम्भाग में पर्यटन के आर्थिक प्रभावों का अध्ययन करना।
5. राजस्थान सरकार के पर्यटन विभाग द्वारा कोटा सम्भाग के विकास के लिए किए गए प्रयासों का पता लगाना।

प्रस्तुत शोध में निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है

1. कोटा सम्भाग के पर्यटन उद्योग से रोजगार में वृद्धि हुई है।
2. कोटा सम्भाग में पर्यटन से होने वाली आय में वृद्धि हुई है।
3. कोटा सम्भाग में पर्यटन के फलस्वरूप शहरी संस्थागत विकास एवं व्यक्तियों के जीवन स्तर में वृद्धि हुई है।

1.1 सम्बन्धित साहित्य का अध्ययनः

प्रस्तुत शोध शीर्षक ''कोटा सम्भाग में पर्यटन उद्योग की दशा–दिशा सामाजिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष में'' के सन्दर्भ में सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया गया है।

1. विश्व यात्रा एवं पर्यटन परिषद (WTTC) (2010)[13] :

WTTC के विश्वव्यापी आकलन के अनुसार 2010 में पर्यटन क्षेत्र कुल रोजगार में 8.1 प्रतिशत का योगदान करेगा, 23 करोड़ 50 लाख लोगों को रोजगार देगा या प्रति 12.3 रोजगारां मे से एक रोजगार पर्यटन क्षेत्र में होगा।

2.सिंह (1978)[14]:

हिमाचल प्रदेश में शिमला के विशेष सन्दर्भ में आर्थिक सम्भावनाओं पर अपना अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य पर्यटन से उत्पन्न होने वाले विभिन्न आर्थिक पक्षों का विश्लेषण करना था। इस अध्ययन का संबन्ध हिमाचल प्रदेश में पर्यटन की सम्भावनाओं का पता लगाना था। इसके लिए प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का प्रयोग किया था। इस अध्ययन का सम्बन्ध हिमाचल प्रदेश में पर्यटन की संभावनाओं का पता लगाना था। उन्होनें स्पष्ट किया कि यहाँ पर्यटन विकास की असीम संभावनाऐं मौजूद हैं। यह प्रदेश प्राकृतिक संसाधन तथा पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण रोजगार तथा आय और साथ ही विदेशी विनिमय उत्पन्न करने में पर्यटन सहयोग कर सकता है।

4. DWYER (2000)[15]:

द्वारा आन्ध्र प्रदेश में पर्यटन का आर्थिक सहयोग पर अध्ययन किया गया और उन्होने यह पाया की पर्यटन के बढने से यहाँ कृषि, निर्माण, फर्नीचर, हैण्डीक्राफ्ट, ज्वैलरी और लैदर उद्योग का काफी विकास हुआ है तथा यहाँ पर्यटन से आय में वृद्धि हुई है।

5.BUTCHER (2003)[16]:

द्वारा अपने अध्ययन में विकासशील देशों में पर्यटन का बड़े पैमाने पर विकास होने से गरीबी कम करने में सहयोग प्राप्त किया जा सकता है। उन्होने यह भी पाया कि इस क्षेत्र से उच्च श्राव होने से नकारात्मक प्रभाव भी प्राप्त होते हैं पर्यटन क्षेत्र का लाभ कमाने के उद्देश्य से प्रयोग अधिक हुआ है जिससे इसके नकारात्मक प्रभाव भी उत्पन्न हुए हैं।

6.BURN AND HOLDEN (1995)[17] :

पर्यटन क्षेत्र में राजगार के संबन्ध में निम्न विशेषताआ को पहचाना है

1. पर्यटन क्षत्र में राजगार की जो सम्भावनाऐं उत्पन्न होती ह वह अकुशल तथा अर्द्धकुशल प्रकार की होती ह।
2. पर्यटन क्षेत्र अधिकतर मौसमी रोजगार ही उत्पन्न करता है।
3. ज्यादातर देशों में, पर्यटन से जुड़े लोगों का कोई व्यापारिक संघ नहीं होता। यह स्थिति ज्यादातर विकासशील देशों के लिए सत्य है।

7. अजय कुमार शर्मा (2005)[18]:

द्वारा पुष्कर (राज.) में 'Impact of Tourism on the changing Environment of Pushkar' पर अध्ययन किया गया। जिससे उन्होर्ने निम्न निष्कर्ष प्राप्त किए:

1. यहाँ पर्यटन विकास की उच्च सम्भावनाऐं हैं यदि आधारभूत सुविधाओं को और अधिक विकसित किया जाए तो और अधिक पर्यटको को आकर्षित किया जा सकता है।
2. यहाँ वातावरणीय स्थिति को देखा जाए तो पर्यटको की संख्या सर्दियों में अधिक रहती है।
3. शोधकर्त्ता ने पाया की पुष्कर में पर्यटन के सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव देखने को मिले हैं लेकिन यहां पर्यटन के सकारात्मक प्रभाव नकारात्मक प्रभाव की अपेक्षा अधिक पाये गये हैं। जिससे पर्यटन का लोगों को अधिक लाभ प्राप्त हुआ है।

4. अपने अध्ययन में शोधकर्त्ता द्वारा यह भी पाया की पर्यटन पुष्कर में एक मुख्य आर्थिक गतिविधियाँ के रूप में सामने आया है। अतः निर्विवाद रूप से यह कहा जा सकता है कि पुष्कर में पर्यटन आर्थिक और सामाजिक जीवन में मुख्य भूमिका निभा रहा है।
5. शोधकर्त्ता द्वारा यह पाया गया कि पिछले दस वर्षो में पर्यटन से आर्थिक सामाजिक और भौतिक वातावरण में काफी परिवर्तन हुआ है।
6. पर्यटन के विकास से व्यापार और उपभोक्ता उत्पादों आदि में प्रभावपूर्ण परिवर्तन देखे गए हैं।

8.पाण्डेय (2006)[19]:

जोधपुर पर किए गए अपने अध्ययन में पाया की पर्यटन के विकास से स्थानीय समुदाय को रोजगार प्राप्त हुआ है।

9. Gjerald (2005)[20]:

के अनुसार पर्यटन का आर्थिकसामाजिक प्रभाव रोजगार में परिवर्तन लाता है। पर्यटन का विकास होने से मूल्य में वृद्धि होती है, लोगों के जीवन स्तर में वृद्धि होती है इसके अतिरिक्त पर्यटन के अन्य सामाजिक व आर्थिक प्रभाव भी दिखाई देते हैं।

10. Sebation and Rajagopalan (2009)[21]:

द्वारा केरल में पर्यटन का विकास होने से यह पाया गया कि यहाँ स्थानोय लोगों के जीवन स्तर में वृद्धि हुई है। पर्यटन के विकास से न केवल रोजगार के अवसर उत्पन्न हुए हैं साथ ही स्थानीय लोगों को एक नया व्यवसाय प्राप्त हुआ है।

11. Suntikul (2007)[22]:

द्वारा किए गए अध्ययन में पाया गया हैं कि Ban Nalam की जनसंख्या पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। पर्यटन से ही यहाँ के लोगों को आय प्राप्त होती है। जहाँ पर्यटन से प्राप्त आय का प्रयोग गाँव के लोगों के लिए स्वच्छ पानी की व्यवस्था के लिए किया गया।

भारत सरकार द्वारा भी पर्यटन के लाभ को ग्रामीण क्षेत्रों में पहुचाने का प्रयास किया जा रहा है। पर्यटन से जुड़े युवाओं, महिलाओं और अन्य आयु समूह जो आर्थिक रूप से कमजोर ह तथा पर्यटन के लाभ पूरी तरह से नहीं पहुँच पा रहे हैं। इसी के तहत पर्यटन का सामाजिक आर्थिक प्रभाव राजस्थान और केरल राज्य में अध्ययन किया गया। जहाँ Folk Artist और कलाकारों की 90 प्रतिशत आय पर्यटन गतिविधियों से ही प्राप्त होती हैं जिससे उच्च शिक्षा और बेहतर जीवन स्तर प्राप्त करते हैं। इसलिए पर्यटन स्थानीय समुदाय और सामाजिक मूल्यों का विकास करने में सहायक हो सकता है।

12. चौधरी, मंजुला (2010)[23]:

योजना मासिक पत्रिका में लेखिका द्वारा प्रस्तुत लेख पयटन क्षेत्र में मानव संसाधन विकास'' में बताया गया है कि पर्यटन क्षेत्र में 2010 के विश्वव्यापी आंकलन के अनुसार आशा है कि कुल रोजगार में 8.1 प्रतिशत का योगदान करगा यानी 23 करोड़ 50 लाख लोगों को रोजगार देगा या प्रति 12.3 रोजगार में से एक रोजगार पर्यटन क्षेत्र में होगा। अगलें 10 वर्षा में अर्थात 2020 तक इसमें और भी वृद्धि होगी और कुल रोजगार में 9.2 प्रतिशत का योगदान यानी 30 करोड़, 30 लाख रोजगार अथवा 10.9 रोजगार में से एक रोजगार का इजाफा होगा।

भारतीय अर्थव्यवस्था में रोजगार सृजन में इस क्षेत्र का योगदान समग्र रूप से उत्साहवर्धक है। वर्ष 2008 में कुल 03 करोड़ रोजगार यानी 15.6 रोजगार में से एक रोजगार इसी क्षेत्र में था। केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय की

ओर से जन शक्ति की आवश्यकताओं के बारे में तैयार किए गए एक शोध पत्र (2004) में अनुमान लगाया गया है। लेखक द्वारा बताया गया है कि पर्यटन उद्योग में कुशल जनशक्ति का न होना, प्रविधि में परिवर्तन के कारण कुशल जनशक्ति की मांग इस क्षेत्र में बड़ी है। अन्त में कुल मिलाकर पर्यटन उद्योग में मानव संसाधन विकास के प्रति दृष्टिकोण में परिपक्वता आती जा रही है और इसे धीर2 संगठन के प्रमुख कार्य निष्पादन संकेतका को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने वाले मुख्य कार्य निष्पादन संकेतका को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने वाले मुख्य कार्य के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है।

13.Todaro (1989)[24]:

के अनुसार विकास केवल आर्थिक प्रक्रिया ही नहीं है बल्कि बहुत सारी प्रक्रियाएं इसमें शामिल रहती हैं। विकास सामाजिक एवं आर्थिक प्रक्रिया में सामंजस्य बठाने का कार्य करता है यह केवल आय और उत्पादन में वृद्धि करने की प्रक्रिया नहीं है साथ ही संस्थागत परिवर्तनों में सुधार, सामाजिक और प्रशासनिक संरचना और विश्वास में परिवर्तन लाता है।

14 Wall and Mathieson (2006)[25]:

अपने अध्ययन पर्यटन प्रभाव के संबन्ध में कुछ तर्क प्रस्तुत किये हैं

प्रथम

भौतिक और सामाजिक की तुलना में आथिक प्रभावों से संबन्धित प्रभावों को सरलता से मापा जा सकता है, परन्तु सामाजिक प्रभावों की मात्रात्मकता को मापना कठिन है कुछ शोधकर्त्ताओं द्वारा गुणात्मक रूप से पर्यटन के सामाजिक प्रभावों का जानने का प्रयास किया गया।

द्वितीयः

सामाजिक और भौतिक प्रभाव को मापने के लिए विश्वसनोय आँकड़ों का अभाव रहता है जबकि आर्थिक प्रभाव को जानने में व्यय, रोजगार, आय

और कर राजस्व का आदि आँकड़े मौजूद रहते हैं, जिससे उन्हें मापा जा सकता है।

तृतोयः

सरकारी और निजी क्षेत्र का विश्वास है कि पर्यटन में निवेश का परिणाम बड़ी तेजी से प्राप्त होता है।

15. Cukier (2002)[26]:

द्वारा विकासशील देशा में पर्यटन और रोजगार के बीच सहसंबंध के बारे में छः सामान्यीकरण प्रस्तुत किए

1. पर्यटन विकास के साथ आय और रोजगार के बीच सहसंबन्ध सकारात्मक होता है।
2. रोजगार के अवसर उत्पन्न होना, पर्यटन उत्पादों पर निर्भर करता है। पर्यटन क्षेत्र में ज्यादातर रोजगार श्रम आधारित होते हैं।
3. देशा में पर्यटन विकास की आने वाली स्टैज अकुशल और कुशल लोगों के लिए अधिक रोजगार के अवसर उपलब्ध कराएगी।
4. पर्यटन उद्योग में प्रबन्धकीय पदों पर दूसरे देशों मे जाने वाले लोगों को अन्य क्षेत्रों मे कार्य करने वाले लोगों की अपेक्षा म कम आकर्षित करता है।
5. यद्यपि पर्यटन क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों को मौसमी और पार्ट टाईम रोजगार प्राप्त होता है लेकिन इस क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्ति इसी दौरान अच्छी कमाई कर लेते हैं। लेकिन निम्न मौसम में उनकी आय घट जाती है।
6. पर्यटन के विकास स रोजगार की सम्भावनाऐं उत्पन्न होने लगती हैं। पर्यटन से संगठित और असंगठित दोनों प्रकार का रोजगार उत्पन्न होता है।

16. Keyser (2002)[27]:

द्वारा सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक सन्दर्भ पर विचार करते हुए मेजबान मेहमान संबन्धों पर बल देते हुए बताया है कि जो सुविधाएं एवं साधन उपलब्ध होते हैं। उनका प्रयोग पर्यटक और स्थानीय लोग आपस में मिलकर करते हैं। जैसे कि समुद्री बोचस, रेस्टोरेंट, ऐतिहासिक महत्व के स्थलों पर मेजबान और मेहमान एक दूसरे के प्रभाव में आते हैं। उदाहरण के तौर पर खरीदने और बेचने, टूअर गाइड आदि क्रियाओं में साथसाथ शामिल रहते हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों का पर्यटकों द्वारा आनन्द प्राप्त किया जाता है और स्थानोय एतिहासिक स्थलों को देखते है। केवल इन स्थानों पर ही मेजबान और मेहमान का सामना होता है। पर्यटक, पर्यटन सुविधाओं पर अपनी आय का बड़ा हिस्सा व्यय करते है इसलिए वह स्थानीय लोगों के संपर्क में कम ही आते हैं।

17. Nadda और Sharma (2000)[28]:

क द्वारा किये गये अध्ययन के अनुसार हिमाचल प्रदेश में पर्यटन में वृद्धि होने से संयुक्त वृद्धि दर 10.02 प्रतिशत प्रतिवर्ष हो गई, खास कर घरेलू पर्यटन में वृद्धि देखी गयी, कुल पर्यटकों का 61 प्रतिशत पर्यटको ने मनोरंजन तथा साईट सिंग (sightseeing) के लिए हिमाचल प्रदेश की यात्रा की, 13.78 प्रतिशत व्यापार और मीटींग के तथा 10.39 प्रतिशत ने धार्मिक पर्यटन के लिए यात्रा की तथा 6.83 प्रतिशत ने सामाजिक सांस्कृतिक आयोजनों के लिए यात्रा की। कुल पर्यटको में 50 प्रतिशत ने गर्मियों के मौसम में मनोरंजन तथा Sight Seeing के लिए यात्रा की।

उन्होने यह भी पाया की भारतीय पर्यटक औसत रूप से 3.5 दिन के लिए ठहरते हैं। और यहां 627 रू0 औसत रूप से खर्च करते ह जबकि विदेशी पर्यटक 5.1 दिन ठहरते हैं और 712 रू0 खर्च करते हैं और उन्होनें

पर्यटन का आय और रोजगार गुणक प्रभाव भी प्राप्त किया। 1995–96 मे (ट्रेड, होटल और रेस्टोरेंट) ने अपना घरेलू उत्पादन के साथ 350.46 लाख का योगदान किया।

18. रैना, ए.के. और लोधा, आर.सी. (2004)[29]:

पर्यटन उद्योग की स्थिति तथा राजस्थान पर्यटन विकास निगम लिमिटेड (RTDC) की भूमिका तथा सरकार की नीतियों तथा पर्यटन तथा होटल उद्योग आदि का गहन विश्लषण किया गया और अन्त में अपने अध्ययन के आधार पर कुछ सुझाव दिए जो इस प्रकार हैः

1. राज्य में नए पर्यटन आकर्षणों का विकास किया जाना चाहिए जैसे पयावरणीय पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन, धरोहर पर्यटन, ऊँट सवारी, झीलों में हाऊस बोट और शिकार आदि का विकास किया जाना चाहिए।
2. जयपुर स्थित जवाहर कला केन्द्र को पर्यटन से जोड़ा जाना चाहिए।
3. राज्य सरकार द्वारा आधारभूत सुविधाओं का विकास पर्यटन की दृष्टि से किया जाना चाहिए।
4. राज्य सरकार द्वारा ग्रामीण पर्यटन को बढावा दिया जाना चाहिए। इस क्षेत्र में रोजगार की असीम संभावनाएं मौजूद हैं।
5. राज्य सरकार द्वारा एक मास्टर प्लान बनाकर जिला और कस्बों को बाह्रय एवं आन्तरिक सहायता उपलब्ध कराइ जानी चाहिए।
6. सरकार द्वारा पर्यटन को बढावा देन के लिए आवश्यक प्रचार किया जाना चाहिए। जैसेः दूरदर्शन, समाचारपत्रों, इन्टरनेट आदि द्वारा किया जाना चाहिए।
7. राजस्थान पर्यटन विकास की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण राज्य है जहाँ पर्यटन को बढाया जा सकता है। लेकिन उसके लिए आधारभूत सुविधाओं, सड़क परिवहन, एयर पोर्ट, रेल्वे स्थानीय परिवहन आदि का विकास आवश्यक रूप से किया जाना चाहिए।

19.गोयल, राजेश (2011)[30]:

लेखक ने भारतीय पर्यटन के विकास, धार्मिक तीर्थ स्थलों की यात्राओं से जुड़े आर्थिक पक्षों, पर्यटन नीति और नियोजन, भारतीय हस्तकला एवं पर्यटन तथा पर्यटन का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव आदि पक्षों का गहन अध्ययन प्रस्तुत किया है

लेखक द्वारा भारत में पर्यटन की शुरूआत तथा आजादी के उपरान्त भारतीय पर्यटन का विकास व आधुनिक समय में भारतीय पर्यटन को स्पष्ट करते हुए अन्त में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है जो इस प्रकार है

भारत में भौगोलिक विभिन्नताएं पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। इसलिए भारत सरकार ने विकास के लिए पर्यटन नीति की घोषणा की तथा विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में इसके लिए प्रावधान किए गए हैं। लेकिन भारत में पर्यटन विकास में कुछ बाधाएं भी हैं जैसे

वायुयानों आदि का समय से नहीं चलना, प्रशिक्षित गाइड एवं टूर ऑपरेटर्स का न होना, प्रचारप्रसार, विज्ञापन आदि का अभाव, कानून व्यवस्था का खस्ता होना, उचित परिवहन सुविधाओं का अभाव, टैक्सी एवं ऑटो रिक्शा चालकों की धोखाधड़ी।अन्त में सुझाव दिए गए है

1. अतिथि देवो भवः की मान्यता का आचरण।
2. सस्ती व उच्च स्तरीय आवासीय व खान पान सेवाऐं।
3. कानून व्यवस्था बनाने के लिए प्रयत्न करने चाहिए।
4. आधारभूत सुविधाओं का विकास किया जाना चाहिए। आदि सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

1.2 शोध पैराडाइम[31]:

सामाजिक शोधकर्ता, मात्रात्मक और गुणात्मक या दोनों का तर्क संगत ढंग से उद्देश्यों और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए वैयक्तिक अध्ययन विधि

का प्रयोग कर सकते हैं। (wale 1997) परिणात्मक विधियों में साँख्यिकीय पद्धतियाँ आती हैं और गुणात्मक विधियों में वैयक्तिक अध्ययन किया जा सकता है। वैयक्तिक अध्ययन एक गहन अध्ययन विधि है, जिसमें एक ही विषय का गहराई से अध्ययन किया जाता है। वैयक्तिक अध्ययन विधि किसी व्यक्ति, परिवार अथवा संस्था या समाज के सर्वांगीण अध्ययन का गुणात्मक आधार होती है। इस विधि में एक विशेष सामाजिक इकाइ को अध्ययन का केन्द्र बिन्दु मानकर उससे संबन्धित विस्तृत और गहन संरचनाओं का संकलन किया जाता है। यह अध्ययन न ता पूर्ण रूप से प्राथमिक सूचनाओं पर आधारित होता है और न ही द्वितीयक सामग्री के आधार पर ही इस अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार की सूचनाओं का प्रयोग किया जाता है।

शोधकर्ता, शोध समस्या का निर्णायक उत्तर प्राप्त करने के लिए मात्रात्मक विधि पर अधिक विश्वास करते हैं। गुणात्मक शोध विधि, शोध प्रक्रिया में बहुत बड़ो भूमिका निभाती है। गुणात्मक शोध के लिए मात्रात्मक शोध की तुलना में अधिक सूचनाओं का उपलब्ध होना आवश्यक है। (Lewis H.W. 1995)

Creswell (1998)[32]:

द्वारा मानव और सामाजिक समस्याओं की जांच के लिए स्पष्ट विधियों को समझाने के लिए परिभाषित किया है ''एक अच्छे गुणात्मक विधि का प्रयोग करने के लिए क्रिसबेल ने आठ विशेषताएं बतायी हैं जो इस प्रकार है

1. इस विधि में आँकड़ो का संग्रहण शोधकर्ता द्वारा बहुविधि प्रकार से करना चाहिए, शोधार्थी द्वारा शोध क्षेत्र में आवश्यकता अनुसार समय दिया जाना, सारांश प्रस्तुत करना चाहिए।
2. अध्ययन में गुणात्मक उपागम की मान्यताओं और विशेषताओं के साथ अध्ययन इकाईयों का बहुत छोटा न्यायदर्श लिया जाना चाहिए इसके

साथ ही आँकड़े एकत्रीकरण विधियों का सावधानी पूर्वक प्रयोग किया जाना चाहिए तथा शोध में शामिल व्यक्तियों के विचारों पर ध्यान केद्रित करना चाहिए।

3. इस प्रकार के अध्ययन में निरीक्षण के लिए शोधकर्त्ता एक से अधिक प्रभावशाली यन्त्रों को काम में लेता है।
4. सामान्यतौर से शोधकर्ता अपनो एक समस्या या विचार से प्रारम्भ करता है। सामान्यतः इस विधि में एक चर के औपचारिक संबंध पर ध्यान नहीं दिया जाता बल्कि अनेक चरों के बीच संबंध का मूल्यांकन किया जाता है।
5. इस अध्ययन विधि मे व्याख्यात्मक सिद्धान्त शामिल होने चाहिए, उपागम की शुद्धता के लिए आँकड़ों का संग्रहण, विश्लेषण और अंत में रिपार्ट राइटिंग द्वारा शोधकर्ता इसकी परिशुद्धता का सत्यापन करता है।
6. शोधकर्ता द्वारा जो तथ्य खोजे गये हैं उनके बारे में विशेष दृष्टिकोण से स्पष्ट किया जाना चाहिए।
7. सारांश निकालने के लिए आँकड़ों का विश्लेषण बहुविधि स्तर से करना चाहिए और क्रम विशिष्ट से सामान्य की ओर होना चाहिए।
8. लेखन स्पष्ट होना चाहिए और खोजे गए व्याख्यात्मक तथ्य विश्वसनीय और वास्तविक होने चाहिए।

गुणात्मक शोध में, शोधकर्ता प्रत्यक्ष रूप से बहुविधि तरोके से स्थितियों में शामिल रहता है। शोधकर्ता साथ ही व्यक्तिगत रूप से अपने विचार रखता है शोधकर्ता की यह जिम्मेदारी होती है कि वह ईमानदारी से स्थितियों को समझे और शोध के निष्कर्ष प्रस्तुत करे। इसका अर्थ यह नही है कि शोधकर्ता गुणात्मक शोध में मात्रात्मक आँकड़ों का प्रयोग नहीं करता। शोधकर्ता द्वारा उद्देश्यों तथा लक्ष्यो का विश्लेषण और व्याख्या करने के लिए किसी हद तक तथ्यात्मक आँकड़ों का प्रयोग करता है।

Strouss and Corbin (1998:11) ने तर्क दिया है कि "We are ferening not to the quantifying of qualitative data but rather to a non mathetical Pross of

Interpretion, carried out for the Purposs of discovering Concept and then organizing these into theoretical explanatory Scheme".

इसलिए कहा जा सकता है कि गुणात्मक शोध सामाजिक घटनाओं का अध्ययन में एक वृहद उपागम है।

मार्शल (1985 और 1987) न पाया कि कुछ क्षेत्रों में जहाँ मात्रात्मक पैराडाइम की अपेक्षा गुणात्मक पैराडाइम का अधिक प्रयोग होता है इसमें शोध क्षेत्र शोधकर्ता द्वारा घटनाओं का गहन अध्ययन किया जाता है।

मनोरंजन क्षेत्र से संबंधित शोध मुख्यतः पर्यटन के सन्दर्भ में Kelly (1980) ने तर्क दिया है कि गुणात्मक शोध का प्रयोग करने से कुछ लाभ प्राप्त होते हैं जैसे

1. गुणात्मक अनुभव पर्यटन की प्रकृति के आधार पर उपयुक्त है।
2. मनोरंजनात्मक प्रकार के शोध में प्रत्यक्ष तौर से लोगों के साथ शामिल होकर प्रभाव को जाना जा सकता है। अतः गुणात्मक शोध द्वारा घटनाओं का निरीक्षण किया जा सकता है।
3. गुणात्मक शोध वर्तमान सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणोय परिस्थितियों पर ध्यान देती है। गुणात्मक शोध ऐतिहासिक तथ्यों और अनुभव पर आधारित होने के करण शोध को अच्छी विधि है लेकिन इस विधि में कुछ ही अध्ययन इकाइयों पर ध्यान दिया जाता है।
4. इस विधि में निष्कर्ष समझने योग्य प्राप्त हो जाते ह। यद्यपि इस विधि के प्रयाग करने का कारण यह है कि सभी शोधकर्ता सांख्यिकोय विधियों में प्री तरह से प्रशिक्षित नहीं होते हैं।

सामाजिक और आर्थिक स्थितियों को एकीकृत रूप से व्यक्तिगत परिश्रम प्रभावित करता है। किस तरह लोग व्यवहार करते हैं, उनका आपस में मिलना जुलना, सामाजिक और आर्थिक संदर्भ में इनके प्रभावों को देखा जाता है। गुणात्मक सिद्धान्त घटनाओं के बीच में अन्तर्निहित कारणों की जो स्पष्ट नहीं हो सकते उनकी व्याख्या करता है।

इस प्रकार के सिद्धन्त का प्रयोग प्रस्तुत वास्तविकता के निकट लोगों के विचारों तथा उनके दृष्टिकोणों का विश्लेषण तथा पूर्वानुमान जो लगाए जाते हैं लगभग उनकी गणना सही होती है। पर्यटन में अनेक घटनाएं शामिल होती है जो एकदूसरे को प्रभावित करती है।

पर्यटन शोध में स्थित प्रवृत्ति को स्पष्ट और तार्किकता से उद्देश्यों को तथा उनके आपसी संबधों तथा निभरता को आसानी से खोजा जा सकता है तथा आर्थिक, मार्केट और प्रबंधकोय संबधों को इसी विधि से जाना जाता है। (Goodson and Phillionore, 2004). इस शोध में गुणात्मक पैराडाइम का प्रयोग किया गया है, जो शोध को निश्चित दिशा प्रदान कर आँकड़ें एकत्रीकरण तथा विश्लेषण में वैयक्तिक अध्ययन शोध विधि में प्रयोग किया गया है।

1.3 अध्ययन विधिवैयक्तिक अध्ययन विधि (**Case Study Method**)

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए वैयक्तिक अध्ययन विधि (Case Study Method) तर्क पूर्ण आधार पर अधिक कारगर है वैयक्तिक अध्ययन विधि को सरलता पूर्वक परिभाषित नहीं किया जा सकता फिर भी बहुत से शोधकर्ता और विद्वानों ने इसे परिभाषित करने का प्रयास किया है

गुड और हॉट के अनुसार ''वैयक्तिक अध्ययन विधि, वह विधि है जिसके द्वारा किसी सामाजिक इकाई के सम्पूर्ण स्वरूप का गहन अध्ययन किया जाता है।'' कुछ शोधकर्ता वैयक्तिक अध्ययन विधि को शोध की रणनीति के रूप में और कुछ ने इसे शोध के उद्दश्यों को प्राप्त करने का एक दृष्टिकोण के रूप में परिभाषित किया है।

वैयक्तिक अध्ययन शोध विधि को यिन (yin), ईसेनहॉडेट (Eisanhardt) और अन्य द्वारा इस के चरणों को अच्छी तरह से परिभाषित किया है। इस अध्ययन विधि में विवरण महत्वपूर्ण होता है। फिर भी वैयक्तिक अध्ययन विधि परोक्ष रूप से केवल व्यक्तिगत तौर से ही नहीं बल्कि इस शोध विधि में

मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों ही विधियों का निपुणता से प्रयोग किया जाता है।

वैयक्तिक अध्ययन विधि के बारे में सामान्य रूप से भ्रांति है कि इससे परिणाम काफो धीमी गति से प्राप्त होत हैं। वैयक्तिक अध्ययन विधि के लिए आँकड़े एकत्रित करने में अनेक विधियों जैसे सहभागी अवलोकन, सर्वेक्षण, प्रश्नावली, साक्षात्कार, डेल्फी प्रक्रिया और अन्य विधियों का प्रयोग किया जाता है।

वैयक्तिक अध्ययन शोध विधि में शोध की सभी विधियों का प्रयोग करने की क्षमता विद्यमान है। साथ ही आँकड़े एकत्रित करने की प्रक्रिया और शोध की वैद्यता के लिए केस और क्रोस केस का तुलनात्मक अध्ययन करने में सहायक होती है।

वैयक्तिक अध्ययन विधि का लाभ यह है कि यह विधि सामाजिक और ऐतिहासिक सन्दर्भ में घटनाओं, अनुभवों और अपेक्षाओं को संगठनात्मक रूप से मजबूतो प्रदान करती है। यह विधिविषय का सम्पूर्ण अध्ययन करने में सहायता करती है।

इस विधि में आँकड़े एकत्रित करने में लचीलापन विद्यमान रहता है, जिससे शोधकर्ता अपनी सुविधानुसार आंकड़ों का एकत्रोकरण कर सकता है। इस विधि के अर्न्तगत सीमित मात्रा में अध्ययन इकाईयों को शामिल करने से अध्ययन में सुविधा रहती है।

संबन्धित शोध विषय में वैयक्तिक अध्ययन विधि का प्रयोग करने के निम्न कारण हैं

1. कोटा संभाग में पर्यटन क्षेत्र से संबन्धित पर्याप्त सूचनाओं के अभाव के कारण इस का प्रयोग किया गया है इसलिए इस शोध में वैयक्तिक अध्यन विधि का प्रयोग किया गया है।

2. इस शोध के लक्ष्यों और उद्देश्यों का प्राप्त करने के लिए प्राथमिक आँकड़ों का प्रत्यक्ष रूप से एकत्रोकरण व द्वितोयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है।
3. इस शोध कार्य में संबंधित शोध क्षेत्र में जाकर पर्यटन से जुड़े व्यक्तियों की वास्तविक सामाजिक व आर्थिक स्थिति के बारे में जाना गया है।
4. इस शोध में वास्तविक जीवन के बारे में क्या, क्यों, कैसे, हां, नहीं आदि प्रकार के प्रश्नों का समावेश किया गया है यहां संबंधित अध्ययन विधि की सुगमता अनुसार प्रश्नों का चयन किया गया है।

1.3.1 शोध विधि[34]:

सामाजिक शोध में आँकडें एकत्रित करने के लिए आधारभूत यंत्रों जिन में अध्ययन से संबंधित लिखित सामग्री, साक्षात्कार, अवलोकन और प्रश्नावली शामिल है। (Blaxter, Hughas and Tight, 1997)

Corbatta (2003:287) ने गुणात्मक शोध की तीन कार्यकारी क्रियाओं को रेखांकित किया जिन में अवलोकित करना, पूछना, लिखना है।

प्रस्तुत शोध में साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है तथा द्वितीयक आँकड़ों का संग्रहण उपलब्ध वब आधारित, प्रिंटेड मेटेरियल द्वारा किया गया है। इस के साथ ही पयटन शोध पर उपलब्ध लिखित सामग्री और उससे जुड मुद्दों पर ध्यान दिया गया है। प्रस्तुत शोध में साक्षात्कार आयाजित करने के लिए लिखित अनुसूची का प्रयोग किया गया है। साथ ही आपसी विचार विमर्श में उत्पन्न मतों के लिए नोटबुक का प्रयोग किया गया है।

1.3.2 न्यायदर्श (Sampling)

गुणात्मक अध्ययन विधि घटना का गहन और अधिक सुदृढ़ समझ प्रस्तुत करतो ह। निदर्शन एक सांख्यिकीय उपागम है जो शोध का आधार प्रस्तुत करता है।

Shutt (2004):

ने बताया कि गुणात्मक शोध में असम्भाव्य प्रतिचयन का प्रयोग किया जाता है। क्योंकि सम्भाव्य निर्देशन का वैयक्तिक अध्ययन में शामिल व्यक्तियों से सीमित समय में साक्षात्कार करने में सक्षम नहीं है। इस प्रकार के निदंशन से शोध समस्या पर पूरी तरह शोधकर्ता ध्यान कन्द्रित नहीं कर पाता है और अपना समय बर्बाद कर देता है। प्रस्तुत शोध में पर्यटन व्यापार, पर्यटन संगठन में रोजगार प्राप्त व्यक्तियों, स्थानीय व्यक्ति जो पर्यटन के साथ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रतिनिधि निदर्शन का चुनाव किया गया है।

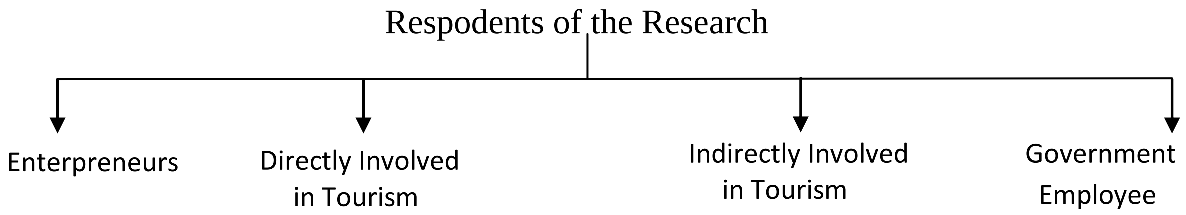

1.3.3 निदर्शन प्रक्रियाः

वैयक्तिक अध्ययन विधि के अन्तर्गत गुणात्मक उपागम को ध्यान में रखते हुए यहां निदर्शन में प्रतिनिधियों का चयन किया गया हैं प्रस्तुत शोध की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए उद्देश्य परक निदर्शन पद्धति से पविधियों का चयन किया गया है।

जहोदा (1959) के अनुसार ''उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन की मान्यता यह है कि उचित निर्णय तथा उपयुक्त कुशलता के साथ व्यक्ति प्रतिचयन में सम्मिलित करने हेतु उन मामलों को चुना जा सकता है तथा ऐसे प्रतिचयन का विकास कर सकता है। जो उसकी आवश्यकतानुसार सन्तोषनजक है।'' गिस्फोर्ड

(1978) ने लिखा ह, ''उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श एक स्वेच्छनुसार चयन किया गया प्रतिदर्श संपूर्ण समष्टि का पूर्ण रूपेण प्रतिनिधित्व करता है''।

इस प्रकार उद्देश्य परक निदर्शन द्वारा चयनित इकाईयों से पर्यटन के सामाजिक व आर्थिक प्रभाव को जानने के उद्देश्य से निदर्शन का चयन इस विधि से करने से उद्देश्यां को प्राप्त करने में पूर्णतः उपयुक्त है। इस प्रकार के निदर्शन क चयन के लिए टूर ऑपरेटर, स्थानोय लोग जो पर्यटन से जुड़े हैं तथा सरकारी कार्यालय के कर्मचारीयों तथा अप्रत्यक्ष रूप से जुडे लोगों से सूचनाएं प्राप्त की गयी है।

1.3.4 निदर्शन आकार (Sample Size)

प्रतिचयन का क्षेत्र	निदर्शन आकार
कोटा	20
बूंदी	20
सवाईमाधोपुर	20
झालावाड़	20
कुल	80

वैयक्तिक अध्ययन विधि से उद्देश्यपूर्ण और गहन जानकारी के लिए केस (कैस) का चुनाव कर शोधकर्त्ता द्वारा विश्लेषण करने क लिए एक निश्चित निदर्शन आकार का चुनाव करना होता है। निदर्शन आकार का चुनाव करने के लिए निश्चित नियम नहीं है। शोध के क्षेत्रानुसार निदर्शन आकार ले लिया जाता है वैयक्तिक अध्ययन विधि के अन्तर्गत निदर्शन आकार कम ही रखा जाता है। जिस से शोध के संबंध में गहन जानकारी प्राप्त की जा सके। प्रस्तुत शोध के क्षेत्र व उद्देश्यों और उपकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए निदर्शन का आकार निश्चित किया गया है।

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता द्वारा निश्चित शोध क्षेत्र (कोटा, बूंदी, बारा, झालावाड, सवाईमाधोपुर) के आधार पर बारा को छोड़कर क्योंकि बाराँ पर्यटन के लिए अभी विकसित नहीं है इसलिए अन्य क्षेत्रों से 20–20 प्रतिनिधि का चयन किया गया है।

1.3.5 तथ्यों का विश्लेषण और विवेचन

वैयक्तिक अध्ययन विधि में प्राप्त तथ्य गुणात्मक प्रकार के होते है अर्थात अंको के स्थान पर शब्दों में होते हैं। गुणात्मक तथ्यों का विश्लेषण करते समय तथ्यों का वर्गीकरण समस्या से संबंधित विभिन्न पक्षों के अनुसार करते हैं और फिर प्रत्येक पक्ष के अर्न्तगत तथ्यों का विश्लेषण, अर्न्तवस्तु विश्लेषण के द्वारा करते हैं।

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों और उपकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए घटनाओं के सामाजिक व आर्थिक प्रभाव जानने के लिए विभिन्न प्रकार के तथ्यों को समस्या से संबंधित पक्षों के अनुसार तथ्यों का वर्गीकरण व विश्लेषण आवश्यक रूप से किया गया है। तथा शोध से संबंधित द्वितीयक सामाग्री का प्रयोग व्याख्यात्मक तौर पर किया गया है व अध्ययन इकाईयों से प्राप्त मतों को प्रतिशत तौर पर प्रस्तुत किया गया है।

1.3.6. निष्कर्ष

वैयक्तिक अध्ययन विधि द्वारा प्राप्त आंकडों का विश्लेषण और विवेचन करने के बाद शोध समस्या के उद्दश्यों और लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए संयुक्त परिणाम अन्त में प्रस्तुत किए गए है तथा कुछ सुझाव दिये गये ह।

1.3.7 सीमाएँ

पस्तुत शोध में शोध से संबंधित अपर्याप्त तथ्यों की उपलब्धता तथा सीमित आर्थिक साधन व समय इसकी सीमा निर्धारित करती है। राजस्थान सरकार के पर्यटन विभाग द्वारा पर्यटन साँख्यिकी संबंधी तथ्य ही प्रकाशित करती है। पर्यटन का क्षेत्र काफी विस्तृत हान के कारण इसमें प्राप्त रोजगार, आय, जीवन स्तर, संबंधी तथ्य पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं हो पाते हैं इसलिए कुछ प्राइवेट और अन्य सरकारी छळव द्वारा जिसमें प्रोजेक्ट ही यहां

द्वितीयक आँकडों के रूप में तथा अन्य सरकारो विभागों द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट का प्रयोग किया गया ह। अतः प्रस्तुत शोध में वैयक्तिक अध्ययन ही शोध उद्दश्यों और लक्ष्य को प्राप्त करने में उचित है।

संदर्भ सूची

1. रैना, अभिनव कमल, सारण, भूरा राम, पर्यटन एवं होटल उद्योगः प्रबंध सिद्धान्त एवं व्यवहार, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2010 पृष्ठ 23
2. तदैव
3. योजना, चतुर्वेदी, देवेश, भारत में पर्यटन पर विहंगम दृष्टि, मई 2010
4. तदैव
5. योजना, उपाध्याय, देवेन्द्र, विकास में पर्यटन की भूमिका, मई 2010

6- www.kota-bundi.com

7. तदैव

8- www.sawaimadhopur.com

9. डिस्कवर राजस्थान
10. तदैव
11. तदैव
12. तदैव
13. योजना, चौधरी मंजूला, पर्यटन क्षेत्र में मानव संसाधन विकास, मई 2010

14- Singh, P.P. –Economic Potentials of Tourism in Himachal Pradesh with Special reference to shimla. Project Report Department of Commerce Shimla : Himanchal Pradesh University.

15- Dwyer, L, Economic Contribution of Tourism to Andhra Pradesh, India. Tourism Recreation,2000.

16- Butcher, J., The Moralisation of Tourism: Sun, Sand…And Saving the World? London, Routledge, 2003.

17- Burn’s, P.M. and Holdon, A, Tourism a New Perspective, Prentice Hall, London, 1995.

18- Sharma, Ajay Kumar, Impact of Tourism on the changing Environment of Pushkar, unpublished, 2005.

19- Pandey, S.V., Impact of Tourism on rural life, World Leisure Journal, 2006.

20- Gjerald, O, Socio Cultural Impact of Tourism : A Case Study from Norway, 2005.

21- Sebastian, L.M. and Rajagopalan, P, Socio-cultural Transformation through tourism; a comparison of Residents Perspectives at two destinations in Kerala, Journal of Tourism and Cultural change, 2009.7(1) P.P. 5-21

22- Suntikul, W.:- The effects of tourism development on indigenous populations in Luang Namtha Proviance, Laos, In: Butler, R. and Hinch, T.eds., Tourism and indigenous peoples issues and implications, London, elsevier, 2007 P.P. 120-140

23. चौधरी, मंजूलाः योजना ''पर्यटन क्षेत्र में संसाधन विकास'' मई 2010

24- Todaro, M, Economic Development in the third world New York, Longman, 1989

25- Wall, G And Mathieson, A, Tourism Change, impact and opportunities

26- Cukier, J. :- Tourism Employment issues in Developing Countries: Example from Indonesia In: Sharpley, Rand Telfer, D.J. eds. Tourism and Development Concepts and Issues. Clevedon, Channel view Publication, 2002 P.P. 165

27- Keyer, H. : Tourism Development, Cape Town, oxford Sourthern Africa.

28- Nadda, A.L. and Sharma, L.R. : Tourism Potential In L.R. Verma (ed.) Natural Resources and Development in Himalaya, New Delhi, Malhotra Publishing House, 2000 P.P. 575

29- Raina, A.K. And Lodha, R.C.: Fundamentals of Tourism System, Kanishka Publishers, New Delhi, 2004.

30. गोयल, राजेश : भारतीय पर्यटन उद्योग, वंदना पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2011

अध्याय– द्वितीय

पर्यटन उद्योग

2.1 पर्यटन की अवधारणा

2.2 पर्यटन उद्योग का क्षेत्र

2.3 पर्यटन के भेद

2.4 पर्यटन की विशेषताऐं

2.5 पर्यटन का प्रभाव

2.6 पर्यटन का विकास

अध्याय–द्वितीय

पर्यटन उद्योग

पर्यटन एक मूल एवं बहुत ही ऐच्छिक क्रिया है जो समस्त जनता एवं सरकारों की प्रशंसा एवं प्रोत्साहन करने योग्य है। यह एक उद्योग है जो लोगों को उन के आगमन पर नियत स्थान की तरफ आकर्षित करने, उन्हें वहां तक पहुंचाने, आवासित करने, आहार प्रदान करने, मनोविनोद करने तथा उनकी वापसी पर उन्हें घरों तक पहुंचाने से सम्बन्धित है।[1]

2.1 पर्यटन की अवधारणा

पर्यटन एक मानवीय क्रियाकलाप होने के साथ आर्थिक महत्व का भी विषय है। ज्ञान प्राप्ति तथा भावनात्मक एकता के लिए पर्यटन का प्राचीन काल से ही एक विशिष्ठ स्थान रहा है। लोगों के रहन–सहन, रीति–रिवाज, उनकी संस्कृति एवं खानपान सम्बंधी अप्रत्यक्ष रूप से ज्ञान प्राप्ति केवल पर्यटन द्वारा ही हो सकती है। इसी कारण पर्यटन से होने वाले लाभों की ओर आकृष्ट होकर अधिकांश देशों ने पर्यटन विकास कार्यों को प्रारंभ किया है। अनेक अल्पविकसित देशों को जिनके पास अच्छी जलवायु, बालू के तट तथा विदेशी संस्कृति के अतिरिक्त अन्य कोई संसाधन नहीं है, पर्यटन के द्वारा विदेशी मुद्रा कमाने और अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के अवसर प्राप्त हुए हैं। विश्व के विदेशी व्यापार में पर्यटन एक बड़ा क्षेत्र है। पर्यटन सम्पत्ति तथा रोजगार उत्पन्न करने के अवसर भी उपलब्ध कराता है। अनेक देशों में पर्यटन महत्वपूर्ण निर्यात एवं विदेशी मुद्रा प्राप्त करने का प्रमुख साधन बन चुका है।[2]

राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में पर्यटन का पूर्ण प्रभाव केवल पर्यटन व्यापार को अग्रगामी सीमा पर व्यय करने से प्राप्त नहीं होता है। इसमें उन समस्त उद्यागों को सम्मिलित किया जाता है जो विभिन्न स्तरो पर माल सेवाओं की पूर्ति करने के लिए आवश्यक होते हैं। प्रत्यक्ष पर्यटन क्षेत्र व्यवहार उद्योगों

द्वारा निर्मित उत्पादन वास्तविक अर्थ में पर्यटकों की आवश्यकतानुसार हैं जो कि सर्वप्रथम धन व्यय करते हैं तथा फिर समस्त क्रियाओं को चालू रखते हैं।

रिचर्ड्स के अनुसारः

पयटन के व्यय करने एवं राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में दो मुख्य सम्बन्ध हैं। प्रथम् उपभोक्ता से सम्बन्धित वस्तुऐं जिनका प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। इसके अन्तर्गत पर्यटन के लिए किए गए व्यय जैसे– परिवहन, आवास, खानपान व अन्य क्रम सम्बन्धित खर्चे व सेवाऐं हैं। द्वितीय, पर्यटन से प्रत्यक्ष जुड हुए व्यवसाय व अन्य व्यवसाय व उद्योग जो पर्यटन उद्योग की वस्तुओं की पूर्ति करते हैं।[3]

2.1.1 पर्यटन का अर्थ एवं परिभाषाऐंः

साधारण तौर पर पर्यटन आराम करने का प्रयास है जब व्यक्ति आम दिनचर्या से ऊब जाता है तो वह आराम करना चाहता है जिसमें आम दिनचर्या के विपरोत कुछ भी नियमित, नियंत्रित और निश्चित कार्य नहीं करता है इस दौरान वह मन की शान्ति के लिए कुछ खास दर्शनीय स्थलों पर जाता है, जिन्हें देखने के लिए उस में उतावलापन होता है और वह इनमें कुछ अनूठेपन की खोज करता है जिसमें कुछ आम जीवन से अलग हटकर हो, जिसमें उसे सुख व आनन्द की प्राप्ति हो। अतः कहा जा सकता है कि वह दैनिक जीवन की थकान को मिटाकर नई स्फूर्ति प्राप्त करने का प्रयास करता है। पर्यटन केवल मौजमस्ती का विषय न रहकर एक आर्थिक विषय भी है जिस के कारण पर्यटन एक उद्योग का स्वरूप धारण कर चुका है।

पर्यटन का अंग्रेजी शब्द 'TOURISM' है जो कि लेटिन भाषा से लिया गया है 'TOUR' का अर्थ है कि यात्री किसी स्थान पर जाकर खोज करता है। ठीक इसी प्रकार एक पर्यटक की जिज्ञासा होती है कि वह उस स्थान के सम्बन्ध में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करे जिसके सम्बन्ध में उसने सुना तथा साथ ही उस को व्यापार व रोजगार की संभावनाओं की जानकारी, स्वास्थ्य एवं शिक्षा,

लाभ, पर्यावरण व मनोरंजन से संम्बन्धित सम्पत्ति के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त करने की लालसा रहती है।

'TOURISM' या ''पर्यटन'' शब्द के अन्तर्गत वे समस्त व्यापारिक क्रियाऐं सम्मिलित हैं जो कि यात्रियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं किसी भी यात्रा का पर्यटन से सम्पर्क स्थापित हो जाता है यदि तीन शर्तें पूर्ण हो जाती ह

1. यात्रा अस्थाई हो।
2. यात्रा ऐच्छिक हो।
3. यात्रा का अर्थ किसी प्रकार का पारिश्रमिक अर्जित करना नहीं होना चाहिए।

संस्कृत साहित्य में पयटन के लिए तीन शब्दों का प्रयोग किया गया है जिन का उद्भव 'पर्यटन' से हुआ है 'पर्यटन' का अर्थ है अपने निवास स्थान को छोड़कर कहीं बाहर जाना। ये तीन शब्द हैं

पर्यटन इस का अर्थ है आराम एवं ज्ञान प्राप्ति के लिए यात्रा करना ।

देशाटन विदेशों में मुख्यतः आर्थिक लाभ के लिए यात्रा करना।

तीर्थाटन धार्मिक लाभों के कारण यात्रा करना।

यह तीन शब्द पर्यटन के व्यापक अर्थ को स्पष्ट करते हैं। अर्थात पर्यटन से अभिप्राय भ्रमण के उस निर्धारित कार्यक्रम से है जिस में कोई व्यक्ति एक अल्प और सीमित समय के लिए अपने आवास स्थान को छाड़कर अन्य स्थानों की यात्रा प्राकृतिक सौन्दर्य, शिक्षा, स्वास्थ्य, धार्मिक उद्देश्य एवं आनन्द की प्राप्ति के लिए करता है।

हुन्जीकर एवं क्राफ्ट के अनुसारः

''पर्यटन उन प्रवृत्तियों एवं सम्बन्धों का गठजोड़ है जो यात्रा एवं प्रवासी के ठहरने से उत्पन्न होती है बशर्ते कि इस स स्थाई निवास की

क्रिया का जन्म नहीं होता हो तथा यह किसी धन अर्जन करने की क्रिया से सम्बन्धित नहीं है।''

उपरोक्त परिभाषा को पर्यटन वैज्ञानिक विशेषज्ञों के आर्थिक संगठन ने भी मान्यता दी। एक अन्य स्थान पर हुन्जीकर के अनुसार ''पर्यटन उन सम्बन्धों एवं तथ्यों का गठजोड़ है जो कि यात्रा एवं व्यक्तियों के अल्पकालीन निवास के फलस्वरूप उत्पन्न होती है बशर्ते कि यह स्वयं के सामान्य निवास स्थान से दूर हो तथा किसी किस्म के धन कमाने की इच्छा या इस से सम्बन्धित न हो।[4]

एक अन्य स्थान पर पर्यटन की एक सामान्य परिभाषा दी गयी है, जिस के अन्तर्गत लगभग समस्त पहलू एवं परिणाम सम्मिलित करने की कोशिश की गयी है। उनके लिए पर्यटन वह सम्बन्ध स्थापित करता है जो कि विदेशी व अस्थाई रूप में धन अर्जन करने से कोई सम्बन्ध न हो।

विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार दी गई परिभाषा ''जब लोग 24 घण्टे से ज्यादा और एक वर्ष से कम अवधि के लिए अपने कार्य स्थल से बाहर निकलते हैं तो इस प्रकार की गतिविधि को पर्यटन में शामिल किया जाता है।''[5]

इस प्रकार उपरोक्त परिभाषाओं द्वारा स्पष्ट हो जाता है कि पर्यटन शब्द मनोरंजन, यात्रा, आनन्द प्राप्ति से सम्बन्धित है किन्तु अधिकांश पर्यटन विशेषज्ञों ने इसे आर्थिक परिप्रेक्ष्य में ही देखा है, परन्तु पर्यटन आर्थिक ही नहीं सामाजिक क्रिया भी है। अतः पर्यटन को परिभाषित करते समय निम्न बिन्दुओं को दृष्टिगत रखना चाहिए जो पर्यटन रूपी ''आर्थिक एवं अनार्थिक'' क्रिया में पाये जाते हैं

1. पर्यटन एक बहुआयामी क्रिया है जिसकी मुख्य विषय सामग्री पर्यटक ळें
2. पर्यटन एक ''स्थिर'' एवं ''गतिशील'' क्रियाओं का सम्मिश्रण है जिस में ठहरना

''स्थिर'' एवं ''गतिशील'' तत्व है।

3. पर्यटन में भ्रमण पूर्णतः अस्थायी होता है जिस में निश्चित अवधि के बाद पर्यटक अपने मूलनिवास पर वापस आ जाता है।

4. पर्यटन का सम्बन्ध सरकार 'व्यवसायिक संगठनों , यातायात सेवा संगठनों, होटलों, पर्यटक आवास श्रृंखलाओं, एजेटों, यात्रा संचालकों, सहयोगियां एक अनुषांगिक सेवाओं से है।

5. पर्यटन एक गैर पारिश्रमिक क्रिया है क्योंकि पर्यटन क्रिया के पीछे पर्यटक का उद्देश्य रोजगार प्राप्त करना, व्यवसाय प्राप्त करना आदि नहीं होते हैं। अपितु इसका उद्देश्य शिक्षा, शांति, सद्भाव, मनोरंजन या प्राकृतिक साधनां की सौन्दर्य अनुभूति होता है।

6. पर्यटन क्रिया सामाजिक व सांस्कृतिक आदान प्रदान का माध्यम है, क्योंकि पर्यटन से एक देश अथवा राज्य की विभिन्न परम्पराओं, सामाजिक रीतिरिवाजों व परम्पराओं की अन्य लोगों को जानकारी प्राप्त होती है।

7. पर्यटन महज एक सरकारी अथवा अनार्थिक क्रिया न रहकर एक सुसंगठित क्षेत्र के रूप में उभर रहा है।

8. पर्यटन से दुनिया सुकड़कर छोटी होती जा रही है। आवास, यातायात, बीमा, बैकिंग, परिवहन, मनोरंजन, के साधन इस क्रिया के विकास के मुख्य स्तम्भ है।

अतः पर्यटन एक आर्थिक ही नहीं बल्कि एक मजबूत सामाजिक कड़ी के रूप में भी अहम भूमिका निभाता है।[6]

2.2 पर्यटन उद्योग का क्षेत्रः

पर्यटन उद्योग का क्षेत्र बहुत व्यापक है पर्यटन एक बहुआयामी उद्योग है अथात पर्यटन स्थल से जुड़े अनेक घटक मिलकर पर्यटन को उद्योग का

आकार प्रदान करते हैं। पर्यटन के क्षेत्र को दो श्रेणीयों में विभाजित किया जा सकता है।

1 प्राथमिक क्षेत्र

2 सहायक क्षेत्र

प्राथमिक क्षेत्र वह क्षेत्र है जिस पर पर्यटक पूरी तरह से आश्रित होता है जो पर्यटन का मेरूदण्ड कहा जा सकता है।

जबकि सहायक क्षेत्र पर्यटन उद्योग के संगठन में सहायता करता है इनकी सेवाऐं कहीं न कहीं कड़ी के रूप में जुड़ी रहती है। इसे एक रेखाचित्र द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।

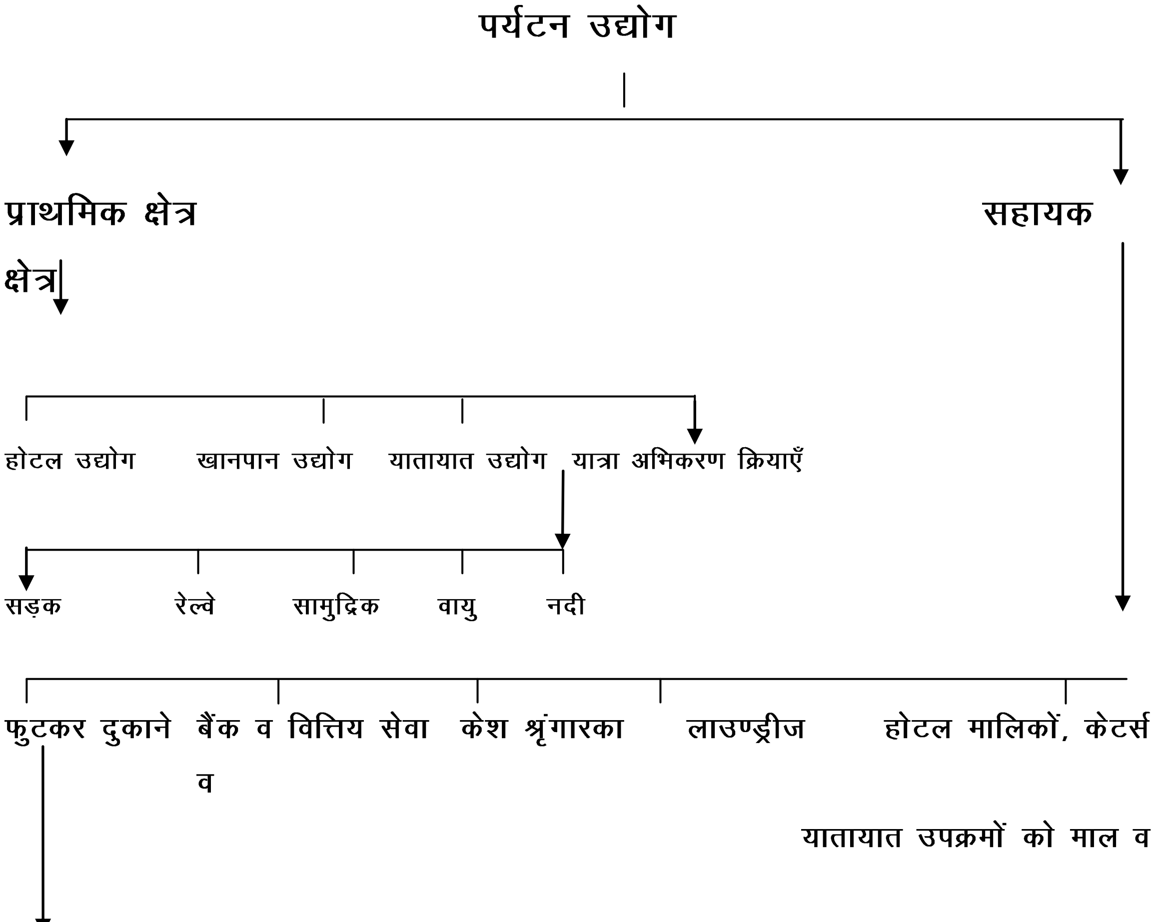

सेवा पूर्ति करने वाले

स्मारिकाएँ बहुमूल्य प्राचीन वस्तुएँ उपहार

मनोविनोद सार्वजनिक सेवाएँ इमारत निर्माण बीमा कम्पनियाँ

अन्य

रंगशालाएँ चलचित्र विशेष पर्व त्योहार संगठित

खेलकुद व क्रीड़ा

2.3 पर्यटक के भेद

यात्रा करने वाला प्रत्येक व्यक्ति पर्यटक है या नहीं इस के निर्णय हेतु हमें सम्बन्धित व्यक्ति की यात्रा का उद्देश्य, रूकने की अवधि आदि बातों की जानकारी करनी होती है।

पर्यटन एक बहुआयामी क्रिया है जिसमें अनेक व्यक्ति शामिल होते हैं जिनका भिन्नभिन्न स्तर होता है, इसी भिन्नता के आधार पर पर्यटकों की विभिन्न श्रेणियाँ बनाई गई है, जिन्हें सात भागों में विभाजित किया गया है

1. खोज करने वाले (EXPLORER) जो व्यक्ति स्थानीय लोगों के साथ मिलकर
   खोज कार्य करने में लगे रहते हैं उन्हें इस वर्ग में शामिल किया जाता है।
2. विशिष्टरोमांचक स्थलों का अपने आप भ्रमण करने वाले होते है उन्हें इस श्रेणी में रखा जाता है।
3. ऑफ बीट (OFF-BEET) जो व्यक्ति भीड़ से दूर रहकर सफर करते हैं उन्हें इस वर्ग में रखा जाता है।
4. असामान्यएकांत की तलाश में खतरों से खेलने वाले।

5. आरंभिक समूह एक या छोटे समूह या किसी के साथ मिलकर यात्रा करें।
6. समूह एक सामान्य पैकेज टूर जो कि टूरिस्ट वर्ग के रूप में विदेशों को जाता है, इस वर्ग में रखा जाता है।
7. चार्टर (विशेष) दूर स्थलों पर आराम करने के उद्देश्य से व्यक्ति यात्रा करें और उपलब्ध सभी मानवीकृत सुविधाऐं प्राप्त करते हो।

कोहन ने पर्यटको की निम्नाकिंत श्रेणीयाँ बताई :

1. मनोरंजनात्मक कार्य कि अधिकता होने पर मानसिक तनाव दूर करने के उद्देश्य से जब कोई पर्यटन किया जाता है तो इसे इस वर्ग में रखा जाता है।
2. सामान्य से अलग ऊबाऊपन और रोजमर्रा की जिन्दगी से अलग।
3. प्रयोजनात्मक, वैकल्पिक जोवन शैली के उपयोग का इच्छुक
4. जीवन खोजी पर्यटन द्वारा नए आध्यात्मिक केन्द्र की खोज करता है, को इस में शामिल किया जाता है।[8]

2.3.1 भारतीय दृष्टिकोण में घरेलू और विदेशी पर्यटक

(1) विदेशी पर्यटक [9] भारत सरकार ने विदेशी पर्यटक को इस प्रकार परिभाषित

किया है

''एक विदेशी पर्यटक वह है जो विदेशी पासपोर्ट पर कम से कम 24 घण्टे व अधिक से अधिक 6 माह के लिए भारत की यात्रा करता हो। यात्रा का उद्देश्य रोजगार प्राप्ति या स्थायी निवास नहीं होना चाहिए''

इस परिभाषा से स्पष्ट होता है कि पर्यटन विभाग, भारत सरकार ने सन् 1970 तक भारत आने वाले उन समस्त विदेशी नागरिकों को पर्यटक की श्रेणी में रखा है जिनकी निवास की अवधि न्यूनतम 24 घण्टे व अधिक से

अधिक 6 माह थी भले ही वे इस दौरान अन्यत्र कहीं जाते हुए बीच में भारत रूके हों या अपने रिश्तेदारों के यहाँ आए हों या किसी अन्य कार्य के लिए आये हों, मात्र रोजगार प्राप्ति या स्थायी निवास का उद्देश्य लेकर आने वाले विदेशी नागरिक ही पर्यटन की श्रेणी से अलग रखे गये थे।

1970 तक निम्न को विदेशी पर्यटक की श्रेणी में शामिल नहीं किया है

1. पाकिस्तान के नागरिक 2. नेपाल से भूमार्ग द्वारा भारत आने वाले पर्यटक 3. भूटान से भूमार्ग से आने वाले पर्यटक सन् 1971 में इस अर्थ में परिवर्तन एवं संशोधन किया गया। वर्तमान समय में भारत में विदेशी पर्यटक की परिभाषा के रूप में
सन् 1963 में संयुक्त राष्ट्र संघ के रोम में सम्पन्न हुए विश्व पर्यटन एवं यात्रा अधिवेशन में पारित परिभाषा स्वीकार की गई जो इस प्रकार है

''वह व्यक्ति विदेशी पर्यटक माना जायेगा जो किसी विदेशी पासपोर्ट पर भारत की यात्रा करे एवं यहाँ कम से कम 24 घण्टे रहे एवं उस की यात्रा का उद्देश्य (क) अवकाश बिताना, आमोद–प्रमोद, स्वास्थ्य, खेल, आदि कार्यों में से हो (ख) व्यवसायिक उद्देश्य (ग) घरेलू कारण तथा (घ) सभा में उपस्थित होना हो''[10]

इस परिभाषा में निम्न लिखित व्यक्तियों को पर्यटक नहीं माना जायेगा

(क) वे व्यक्ति जो भारत में बिना किसी अनुबंध या अनुबंध के तहत आये हैं एवं यहाँ आकर किसी व्यवसाय, पेशा अथवा आर्थिक क्रिया में संलग्न हो गये हों, जिस के बदले उनको पारिश्रमिक मिलता हो।

(ख) जो भारत में स्थायी निवास हेतु आए हों।

(ग) वे भ्रमणकर्ता जो यहाँ 24 घण्टे से कम समय के लिए रूके हों ।

लेकिन भारत के सन्दर्भ में निम्न को विदेशी पर्यटक में शामिल नहीं किया गया है।

(अ) पाकिस्तान एवं बाँग्लादेश के नागरिक हों।

(ख) नेपाल के नागरिक जो भूमि मार्ग से भारत में आये हो या वे सभी पर्यटक जो भूटान भारत में भूमार्ग से आये हों।

(2) घरेलू पर्यटक

विदेशी पर्यटकों के अलावा जो पर्यटक होते हैं उन्हें घरेलू पर्यटक के नाम से जाना जाता है। घरेलू पर्यटकों को समयसमय पर परिभाषित किया गया है भारत सरकार द्वारा घरेलू पर्यटक को इस प्रकार परिभाषित किया गया है

एक घरेलू पर्यटक वह व्यक्ति है

(क) जो किसी स्थान विशेष की यात्रा पर हो एवं जिसने रात्रि विश्राम हेतु भुगतान करके आवासीय सुविधा का प्रयोग किया हो।

(ख) जिसने किसी अनौपचारिक संगठन जैसे धार्मिक या सामाजिक संगठन द्वारा प्रदत्त आवासीय सुविधा का उपयोग किया हो।

(ग) जो अपने मित्र या रिश्तेदारों के यहाँ कम से कम एक दिन या अधिक से अधिक 15 दिन रूका हो।[11]

2.4 पर्यटन की विशेषताऐं:

पर्यटन की अपनी कुछ विशषताऐं अथवा गुण हैं इन विशेषताओं के कारण ही इसे एक उद्योग के रूप में जाना जाता है। आधुनिक समय में लोग किसी कार्य को करने या आनन्द लेने के लिए देश की सीमाओं या देश से बाहर यात्रा करते हैं वे वहाँ की जलवायु, ऐतिहासिक इमारतें, संस्कृति, प्राकृतिक छटा आदि का आनन्द लेने के लिए यात्रा करते हैं जब वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं तो विभिन्न सेवाओं की माँग करते हैं। इन आवश्यकताओं की पूर्ति पर्यटन उद्योग द्वारा की जाती है। पर्यटकों द्वारा किया गया कोई भी खर्चा स्वयं इस उद्योग की समृद्धि एवं विकास में सहायक होता है।

पर्यटन की मुख्य विशेषताओं को निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है

1. पर्यटन एक सामाजिक प्रवृत्ति है यह व्यक्तिगत न होकर मनुष्यों के स्वभावों एवं सम्बन्धों का मिश्रित रूप है। जब व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता है वहाँ ठहरने व भ्रमण करने से वह लोगों से सम्बन्ध बनाता है इस प्रकार की क्रियाओं में यात्रा के कारण लचकता का अंश विद्यमान रहता है।
2. पर्यटन एक बिना पारिश्रमिक क्रिया है पर्यटक विभिन्न स्थानों को जाते हैं इस प्रकार के मिलन जुलने के बदले कोई धन की प्राप्ति नहीं होती, न ही कोई रोजगार लेने की इच्छा रहती है और न ही किसी प्रकार का व्यापार या व्यवसाय करने की इच्छा होती है।
3. पर्यटन बहुदिशायुक्त प्रवृत्ति है व पर्यटकों को सेवाऐं प्रदान करने में बहुत सी क्रियाओं का सम्मिलित रूप है। ये क्रियायें अपना पृथक अस्तित्व बनाए रखती है और इन क्रियाओं का प्रभाव अब समस्त सम्बन्धित पहलुओं की क्रियाओं पर पड़ता है। ये क्रियाऐं अलग होते हुए भी एक दूसरे पर आश्रित हैं, तथा मिल जुलकर कार्य करने व सामान्य सिद्वातों की कामना करती हैं। पर्यटक स्थलों, होटल मालिकों एवं यात्रा चालकों के मध्य ही सहयोग व सामंजस्य की आवश्यकता होती है।
4. यह उद्योग मौसमी उतारचढ़ावों से बहुत ही प्रभावित होता है। आकस्मिक कार्य व मौसमी बेरोजगारी मुख्यतः पर्यटक स्थलों के विशेष लक्षण हैं।

2.5 पर्यटन का प्रभावः

पर्यटन को सामान्यतः लाभकारी गतिविधियों के रूप में देखा जाता है। अतः प्रत्येक राष्ट्र पर्यटन से बड़ी मात्रा में आय प्राप्त करते हैं लेकिन आज के समय में पर्यटन की गतिविधियों में तीव्र विकास होने से अनेक सामाजिक,

आर्थिक प्रभाव, पर्यावरणीय प्रभाव पड़ते हैं इसलिए आज पर्यटन केवल मनोरंजन का साधन न रहकर आर्थिक विषय बन गया है। इसलिए पर्यटन के केवल आर्थिक ही नहीं बल्कि अनेक सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव देखे जा सकते हैं।

2.5.1 आर्थिक प्रभावः

पर्यटन एक ऐसा साधन है जो दो देशों के बीच सम्बन्ध स्थापित करता है तथा दोनों के विचारात्मक भावनाओं को भी प्रभावित करता है। पर्यटन विशिष्ट रूप से 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ से एक यंत्र के रूप में प्रसिद्ध हुआ। रोजगारोन्मुखता, विदेशी मुद्रा अर्जन, आय में बढ़ोतरी और उत्पादन बढ़ोतरी में पर्यटन के योगदान को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि हमें इस उद्योग की आवश्यकता है।

इस के इसी महत्व को देखते हुए सातवीं पंचवर्षीय योजना (1985–90) में पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया है। आर्थिक क्षेत्र के अन्तर्गत रोजगार, आय, विदेशी मुद्रा अर्जन एवं विकास आदि आते हैं।

(1) रोजगारः

पर्यटन उद्योग में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार प्रदान करने की क्षमता विद्यमान है। होटल से लेकर भिन्नभिन्न टूरऑपरेटरों, पर्यटन कार्यालय, परिवहन संचालकों, टूरिस्ट गाइडों आदि के रूप में लोगों को इस से प्रत्यक्ष रोजगार मिलता है। पर्यटन से विविध व्यवसाय से जुड़े लोगों को अप्रत्यक्ष रोजगार मिलता है। जैसे होटलों में सब्जी, मांस, मछली, मुर्गी, अनाज आदि की आपूर्ति करने वालों, बिजली मिस्त्री, बढ़ई आदि को अप्रत्य़क्ष रोजगार प्राप्त होते हैं।

पर्यटन के विकास से बेरोजगार और अल्प रोजगार प्राप्त युवकों और युवतियों को रोजगार प्राप्त करने का सुनहरा अवसर प्राप्त होता है। लेकिन पर्यटन से उत्पन्न किया गया रोजगार मौसमी होता है। फलस्वरूप रोजगाार नियोक्ता अस्थायी रोजगार को प्राथमिकता देते हैं अथवा मौसम के दौरान

बाहर से मजदूर मंगा लेते हैं। इससे स्थानीय लोगों को रोजगार नहीं मिल पाता है।

कुछ स्थानों पर स्थानीय लोगों की शिकायत होती है कि उन्हें छोटी–छोटी नौकरियां ही मिल पाती हैं। प्रबंधक जैसी नौकरियां बाहर के व्यक्तियों को ही मिलती हैं। होटल, रेस्तराँ, ट्रेवल एजेसियों आदि पर बाहरी व्यक्तियों का स्वामित्व होता है। अतः पर्यटन से हुई आय का लाभ स्थानीय लोगों को प्राप्त नहीं हो पाता है।

मौसम के दौरान पर्यटकों के कारण कई आवश्यक वस्तुओं के दाम बहुत चढ़ जाते हैं। इससे स्थानीय जनता बुरी तरह प्रभावित होती है।

आय पर्यटन के अन्तर्गत रोजगार तथा आय में घनिष्ट सम्बन्ध पाया जाता है। रोजगार आय को प्रभावित करता है। आय पर्यटकों के खर्च पर निर्भर रहती है। पर्यटकों द्वारा किया गये व्यय से होटलों, परिवहन चालकों, मनोरंजन गृह मालिकों आदि को रोजगार उपलब्ध होता है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि पर्यटन से अत्यधिक मात्रा में अप्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष रूप से रोजगार उत्पन्न होता है।[12]

भारत में 2009–10 में जीडीपी और रोजगार में पर्यटन का योगदान क्रमशः 6.8 प्रतिशत तथा 10.2 प्रतिशत है। इस प्रकार कहा जा सकता ह कि पर्यटन रोजगार प्रदान करने का प्रमुख साधन है।[13]

(2) विदेशी मुद्रा अर्जन पर प्रभावः

पर्यटन विदेशी मुद्रा अर्जन का एक महत्वपूर्ण साधन है किसी भी देश को पर्यटन से विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है पर्यटन क्षेत्र में भारत का प्रदर्शन महत्वपूर्ण रहा है। वर्ष 2002–12 की अवधि के दौरान भारत में विदेशी पर्यटन आगमन (FTA) 2.38 मिलियन से 6.58 मिलियन तक बढ़ा यानी 10.7 प्रतिशत की औसत वार्षिक बढ़त हुई। वर्ष 2012 में यह वृद्धि दर 4.3 प्रतिशत देखी

गई। भारत का विश्व पर्यटन में 2012 के दौरान 0.64 प्रतिशत बढ़ा। वहीं विदेशी विनियम आय (एफ.ई.ई.) 2002 में 15,064 करोड़ रूपये थी, जो 2012 में 94,487 करोड़ रूपये तक पहुँच गई। यानी 12.8 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि हुई।[14]

2.5.2 सामाजिक व सांस्कृतिक प्रभाव :

विभिन्न संस्कृतियों, जीवन शैलियों या सामाजिक ढाँचों के लोग जब एक साथ रहते हैं तो वे स्वभाविक तौर पर एक दूसरे से प्रभावित होते हैं। पर्यटन में ये सामान्यतः होता है। पर्यटन स्थल पर पर्यटक नए सामाजिक जीवन के संपर्क में आते हैं और दूसरी तरफ मेज़बान जनता पर्यटकों की जीवन शैली की नकल करती है। इसे आम तौर पर पर्यटन का सकारात्मक प्रभाव माना जाता है।[15]

जिसे निम्न रूप में व्यक्त किया जा सकता है

- दोस्ती
- एक दूसरे से सीखना
- लोगों के बीच बेहतर समझदारी और उनका सामाजिक विकास

इस क अतिरिक्त कुछ परिणामों को नकारात्मक माना जाता है इनमें प्रदर्शनात्मक प्रभाव, संघर्षात्मक प्रभाव आदि शामिल हैं। उनके लक्षण तो तुरंत प्रकट होने लगते हैं, परन्तु उनका प्रभाव विलम्ब से ज्ञात होता है।

पर्यटक अपने भ्रमण के दौरान 'देशी संस्कृति' की एक झलक देखना चाहता है। अधिकतर समाजों में पर्यटकों का परम्परागत रूप में स्वागत किया जाता है। उन्हें विवाह और अन्य रीतिरिवाजों में शामिल होने का मौका दिया जाता है। अब पर्यटकों की संख्या बढ़ रही है और हर पर्यटक अब इस प्रकार की मांग अधिकार समझकर करने लगा है। तीसरी दुनिया के देश ''सांस्कृतिक प्रदर्शन'' करने लगे हैं जिसमें कोई आत्मीयता और जीवन्तता नहीं होती है। इस परिघटना को ''मंचित विश्वसनीयता'' के रूप में जाना जाता है।[16]

सामाजिक व सांस्कृतिक प्रभाव को इस प्रकार देखा जा सकता है।[17]

सकारात्मक प्रभाव

अन्तर्राष्ट्रीय सूझबूझ को बढ़ावा

1. शिक्षा को बढ़ावा
2. बेरोजगारी से मुक्ति
3. कलाओं को संरक्षण एवं बढावा
4. सांस्कृतिक धरोहर के प्रदर्शन को बढ़ावा देना
5. लोक कलाओं का संरक्षण
6. राष्ट्रीय धरोहर की सुरक्षा
7. सुविधाओं का विकास
8. आपसी सम्बन्धों में मधुरता
9. सांस्कृतिक कार्यक्रमों को बढावा

नकारात्मक प्रभाव

1. विदेशी मुद्रा का अवैध व्यापार
2. नशीली वस्तुओं के व्यापार को बढ़ावा
3. लड़कियों की खरीदफरोख्त
4. कलाकृतियों का क्षरण
5. सांस्कृतिक संक्रमण
6. सामाजिक संबन्धों का ह्रास
7. प्रदर्शन प्रभाव
8. भिक्षावृत्ति को प्रोत्साहन
9. विदेशी द्वेष
10. ठगी

2.5.3 वन्यजोव पर्यटन एवं पर्यावरणीय प्रभावः

पर्यावरण पर्यटन का प्रत्यक्ष अंग है जो पर्यटन क्षेत्र में विकास हेतु महत्वपूर्ण है। पर्यावरण की उत्तमता पर्यटकों की संख्या में वृद्धि करती है तथा पर्यावरण की निम्नता पर्यटन के क्षेत्र में अभाव का कारण बनती है परंतु पर्यटन की अधिकता के फलस्वरूप पर्यावरण का ह्रास करती है। किसी स्थान की स्थिति, मौसम, आदि पर्यावरण को प्रभावित करते हैं।

पर्यटन की स्थितियों को सरल बनाने एवं पर्यटन के संदर्भ में पर्यावरण को दो मुख्य अवयवों में बाँटा जा सकता है। प्रथम भौतिक पर्यावरण एवं दूसरा सामाजिक परिवेश पर्यटन एक प्राचीन क्रिया है परन्तु पर्यावरण की दुर्दशा के कारण इस के स्तर में लगातार कमी आ रही है जिस का मुख्य कारण औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, विकास यह दुनिया अब पहले जैसी नहीं रही है। मनुष्य जीवन अन्य विकास और उत्थान के साथ इस दौड़ में कदमताल करते हुए अब तेज गतिशील हो गया है। इसके अतिरिक्त यातायात के साधनों में तीव्र विकास होने से पर्यटकों का आनाजाना अधिक बढ़ गया है। जिससे राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन को अधिक बढ़ावा मिला है।[18]

जब पर्यटक किसी वियाबान में भ्रमण करने जाते हैं तो वह जाने अनजाने वहाँ पर कई प्रकार से पर्यावरण को भारी हानि पहुँचा देते हैं। पोलीथीन, मिठाई के डिब्बे अन्य कूड़ा कचरा वहाँ छोड़ देते हैं, जिससे वहाँ का पर्यावरण प्रदूषित हो जाता है। इस प्रकार पर्यावरण का पर्यावरणीय प्रभाव वहाँ पर पड़ता है।

सरकार उन प्राकृतिक स्थलों तक सड़के व होटल बनाती है, पुल आदि का निर्माण किया जाता है, जिससे उन स्थलों को परोक्ष एवं प्रत्यक्ष रूप से हानि पहुँचती है।[19]

राष्ट्रीय अभ्यारण्यों और आरक्षित क्षेत्रों में पर्यटन का वन्य जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जिसमें पशुओं का जीवन बाधित होता है। अनियोजित पर्यटन से उन क्षेत्रों की वहन क्षमता पर काफी दबाव पड़ता है। जिससे वन्य

जीवन भी बुरी तरह से प्रभावित होता है। अभ्यारण्यों में तेजी से चलती गाड़ियों के कारण वन्यजीव प्रभावित होता है। जंगलों में बने आवासीय स्थलों और कैंप स्थलों के आसपास अनियंत्रित और अनियोजित ढंग से पानी बहाने और खानेपीने का सामान फेंकने से जानवर इसकी और आकृष्ट होते हैं और उनकी जीवन शैली बाधित होती है।[20]

2.6 पर्यटन का विकासः

''अतिथि देवो भवः'' की संकल्पना काफी पुरानी है तथा यह माना जाता रहा है कि अतिथि आगमन से समृद्धि बढ़ती है। एशिया की सभी संस्कृतियों में अतिथि सत्कार की परम्परा मिलती है। लोकगीतों, व लोककथाओं और साहित्य की अन्य विधाओं में इसका जिक्र बारबार किया गया है। आरम्भिक काल में यात्री अतिथि का ही सम्मान पाता था, लेकिन पर्यटन की स्थापना सबसे पहले मिस्त्र में हुई और रोमन साम्राज्य में यह अपने उत्कर्ष पर पहुँच गया। पूरब की ओर चीन के तटीय साम्राज्य और भारत का मौर्य साम्राज्य यात्रियों और आगंतुकों के आवागमन और आवभगत के लिए प्रसिद्ध था। इस काल में सड़कों को सुनियोजित ढंग से बनाया गया तथा उन्हें जोड़ा गया। परिवहन की समुचित व्यवस्था भी की गयी। सभी मार्ग राजमार्ग से जोड़े गए और व्यापार तथा पथिकों के लिए अलग से पथ निर्माण किये गये। यात्रा के लिए आवश्यक सरायों, भोजनालयों, अतिथि गृहों, धर्मशालाओं और पंथागारों की स्थापना भी इस दौरान की गई। इस प्रकार मिस्त्र की सभ्यता ने विश्वभर के पर्यटकों को अपनी ओर आकृष्ट किया। एलेक्जेंड्रिया के लाईट हाऊस को दुनिया के सात महानतम आश्चर्यों में से एक माना जाता है। इससे पता चलता है कि पर्यटन की उत्पत्ति में उत्सुकता और आनंद इन कारकों का विशेष महत्व रहा है। यूनानियों ने पर्यटन के नए आयामों को विकसित किया और पर्यटन और अफ्रीका से आगे पूर्व तट तक पहुँच गया। इस प्रकार यूनानियों ने पर्यटन विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया।[21]

2.6.1 भारत में पर्यटन का उद्भव एवं विकास

प्राचीन काल से ही पर्यटन हमें विभिन्न व्यक्तियों की यात्राओं के रूप में देखने को मिलता है। हेन्सांग, फाह्यायान जैसे व्यक्तियों के यात्रा वृतान्तों से हमें प्राचीन कालीन यात्रा की जानकारी प्राप्त होती है। जिसमें मार्ग की कठिनाईयों व यात्रा के उद्देश्यों का वर्णन किया गया था। तत्कालीन समय में लोग विभिन्न उद्देश्यों जैसे– शिक्षा, सामाजिक व राजनैतिक कार्यों की पूर्ति, जीविका जीने अथवा अर्थोपार्जन के लिए एक स्थान से अन्य स्थान की यात्रा करते थे तथा उद्देश्य विशिष्ट कार्यों से सम्बन्धित हाता था, लेकिन कालान्तर में छुट्टोयाँ व्यतीत करने, सैरसपाटे अथवा मनोरंजन इसका उद्देश्य हो गया लेकिन यह यात्रा मार्गों की दुर्गमता एवं खतरों तथा यातायात के साधनों के अभाव में यह सम्भव न हो सका परन्तु इतना तो निश्चित ही है कि किसीनकिसी रूप में पर्यटन का आविर्भाव काफी समय पहले हो चुका था।

भारत में आधुनिक पर्यटन का विकास ब्रिटिश शासकों ने अपनी कुछ सुविधा और उन्नति के लिए किया गया। गर्मी के मौसम में कार्य करने के लिए पहाड़ियों पर बस्तियां बसाई गईं और वहीं से प्रशासनिक और संभ्रांत वर्ग अपना कार्य करने लगे जो लोग समुद्र के किनारे की आबोहवा का आनन्द उठाना चाहते थे उनके लिए पूर्वी तट वाल्टेयर और पश्चिमी तट पर मरीना और जूहु जैसे बीच समुद्र तट बसाए गए तथा ब्रिटिश हिस्सों को प्रसारित करने के लिए रेलवे, होटलों, अतिथिगृहों और विश्राम स्थलों को बढ़ावा दिया गया। इस प्रकार जाने अनजाने में पर्यटन का विकास शुरू हुआ।

भारत के पयटन का विधिवत एवं सुचारू कार्य ''सार्जेण्ट कमेटी'' के गठन के बाद हुआ। सार्जेण्ट कमेटी की नियुक्ति सन् 1945 में भारत सरकार द्वारा की गई, जिसने सन् 1946 में अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, जिसमें यह संस्तुति की गई कि भारत में पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने के लिए एक पृथक पर्यटन संगठन का सृजन केन्द्र सरकार के निर्देशन में किया जाना चाहिए। सन् 1948 में ''पर्यटन आगमन कमेटी'' की स्थापना की गई तथा सन् 1950 में केन्द्रीय पर्यटन सलाहकार समिति की नियुक्ति की गई। सन् 1952

में विदेशी पर्यटन कार्यालय न्यूयार्क में खोला गया तथा 1955–56 में परिवहन मन्त्रालय के अन्तर्गत पर्यटन आवागमन शाखा का विस्तार करके उस का नाम ''पर्यटन विभाग'' रख दिया गया। 1960 के दशक में भारतीय पर्यटन विकास निगम (ITDC) की स्थापना का निर्णय लिया गया। मार्च 1963 पर्यटन के सम्बन्ध में 'झा' कमेटी का गठन किया गया। इस कमेटी द्वारा 15 सूत्री योजना का सुझाव दिया। एक समिति की स्थापना की गयी, जिसके आधार पर निम्न तीन निगमों की स्थापना का प्रावधान किया गया

– इण्डिया टूरिज्म कॉर्पोरेशन लिमिटेड

– होटल कॉर्पोरेशन लिमिटेड

– इण्डिया टूरिज्म ट्रान्सपोर्ट अण्डरटेकिंग लिमिटेड

उपर्युक्त तीनों निगम पयटकों हेतु आवास सुविधा, खानपान, आगमन हेतु ट्रेवल एजेसियों की सुविधायें एवं अन्य बहुत सी सुविधाओं को उपलब्ध कराने में जुट गये लेकिन इन तीनों निगमों में तालमेल का अभाव रहा एवं वांछित परिणाम नहीं मिले।

1966–67 में पर्यटन विभाग को परिवहन निगम से नागरिक उड्डयन विभाग में लाया गया तथा 1970 के दशक में पर्यटन को नागरिक उड्डयन मंत्रालय स अलग कर दिया गया। वर्तमान में पर्यटन मंत्रालय पर्यटन मंत्री के अधीन कार्य करता है। पर्यटन विभाग द्वारा पर्यटन के संगठन एवं प्रोत्साहन से संबंधित कार्यों को करने के लिए 8 विभागों का गठन किया गया तथा पर्यटकों को आकर्षित करने लिए देशविदेश में अनेक क्षेत्रीय कार्यालय खोले गये हैं। जिससे पर्यटन का तेजी से विकास हो सके।[22]

2.6.2 राजस्थान में पर्यटन का उद्भव व विकासः

राजस्थान भारत के इतिहास में एक गौरव पूर्ण स्थान रखता है। राजस्थान अपनी कला, वीरता, शौर्य, त्याग, लोकजीवन और अदम्य साहस, बलिदानों के कारण विश्व इतिहास में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

राजस्थान अपने वीरों की अमर गाथाओं से गुंजित प्राचीन भव्य स्मारकों 'किलों तथा अनुपम स्थापत्य कला के प्रतीक महलों, मंदिरों, हवेलियों, रंगीले त्यौहारों, मेलों, रीतिरिवाजों तथा मोहक रंगबिरंगी पोशाकों के लिए प्रसिद्ध है।

राजस्थान सैलानियों के लिए तो स्वर्ग है। यहाँ का चप्पा चप्पा अनोखापन, नवीनता, विविधता तथा मोहकता के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के पर्यटन उद्योग के लिए तोव्र गति से विकास किया जा रहा है। राजस्थान मूर्तिकला, काष्टकला, मीना व दस्तकारी का खजाना है वहीं यहाँ की स्वर्णिम बालू रेत के टीले, लहराते हरेभरे खेत, गुनगुनाते कृषक वर्ग का लोकजीवन एवं पहनावा भी सदियों से पर्यटन क्षितिज पर अपना विशिष्ट महत्व रखता है। राजस्थान के ये सभी आकर्षण पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

''आओ जी पधारो म्हारै देस''

राजस्थान राज्य में पर्यटन का विधिवत उद्‌भव 1956 में हुआ जब यहाँ पर्यटन विभाग की स्थापना की गई। इस की स्थापना का उद्देश्य राज्य में देशी व विदेशी पर्यटकों को आकर्षित कर राजस्थान को संसार के पर्यटन मानचित्र पर विशिष्ट स्थान दिलाना था।

सन् 1976 में राजस्थान में पर्यटन विकास को तेज करने के उद्देश्य से भारत सरकार ने पर्यटन विभाग में एक केन्द्रीय सर्वेक्षण टीम नियुक्त की जिसकी प्रमुख कांता ठाकुर थीं। ये उत्तर भारत की पयटन निदेशक थीं। इस सर्वेक्षण टीम के सुझाव पर 24 नवम्बर 1978 को एक अलग निगम की स्थापना की गई जिस को राजस्थान पर्यटन विकास निगम लिमिटेड (RTDC) नाम दिया गया।[23]

मोहम्मद युनुस समिति की सिफारिशों पर पर्यटन को वर्ष 1989 में उद्योग का दर्जा प्रदान करने वाला राजस्थान देश का प्रथम राज्य बना।

सन्दर्भ सूचीः

1. नेगी, जगमोहन, ''पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धान्त,'' तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, ed. 4th, 2007, पृष्ठ सं. 9
2. जोशी, अतुल, कुमार, अमित, जोशी, महिमा, ''भारत में आधुनिक पर्यटन'', रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ सं. 3
3. नेगी, जगमोहन, ''पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धान्त'' तक्षशिला प्रकाशन, ed. 4th, नई दिल्ली 2007, पृष्ठ सं. 10
4. नेगी, जगमोहन, ''पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धान्त'' तक्षशिला प्रकाशन, ed. 4th, 2007, पृष्ठ सं. 2021
5. रैना, अभिनव कमल, सारण, भूराराम, ''पर्यटन एवं होटल उद्योग : प्रबन्ध, सिद्धान्त एवं व्यवहार'', कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2010, पृष्ठ सं. 7
6. रैना, अभिनव कमल, सारण, भूराराम, ''पर्यटन एवं होटल उद्योग : प्रबन्ध, सिद्धान्त एवं व्यवहार'', कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2010, पृष्ठ सं. 89
7. नेगी, जगमोहन, ''पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धान्त,'' तक्षशिला प्रकाशन, ed. 4th, 2007, पृष्ठ सं. 25
8. इग्नू टी. एस. 1, पर्यटन में आधार पाठ्यक्रम, उद्योग, 1997, पृष्ठ सं. 12
9. एम. एम. आनन्द, टूरिज्म एण्ड होटल इण्डस्ट्री ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, 1985, पृष्ठ सं. 15–16
10. शर्मा, के. के., टूरिज्म इन इण्डिया, सी.पी.एच., जयपुर, 1991 पृष्ठ सं. 26–27
11. सेठ, प्राणनाथ, सक्सेसफुल टूरिज्म मैनेजमैन्ट, एस.पी.आर.एल., नई दिल्ली, 1985, पृष्ठ सं. 65
12. प्रताप, राणा, पर्यटन भूगोल, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008, पृष्ठ सं. 7375

13. भारत, वार्षिक संदर्भ ग्रन्थ, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली 2014, पृष्ठ सं. 88
14. तद्‍ैव
15. जैन, यशोधरा, टूरिज्म डवलपमेण्ट, ए.पी.एस., नई दिल्ली 2001 पृष्ठ सं. 16
16. इग्नू, टी.एस. 1, पर्यटन में आधार पाठ्यक्रम, पर्यटन के प्रभाव, 1997 पृष्ठ सं. 12
17. रैना, अभिनव, कमल, सारण, भूराराम, ''पर्यटन एवं होटल उद्योगः प्रबन्ध, सिद्धान्त एवं व्यवहार'', कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2010 पृष्ठ सं. 144
18. गोयल, राजेश, भारतीय पर्यटन उद्योग, वंदना पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ सं. 103
19. रावत, ताज, पर्यटन का प्रभाव एवं प्रबंधन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002, पृष्ठ सं. 185
20. सेठ, प्राणनाथ, सक्सेसफुल टूरिज्म मैनेजमेंट, एस. पी. आर. एल. नई दिल्ली 1985, पृष्ठ सं. 9395
21. इग्नू, टी.एस.1, पर्यटन में आधार पाठ्यक्रम, पर्यटन परिघटना 1985, पृष्ठ सं. 34–40
22. शर्मा, के.के., टूरिज्म इन इण्डिया, क्लासिकल पब्लिकेशन, जयपुर, 1991, पृष्ठ सं. 57–58
23. रैना, अभिनव कमल, सारण, भूराराम, पर्यटन एवं होटल उद्योग, प्रबन्ध, सिद्धान्त एवं व्यवहार, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली 2010, पृष्ठ सं. 35
24. राव, कनक सिंह, धरोहर, पिंकसिटी पब्लिशर्स, जयपुर, 2013, पृष्ठ सं. ठ1–113

अध्याय– तृतीय

पर्यटन का वर्गीकरण

3.1 घरेलू पर्यटन

3.2 अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन

अध्याय–तृतीय

पर्यटन का वर्गीकरण

पर्यटन को दो रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है:

3.1 घरेलू पर्यटनः

सामान्यतया वह पर्यटक जो अपने देश की सीमाओं में भ्रमण करते हैं, घरेलू पर्यटक कहलाते है। इस तरह से वह पर्यटक जो अपने देश की सीमाआ के अन्दर ही रहते हैं अथवा उनके पर्यटन सम्बन्धी कार्यकलाप अपने देश की सीमाओं के अन्दर ही संपन्न किये जाते हैं, घरेलू पर्यटक कहलाते हैं। चूँकि पर्यटक अपने ही देश की सीमाओ में रहता है अतएव एक विदेशी पर्यटक की कठिनाइयों जैसेमुद्रा परिवर्तन, भाषा, पासपोर्ट, वीजा आदि का सामना नहीं करना पड़ता है। राष्ट्रीय पर्यटक अपने दिनप्रतिदिन के उपयोग में आने वाली मुद्रा तथा भाषा का प्रयोग करके ही काम चला सकता है।

सन् 1974–75 में (IUOTO) द्वारा निम्न परिभाषा प्रस्तुत की गयी। यह परिभाषा केवल एक परिणाम के रूप में ही नहीं, बल्कि वहन क आधार हेतु भी पायी गयी।[1]

पर्यटन के तीन मुख्य आधार है

1. यात्रा का भौगोलिक महत्व
2. यात्रा की अवधि
3. निवास का स्थान

बहुत से देशों द्वारा निवास के स्थान से तात्पर्य उसी देश के पर्यटको द्वारा ही अपने ही देश के भ्रमण से है यात्रा के भौगोलिक महत्व से तात्पर्य उसी देश के अन्दर अर्थात सीमा क अन्दर यात्रा से है। यात्रा की अवधि से आशय पर्यटन स्थल पर एक रात ठहरने से है। आज पर्यटन कुछ हद तक

अन्तर्राष्ट्रीय समझ और विश्व शान्ति का पर्याय बन चुका है। सभी महत्वपूर्ण पर्यटन देशों में घरेलू पर्यटन संपूर्ण पर्यटन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

इसके बावजूद घरेलू पर्यटन को मापने की कोई भी आसान तकनीक का प्रयोग नहीं किया जाता है। कुछ देशों में समयसमय पर घरेलू पर्यटन की संपूर्ण परिभाषा न होने के कारण इसके माप तथा तुलनात्मक विश्लेषण में कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं।

जहाँ यू. के. और बेल्जियम द्वारा घरेलू पर्यटन को इस प्रकार परिभाषित करते हैं। ''वह घरेलू पर्यटक जो किसी उद्देश्य से घर से दूर 4 रात के लिए व्यय करता है व्यापार उद्देश्य के अलावा वह घरेलू पर्यटक है।''[2]

''वहीं यू.एस.ए. तथा कनाड़ा द्वारा अपने घर से 100 कि.मी. या इससे अधिक दूर किसी यात्रा पर जाता है, वह घरेलू पर्यटक हैं।''

कुछ देशों द्वारा घरेलू पर्यटक वह है जब एक व्यक्ति अपने घर से दूर कम से कम एक दिन की यात्रा करता है।

अतएव पर्यटन एक सामाजिक सेवा क्षेत्र का एक भाग है और प्राथमिकता के अनुसार निवेश कार्यक्रमों का निश्चयपूर्वक आयोजन किया जाता है। घरेलू पर्यटन में निवेश करने से आय तथा रोजगार पर प्रभाव पड़ता है।

पर्यटन संगठनो द्वारा घरेलू पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए इनके द्वारा पर्यटन स्थलों पर स्वागत कक्ष बनाये गये हैं। घरेलू पर्यटन को प्रोत्साहित एवं विकास में राष्ट्रीय पर्यटन द्वारा संगठन पूरा सहयोग प्रदान करता है।

भारत में घरेल् पर्यटन दो भागों तक सीमित है। वे घरेलू पर्यटक जो बड़ी संख्या में रेल के सामान्य श्रेणी में यात्रा करते हैं और दूसरी तरफ धनी वर्ग जो हिल स्टेशनों की यात्रा प्रथम श्रेणी डिब्बों में करते हैं। भारतीय घरेलू पर्यटक समूह में कम यात्राएँ करत हैं।

भारत में मुख्य रूप से धार्मिक भावना से प्रेरित होकर ही यात्रा की जाती है। यह यात्रा केवल हिन्दूओं द्वारा ही नहों बल्कि बौद्धों तथा अन्य धर्मों के लोगों द्वारा भी की जाती है।

3.1.1 घरेलू पर्यटन के लाभः

घरेलू पर्यटन पूरी तरह से आर्थिक, सामाजिक और साँस्कृतिक लाभ देने वाली गतिविधि है। अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन के लिए पासपोर्ट की आवश्यकता होती है। घरेलू पर्यटन राष्ट्रीय एकीकरण की चाबी है। घरेलू पर्यटन की गतिविधीयाँ क्षेत्रीय विविधता और एकता के रूप में समझ विकसित करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। भारत के प्राचीन इतिहास और साथ ही वर्तमान स्थिति को जानने में घरेलू पर्यटन महत्वपूर्ण है।

देश व लोगों के बीच में पारस्परिक विश्वास को विकसित किया जा सकता है। देश के बारे में जानने की आवश्यकता होती है, क्योंकि भारत एक विविधता वाला देश है। यहाँ के लोगों के भिन्नभिन्न धर्म और अलगअलग राज्यों की अलगअलग भाषाऐं व संस्कृति और जीवन को जीने के विभिन्न ढ़ंग है। अतः कहा जा सकता है कि घरेलू पर्यटन इन सब को समझने और जानने में महत्वपूर्ण है।

यदि लोगों को एक राज्य के अलावा देश के अन्य राज्यों की यात्रा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाये तो लोगो को विभिन्न सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहरों और अपने देश की पाचीन भूमि आदि के बारे में ज्ञान प्राप्त होगा, और देश की भाषाओं को जानने का अवसर प्राप्त होगा। विश्वास किया जा सकता है कि लोगों का आपस में सम्पर्क रहने से केवल कभी कभार ही नहीं, बल्कि बारम्बार यात्रा करने से और अधिक निकट आ जायेगें।

पर्यटन एक सामाजिक आवश्यकता है। पर्यटन की भूमिका केवल स्थानों की यात्रा करना और यश प्राप्त करना ही नहीं बल्कि सावधानी पूर्वक विचार

करने पर पर्यटन हमारी जिन्दगी का एक महत्वपूर्ण भाग है और जब हम स्थानों की यात्रा करते हैं तो दिनप्रतिदिन जीवन में अनेक व्यक्ति हमारे साथ होते हैं जिनके बीच हम घुलमिल जाते हैं। अतः हमारी अच्छी छवि विकसित होती है। पर्यटन को केवल आर्थिक रूप से ही नहीं लिया जाना चाहिए बल्कि यह एक सामाजिक आवश्यकता है।

समृद्ध देशों से आने वाले पर्यटकों के लिए बहुत ही उच्च मानको वाली सुविधाओं की आवश्यकता होती है और विकासशील देशों में घरेलू पर्यटक अधिकतर कम आय वाले होते हैं इसलिए उनकी इच्छाओं पर ध्यान नहीं दिया जाता है। इस समस्या का सामना अपने देश में करना पड़ता है।

यद्यपि राज्य सरकारों द्वारा घरेलू पर्यटकों के लिए लक्जरी होटल की सुविधाओं द्वारा उनकी आवश्यकताओं को संतुष्ट किया जा सकता है। क्योंकि सभी घरेलू पर्यटक गैर समृद्ध नहीं होते हैं। अतः राज्य सरकार द्वारा जो गैर समृद्ध हैं उनकी आवश्यकता की व्यवस्था बिना किसी दुश्चिंता के करनी चाहिए।

3.1.2 घरेलू पर्यटन को बढ़ाने के उपाय[2]

घरेलू पर्यटन का उत्प्रेरण राष्ट्रीय एकीकरण के लिए सहायक सिद्ध हो सकता है और इसके लिए केन्द्र या राज्य सरकारों को पर्यटन सुविधाओं के लिए आवश्यक फण्ड उपलब्ध कराना चाहिए। इसके लिए बड़े संगठनों और राज्य प्राधिकरणों को मिलकर कार्य करना होगा। सरकारी तथा निजी क्षेत्र और अन्य संस्थानों द्वारा मिलकर कार्य करने से घरेलू पर्यटन में अच्छी वृद्धि प्राप्त की जा सकती है। घरेलू पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए निम्न सुझाव दिये जा सकते हैः

1. घरेलू पर्यटन साँख्यिकी को एक सुव्यवस्थित तरीके से एवं निष्पक्ष रूप से वर्गीकृत आंकड़ों के रुप में तैयार किया जाना चाहिए। जिनमें

धार्मिक यात्री, मजदूर, नियोजित व्यक्तियों, कृषकों, युवाओं और छात्रों के आँकड़े शामिल किये जाने चाहिए।

2. जो क्षेत्र आर्थिक रूप से कमजोर हैं उनके लिए व्दम ैजंतए ूव जंतए जीतमम ैजंत होटल की तुरन्त आवश्यकता है। वे घरेलू पर्यटन की बड़ी मात्रा को उपलब्ध कराये जा सकते हैं। पश्चिमी देश और दक्षिणपूर्वी देश सस्ते कर्ज और भूमि तथा आर्थिक सहायता या अनुदान तथा करों में छूट देकर होटल उद्योग को बढ़ावा दे रहे हैं।
3. नियोजित व्यक्तियों तथा मजदूरों के लिए औद्योगिक नगरों तथा होली डे होम के निर्माण के लिए भूमि तथा ऋण में छूट प्रदान की जानी चाहिए।
4. केवल छोटे होटल ही नहीं बल्कि एक पर्याप्त मात्रा में हाईवे सड़कों पर मोटल्स बनाने चाहिए। उचित किराये के घरों, बैंग्लॉज, बोर्डिंग हाऊस और धर्मशालाओं, यूथ होटल्स, होली डे सेन्टर और कैम्पस आदि की स्थापना की जानी चाहिए।
5. पर्यटन सुविधाओं के विकास के लिए रेल्वे बहुत अधिक सूझबूझ दिखाकर घरेलू पर्यटन को बढ़ा सकता है। रेल्वे द्वारा लोगों के लिए आरक्षण और सुरक्षित टिकट बुकिंग तथा साफसुथरे प्रतीक्षालयों तथा विश्राम गृहों आदि की अच्छी व्यवस्था उपलब्ध करायी जा सकती है।
6. आन्तरिक हवाई यात्रा को बढ़ाकर घरेलू पर्यटन को प्रोत्साहित किया जा सकता है। विदेशी व देशी दोनों पर्यटकों को ही अज्ञात रूप से बड़ी मात्रा में हवाई फ्लाइट की आवश्यकता होती है। अतः हवाई यात्राओं की फ्लाइट कार्यक्रम पर्यटकों को ध्यान में रखकर बनाया जाना चाहिए। हवाई यात्राओं की सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि जहाँ व्यस्त हवाई मार्ग है, वहाँ पूर्व आरक्षण की समस्याऐं उत्पन्न होती हैं और घरेलू पर्यटकों के लिए एयरपोर्ट पर यूटिलिटी प्लेन की आवश्यकता है। जिस प्रकार दिल्ली के हवाई अड्डे पर उपलब्ध कराई जा रही है। इस प्रकार की सुविधाऐं देश के अन्य हवाई अड्डों पर भी उपलब्ध करायी जानी चाहिए।

7. घरेलू पर्यटकों के लिए सुनियोजित टूर पैकेज घरेलू पर्यटकों को ध्यान में रखते हुए पर्यटन संगठनों द्वारा दिये जाने चाहिए।
8. पर्यटकों की रूचि को देखते हुए भोजन, साफ पानी की व्यवस्था प्रत्येक पर्यटन स्थल पर की जानी चाहिए।
9. घरेलू पर्यटकों के लिए पर्यटन संगठनों द्वारा सही तरीके से गाईड सेवाओं, पर्यटन साहित्य, मानचित्र, फोटो तथा पर्यटन में होने वाली गतिविधियो की जानकारी की आवश्यकता को पूरा किया जाना चाहिए।
10. घरेलू पर्यटकों को पूरी तरह से बढ़ावा देने के लिए देश के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले उत्सवों, पारम्परिक नृत्य और संगीत का आनन्द लेने के लिए अच्छे संगठित कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।
11. छुट्टियों के मौसम में प्रत्येक वर्ष बड़ी मात्रा में पर्यटक विभिन्न क्षेत्रों में यात्रा करते हैं। जिनके लिए विशेष यात्री पैकेज आदि सुविधाओं को उन्हें उपलब्ध कराना चाहिए।

इस प्रकार विशेष रूप में पर्यटन को बढ़ाने के लिए हम सामाजिक स्तर को प्रदर्शित करने वाले आनन्द से परिपूर्ण तथा निवेदन करके पर्यटकों को प्रभावित कर सकते हैं। पर्यटक वहाँ आना पसन्द करते हैं, जहाँ साफसफाई तथा अभिवादन आदर किया जाता है।

इसके अतिरिक्त सीधे तौर पर आधारभूत सुविधाओं का विकास किया जाना चाहिए। जो मध्यम आय वाले घरेलू पर्यटकों के लिहाज से सही हो। इससे अच्छीखासी वृद्धि घरेलू पर्यटन में हो जिससे सुविधाओं का उपयोग घरेलू तथा विदेशी दोनों ही प्रकार के पर्यटक कर सकेगे।

यह शिकायत की जाती रही है कि हमारे देश के लोग पर्यटन के लिहाज से जागरूक नहीं है। भारतीय घरेलू पर्यटक को इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं। घरेलू पर्यटक किस रूप में विदेशी पर्यटकों से भिन्नता रखते हैं। संभवतः एक व्यक्ति पर्यटन के तौर पर धार्मिक, व्यापार तथा अध्ययन के

लिए आता है और बिना किसी बात के प्रभावित हुए निश्चित मौसम और सीमा में ठहरने के लिए उसे उचित स्थान उपलब्ध नहीं हो पाता है। यहाँ एक व्यापक तौर से विभिन्नमतों वाले लोग यह मानते हैं कि लाखों घरेलू पर्यटक दिनप्रतिदिन रेलों, बसों और अपनी कारों आदि से यात्रा करते हैं इसमें कोई सन्देह नहीं है कि बहुत से घरेलू पर्यटक घर से बाहर अपने मित्रों तथा रिश्तेदारो के यहाँ रूक जाते हैं। परन्तु निश्चित रूप से कुछ ही पर्यटक होटल या एजेण्ट को कॉल करते हैं।

3.1.3 घरेलू पर्यटन का प्रचार–प्रसारः

(1) सामाजिक

भारत में घरेलू पर्यटन का प्रचार–प्रसार करने के लिए गंभीर प्रयास नहीं किये गये हैं, ज्यादातर संगठन और टूर पार्टिज अनियाजित तरीके से इस काम में लगे हुए हैं। इसलिए घरेलू पर्यटन को वास्तविक रूप देने का समय है। घरेलू पर्यटन में बहुत अधिक संभावनाऐं देखी गयी हैं और इन संभावनाओं का पता लगाकर स्वीकार करने की आवश्यकता है और समाज द्वारा यह काम विशेष ढंग से सम्मानित पर्यटकों के लिए कर सकता है। लोगों द्वारा अपने संगठनों तथा राज्य सरकारों की एजेन्सी द्वारा पर्यटकों की देखभाल की जानी चाहिए। यह केवल राज्य का ही काम नहीं है, लेकिन ज्यादातर राज्य सरकारों के संगठन इस काम को अच्छी तरह से कर रहे हैं तथा साथ ही निजी संगठनों द्वारा सफल टूर मुख्य धार्मिक केन्द्र पर अच्छी तरह से भारत के पर्यटन की भीड़ का प्रबन्धन का कार्य कर रहे हैं।

देश

ऑस्ट्रेलिया, ऑस्ट्रिया, कनाड़ा, जर्मनी, डेनमार्क, हंगरी, जापान, मलेशिया, मैक्सिको, दक्षिण अफ्रीका, यू.एस.ए. में राष्ट्रीय पर्यटन संगठन सीधे तौर पर घरेलू पर्यटन के लिए जिम्मेदार नहीं हैं। मुख्यतः विदेशी पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए ही उत्तरदायी है। भारत के संदर्भ में देखा जाये तो

अफगानिस्तान, आयरलैण्ड, इटली, न्यूजीलैण्ड, फ्राँस, युगाण्डा, ट्यूनिशिया, फिलीपिन्स सामान्यतः घरेलू पर्यटन के लिए उत्तरदायी हैं। परन्तु ये विदेशी पर्यटन को बढ़ावा देने पर ध्यान केन्द्रीत करते हैं और घरेलू पर्यटन पर कम ध्यान देते हैं। जबकि बेल्जियम, बुल्गारिया, पाकिस्तान, फिनलैण्ड, ग्रीस, कोलम्बो, पॉलैण्ड, रोमानिया में राष्ट्रीय पर्यटन संगठन द्वारा घरेलू पर्यटन को बढ़ावा देने में काफी रूचि दिखाते हैं।

(2) शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक निकायः

घरेलू पर्यटन को बढ़ावा देने में विभिन्न एन.जी.ओ. और शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक निकाय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्कूल तथा विश्वविद्यालय प्राधिकरण के अन्तर्गत विभिन्न विषयों तथा सहशिक्षा गतिविधियों द्वारा देश में छात्रों को पर्यटन के लिए प्रेरित किया जाता है। कुछ विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में पर्यटन एक विषय के रूप में प्रारम्भिक तथा सैकण्डरी स्तर पर पढ़ाये जाने की शुरूआत की गयी है।

भारत में विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा पर्यटन डिग्री कोर्स तथा होटल और केटरिंग को संचालित किया जा रहा है।

घरेलू पर्यटकों द्वारा मुख्य रूप से रेल्वे और मोटर वाहनों का प्रयाग किया जाता है। एक बड़ी संख्या में घरेलू पर्यटक न्यूनतम आय वाले होते हैं। वे औसतन 3 से 5 दिन तक किसी स्थान पर रूकते हैं। मुख्य पर्यटन स्थलों पर घरेलू पर्यटकों को पर्याप्त सुविधाऐं प्राप्त नहीं होती ह। इन पर्यटकों के लिए एक सितारा होटलों का विस्तार करना चाहिए। आवश्यक रूप से सस्ती सुविधाओं का निर्माण कर तथा आधारभूत सुविधाओं का विकास घरेलू पर्यटन पिरामिड का आवश्यक रूप से आधार होना चाहिए और हमारे देश में आधारभूत सुविधाओं का विकास पर्यटन के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। साथ ही राष्ट्रीय एकीकरण के दृष्टिकोण से और आर्थिक गतिविधियों के हिसाब से पर्यटन को विकसित किया जाना चाहिए।

घरेलू पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य पर्यटन निगम द्वारा ऐतिहासिक स्थलों, धार्मिक केन्द्रों तथा राष्ट्रीय महत्व के स्थानों पर पर्यटन गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए। निगम द्वारा मध्यम आय वर्ग के पर्यटकों को ध्यान में रखते हुए अनेक पलंगो वाले शयन कक्षों की सुविधाऐं तथा बस व छोटी बसों की व्यवस्था सस्ते किराये पर उपलब्ध करानी चाहिए तथा राजमार्गों पर मुख्य पर्यटन स्थलों पर संकेतक होने आवश्यक हैं।

व्यापारिक संगठन तथा मजदूर संघ द्वारा घरेलू पर्यटन को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बहुत से देश भारत सहित में सरकारी निगम तथा मजदूर कल्याण कार्यक्रमों जिनमें यात्रा तथा मनोरंजन क्रियाओं को बढ़ावा देने के लिए आयोजित करते हैं। जैसे कि जर्मनी में व्यापार संघ द्वारा अपनी ट्रेवल्स एजेन्सी और लम्बी दूरी की यात्रा का आयोजन किया जाता है तथा व्यापार संघ द्वारा मजदूरों के लिए सुविधाओं की स्थापना की गयी है।

कुछ कम्पनियों द्वारा अपने लाभ के एक हिस्से का कर राहत प्राप्त कर सामाजिक कल्याण के उद्देश्य से सस्ती और मुफ्त होली डे सुविधाओं तथा परिवहन सुविधाओं आदि अपने नियोक्ताओं को प्रदान कर घरेलू पर्यटन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्थानीय तथा प्रादेशिक पर्यटन प्राधिकरणों को अनुदान प्रदान कर जिन का उद्देश्य पर्यटन सुविधाओं में सामान्य सुधार और विकास कर घरेलू पर्यटन में वृद्धि करने में सहयोग करते हैं।

3.1.4 घरेलू पर्यटन की कठिनाइयाँ[3]:

भारत में घरेलू पर्यटन ज्यादातर धार्मिक स्थलों के पर्यटन को ही आवश्यक रूप से पोत्साहन दिया गया और अग्रेंजों द्वारा तेजी से हिल (भ्पसस) रिसोर्ट प्रारम्भ किये गये क्योंकि यह उन लोगों का फैशन था जैसे वाइल्डलाईफ, समुद्री बीच, पर्वतारोहण जो कि भारतीयों को यात्रा करने के लिए कम आकर्षित करते थे भारत का आम आदमी देश के हिस्सों की यात्रा करने के लिए ज्यादा खर्च नहीं करता है क्योंकि इसकी कीमत ज्यादा होती

हैं बहुत ही कम होटल हैं जो कि मध्यम कीमतों के हैं जो कि आरामदायक और साफ सफाई से सुविधाऐं उपलब्ध कराते हैं। सरकारी विभागों द्वारा भी विश्रम गृह तथा डाक बंगला संचालित किये जाते हैं इसके अतिरिक्त घरेलू पर्यटकों की जो समस्या है रेलवे रिजर्वेशन तथा बहुत से ट्रेवल्स ऐजेन्ट भी घरेलू पर्यटन के लिए कोई ट्रिप के अनच्छुक होते हैं अधिकतर ट्रवल्स एजेण्ट विदेशी पर्यटकों को ज्यादा महत्व देते हैं क्योंकि उनसे अधिक आय प्राप्त होती है। कुछ ट्रेवल्स एजेण्ट के अनुसार उन्हें कुछ परेशानियाँ आती हैं क्योकिं लोग छोटी छोटी बातों पर होहल्ला मचाते हैं और कभी भी उनके कार्यक्रमानुसार नहीं चलते हैं।

ज्यादातर पर्यटन विभाग द्वारा पर्यटन केन्द्रों को देखने के लिए जाने वाले पर्यटकों के लिए कोई विशेष सहायता नहीं दी जाती इसके अतिरिक्त कुछ बिन्दुओं द्वारा कठिनाईयों को देख सकते हैं

1. घरेलू पर्यटन की समस्या परिवहन तथा कम कीमत पर सुविधाओं का सभी सम्भावित पर्यटन स्थलों पर अभाव का होना देश में घरेलू पर्यटन के विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं।
2. रेलवे द्वारा घरेल् पर्यटकों के लिए अच्छी सुविधाओं को बढ़ाकर घरेलू पर्यटन का तेजी से विकास किया जा सकता है।
3. यदि विश्वसनीय रूप से दर्शनीय स्थलों का विकास किया जाये तो लोगों की बड़ी संख्या को आकर्षित किया जा सकता है लोगों को देश की सीमाओं में घूमने का आनन्द प्राप्त होगा।

पर्यटन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए केवल विदेशी पर्यटन ही महत्वपूर्ण नहीं है। बल्कि घरेलू पर्यटन भी उतना ही आवश्यक है और अन्तर्राष्ट्रीय यात्रियों के लिए आधारभूत सुविधाओं के विकास में भी योगदान देता है।

किसो भी देश में घरेलू पर्यटन हमेशा ही पर्यटन का महत्वपूर्ण घटक है और पर्यटन पिरामिड का आधार है। अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन के तुलनात्मक रुप से देखा जाये तो घरेलू पर्यटन के क्षेत्र और उस के विकासशील अर्थव्यवस्था में हिस्से को नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता है। परन्तु देखा जाये तो घरेलू पर्यटन का विश्व पर्यटन में लगभग 80–85 प्रतिशत हिस्सा है। अमेरीका में अपने ही देश में पर्यटन करने वाले 94 प्रतिशत हैं।

अपने देश की स्थलीय जनसंख्या अनुभव और आनंद के लिए पर्यटन को अधिक विकसित करके यात्रा और अनुभव प्राप्त करने के लिये किया जा सकता हैं। घरेलू पर्यटन का विकास कर नये और मान्यता प्राप्त और अधिक आरामदायक सुविधाऐं स्थानीय लोगों को प्रदान की जा सकती है। जैसेः अच्छी परिवहन सुविधाऐं, खरीददारी सुविधाऐं और मनोरंजन सुविधाऐं आदि। इससे अर्थव्यवस्था में अनेक विविधता वाली सुविधाओं का विकास किया जा सकता है। इसके साथ ही आधारभूत सुविधाओं का विकास कर घरेलू पर्यटन को बढ़ाया जा सकता है। पर्यटन उद्योग की दृष्टि से भारत में आज पारम्परिक और ऐतिहासिक स्थल तथा आवास पर्यटन तेजी से बढ़ते हुए भाग हैं। भारत के मध्यम वर्ग कि आय का बढ़ता हुआ स्तर घरेलू पर्यटन का एक मजबूत आधार प्रदान करता है। अब यह स्वीकार किया जाने लगा है कि यात्राओं में वृद्धि करने के लिए सस्ती और साफ सुथरी अच्छी सुविधाऐं बढ़ाना आवश्यक है इसके साथ ही पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये ''बजट ट्रेवल्स'' को लक्ष्य किया गया है इसके साथ ही यात्राओं को बढ़ाने की तीव्र इच्छा और अधिक से अधिक माप को बढ़ाने के लिए कुछ औद्यौगिक व्यक्ति भी ट्रेवल्स को बढ़ावा देने में अच्छी भूमिका निभा रहे है। इस के साथ ही ''बजट होटल'' की मॉग भी होने लगी है 'बजट होटल' से तात्पर्य है। जहॉ व्यक्ति और सामान की सुरक्षा, अच्छ और सुविधापूर्ण कमरे, आरामदायक विस्तर और साफ टॉयलेट हो जो यात्रियों के बजट के अनुसार हो।

यही भी आवश्यक है कि अन्तर्राष्ट्रीय और घरेलू पर्यटकों को अलग–अलग तरीके से लिया जाना चाहिए क्योंकि अर्न्राष्ट्रीय पर्यटकों का सुविधाओं के लिए बजट अधिकतर घरलू पर्यटकों से अधिक होता है। इस लिए लाभ कमाने के लिए उन्हें अधिक महत्व दिया जाता है और इस के लिए प्राईवेट संगठन अर्न्राष्ट्रीय पर्यटकों की मॉग को तीवता से पूरा करता है। जबकि घरेलू पर्यटकों लिए ज्यादातर अनियोजित सुविधाऐं ही उपलब्ध है।

भारत के पर्यटक विभाग द्वारा एन.एस.एस.ओ. के साथ मिलकर एक सर्वे किया गया जिसका उद्धेश्य देश में घरेलू पर्यटकों की संख्या का अनुमान लगाना था और उन कारणों को पहचाना था जिसे से अधिक से अधिक घरेलू पर्यटकों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ावा दिया जा सके जिसमें यात्रा सुविधाओं, आराम दायक सुविधाओं का विकास करना आदि। इस के साथ ही देश में रेल यात्रियों और सड़क यात्रियों की संख्या में भारी बढ़ोत्तरी देखी गयी जिसे ध्यान में रखते हुए सरकार के अधीन कार्यरत भारतीय पर्यटन विकास कार्पोरेशन (ITDC) द्वारा यात्रा प्रबन्धन तथा फोरेस्ट लॉज, पर्यटन की दृष्टि से प्रमुख स्थलों को ध्यान में रखते हुए संचालित किये जा रहे हैं, जो काफी सस्ते हैं और जिनका उपयोग घरेलू पर्यटकों द्वारा किया जा रहा है।[4]

भारत में घरेलू पर्यटन की स्थिति को निम्न तालिका द्वारा देखा जा सकता है :

तालिका संख्या1

वर्ष	घरेलू पर्यटकों की संख्या (मिलियन में)	प्रतिशत परिवर्तन पिछले वर्ष तुलना में
2000	220.11	FD
2001	236.47	7.4
2002	269.60	14.0
2003	309.04	14.6
2004	366.27	18.5
2005	391.95	7.0
2006	462.31	18.0
2007	526.43	13.9
2008	563.03	7.0
2009	668.80	18.8
2010	740.21	10.7

स्त्रोत Indian Tourism Statistics 2010 at a glanc.

निम्न तालिका से स्पष्ट है कि भारत में घरेलू पर्यटन में लगातार वृद्धि हुई है जहाँ वर्ष 2000 में पिछले वर्ष की तुलना में 15.4ः की वृद्धि हुई है, उसी प्रकार 2001 में 7.1 प्रतिशत तथा 2002 में 14 प्रतिशत की वृद्धि देखी गयी ओर 2003 में 14.6 प्रतिशत की मामूली वृद्धि हुई 2004 में 18.5 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई वहीं 2005 में केवल 7 प्रतिशत की ही वृद्धि की तुलना में 2006 में 18 प्रतिशत की अधिक वृद्धि देखी गयी इसी प्रकार 2007, 2008, 2009, 2010 में क्रमशः 13.9, 7.0, 18.8 तथा 10.7 की वृद्धि हुई है।

इसके साथ ही घरेलू पर्यटकों जो देश के विभिन्न राज्यों की यात्रा करते हैं, उन्हें निम्न तालिका द्वारा देखा जा सकता है।

भारत में प्रमुख दस राज्य जहाँ घरेलू पर्यटकों ने सबसे ज्यादा रूचि दिखाई (वर्ष 2010 में)

तालिका संख्या2

क्रम	राज्य	घरेलू पर्यटकों की संख्या	प्रतिशत हिस्सा
1	आन्ध्र प्रदेश	155789584	21.0
2	उत्तर प्रदेश	144754977	19.6
3	तमिलनाडू	111637104	15.1
4	महाराष्ट्र	48465492	6.5
5	कर्नाटक	38202077	5.2
6	मध्यप्रदेश	38079595	5.1
7	उत्तराखण्ड	30206030	4.1
8	राजस्थान	25543877	3.5
9	पश्चिम बंगालश	21072324	2.8
10	गुजरात	18861296	2.5
	Total of top 10 states	632612356	85.5
	Other states	107601941	14.5
	Total	740214297	100%

स्त्रोत – Indian Tourism Statistics 2010 at a Glance.

निम्न तालिका से स्पष्ट है कि भारत के प्रमुख दस राज्यों में कुल पर्यटकों का 85.5 प्रतिशत आये ओर शेष राज्यों में मात्र 14.5 प्रतिशत ही आये। सबसे ज्यादा घरेलू पर्यटक आन्ध्र प्रदेश में 21 प्रतिशत आये। जबकि क्रमशः उत्तरप्रदेश, तमिलनाडू, महाराष्ट्र, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, उत्तराखण्ड, राजस्थान, पश्चिम बंगाल तथा गुजरात मे क्रमशः 19.6, 15.1, 6.5, 5.2, 5.1, 4.1, 3.5, 2.8, 2.5, आये हैं।

3.1.5 घरेलू पर्यटन का महत्व[5]:

घरेलू पर्यटन की सामाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने में इसका बहुत बड़ा योगदान है। पर्यटन से कस्टम, ट्रेवल एजेंसी, एअरलाइंस, टूर ऑपरेटर्स, होटल, उद्योग एवं गाईड के रूप में रोजगार के व्यापक अवसर उपलब्ध हो रहे हैं।

पर्यटन क्षेत्र में घरेलू पर्यटकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। करीब 50 करोड़ पर्यटक घरेलू क्षेत्र के होते हैं। इस क्षेत्र में स्थापित क्षमता का तब ही उपयोग सुनिश्चित होता है। जब विदेशी पर्यटकों के आगमन की रफ्तार कम होने का मौसम होता है। अनुमानों के अनुसार पर्यटन क्षेत्र के भारत के सकल घरेलू उत्पाद के 5.92 प्रतिशत और कुल रोजगार के अवसरों (प्रत्यक्ष एवं परोक्ष) के 9.24 प्रतिशत (4 करोड़ 98 लाख) का सृजन होता है।

3.2 अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन[6]:

अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन, वह है जब लोग अपने क्षेत्र और देश से बाहर यात्रा के लिए जाते हैं और वहाँ पर्यटन संबंधित गतिविधियाँ संपन्न करते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक वे है जो एक साल से कम में किसी देश की यात्रा करते है जिनका प्रमुख उद्देश्य जैसे छुट्टियां मनाने, चिकित्सा के लिए, धार्मिक अवलोकन, पारिवारिक संबंधों तथा अन्तर्राष्ट्रीय खेल तथा अन्य छात्र कार्यक्रमों के लिए अन्य देशों में अन्तरण करते हैं

⇒ विदेशी छात्र एक स्थान पर एक साल से अधिक आते हं।

⇒ विदेशी जहाज के क्रू मेम्बर और वायुयान से किसी देश की सतह पर आते हैं।

⇒ अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों या निकायों के नियोक्ता, जा किसी अभियान पर एक साल के भीतर आते हैं।

⇒ विदेशी व्यापार यात्री जो किसी देश में एक साल से कम से कम समय में आते हैं।

⇒ वे देश क लोग जो किसी अन्य देश में निवास करते हैं और एक साल के भीतर लौट आते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों द्वारा किये जाने वाले व्यय से आय प्राप्त होती है जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय परिवहन तथा राष्ट्रीय स्तर के सामान ढोने वालों के भुगतान शामिल होते हैं। इसमें वो आय भी शामिल की जानी चाहिए जो उस देश में गन्तव्य स्थलों के लिए सेवाओं तथा वस्तुओं के अन्य प्रारम्भिक भुगतान किये जाते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन को दो रूपों में रखा गया है।

1 आने वाले पर्यटक (Inbound)

2 जाने वाले पर्यटक (Outbound)

(1) आने वाले पर्यटक

एक देश में प्रवेश कर रहे सभी अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक इसके अन्तर्गत आते हैं। इसके साथ ही ''निर्यात पर्यटन'' को भी इसमें शामिल किया जाता है।

आने वाले पर्यटकों के लाभ

1. अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा का तरीका पूरे सप्ताह पर ध्यान केन्द्रित नहीं करता बल्कि मौसमीसमस्याओं को भी निर्धारित करता है।
2. अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में विस्तार पूर्वक फैलाव उत्पन्न होता है और घरेलू क्षेत्र में होने वाले किसी भी बदलाव को न्यूनतम कर सकते है।
3. आने वाले पर्यटक एक नये तरीकों को खोलते है और पूरे विश्व में यात्रा के मिलियन संभावनाओं को प्रदान करता है।
4. अन्तर्राष्ट्रीय यात्री सामान्य तौर से उच्च आय प्राप्त करने वाले होते हैं और घरेलू पर्यटकों से संबंधित औसतन अधिक खर्च करते हैं, जिससे अधिक आय पर्यटन से जुड़े लोगों को प्राप्त होती है।

5. आने वाले पर्यटक से इतिहास तथा संस्कृति और वहाँ के लोगों से मिलने का अवसर प्राप्त होता है।

6. व्यापार के अवसर एक लम्बे समय तक प्राप्त होते है।

भारत में आने वाले विभिन्न वर्षों में अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों को निम्न तालिका द्वारा देखा जा सकता है।

तालिका संख्या4

वर्ष	विदेशी पर्यटकों की संख्या (मिलियन)	पूर्व वर्ष की तुलना में परिवर्तन
1997	5.50	9.3
1998	5.54	0.7
1999	5.83	5.3
2000	5.89	1.1
2001	5.44	-7.8
2002	5.16	-5.1
2003	6.71	30.1
2004	8.36	24.6
2005	9.95	19.0
2006	11.75	18.1
2007	13.26	12.8
2008	14.38	8.5
2009	14.37	-0.1
2010	17.85	24.2

स्त्रोत Indian tourism statistic 2010 at a Glance

निम्न तालिका में भारत में आये विदेशी पर्यटकों की संख्या तथा उनमें होने वाले परिवर्तन को दिखाया गया है। तालिका से स्पष्ट होता है कि विदेशी पर्यटक की संख्या में 2003 में सर्वाधिक 30.1 प्रतिशत का परिवर्तन हुआ है और वर्ष 2001, 2002, 2009 में क्रमशः 7.8, 5.1, 0.1 की ऋणात्मक वृद्धि देखी गयी है। अतः तालिका मे 1997 से 2009 तक विदेशी पर्यटकों की

संख्या में भारी उतारचढ़ाव आया ह। वर्ष 2010 में पर्यटकों की सं. 17.85 मिलियन की वृद्धि की संभावना दर्शायी गयी है।

भारत में आने वाले अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक विभिन्न देशों से भारत की यात्रा करते हैं। निम्न तालिका द्वारा प्रमुख दस देशों का अवलोकन कर सकते है। जहाँ से पर्यटक सर्वाधिक भारत आये

वरीयता क्रम	देश	अर्न्तराष्ट्रीय पर्यटक (मिलियन में)	प्रतिशत हिस्सा
1	फ्राँस	76.8	8.17
2	यू.एस.ए.	59.7	6.35
3	चीन	55.7	5.93
4	स्पेन	52.7	5.61
5	इटली	43.6	4.64
6	यू.के.	28.1	2.99
7	तुर्की	27.0	2.87
8	जर्मनी	26.9	2.86
9	मलेशिया	24.6	2.62
10	मैक्सिको	22.4	2.38
कुल दस देश		417.5	44.42

स्त्रोत Indian tourism statistic 2010 at a Glance

1. जाने वाले पर्यटक (Out bound) %

वे पर्यटक इस में रखे जाते हैं जो अपने देश से बाहर दूसरे देश में पर्यटन के लिए जाते हैं। हाल ही में फुरसत के क्षणों को बिताने के लिए जाने वालों में 72 प्रतिशत और व्यापार विशेष के लिए जाने वालों में 63 प्रतिशत भारत से गये। भारतीयों के लिए एशिया प्रसिद्ध मुख्य यात्रा का स्थल है अन्य क्षेत्र जैसे यूरोप की ओर आकर्षित होने वाले भारतीयों का प्रतिशत 18 है तथा व्यापार के लिए यात्रा करने वालों का प्रतिशत 14 है एवं प्रकृति

और वातावरण 62 प्रतिशत तथा कला एवं संस्कृति की ओर आकर्षित होने वालों का 53 प्रतिशत है। निल्सन के अनुसार भारत से जाने वाले यात्रियों का सामान्य यात्रा का स्थल सिंगापुर है जिसका प्रतिशत 24 है और दुबई, ऑस्ट्रेलिया और मलेशिया जाने वालों का प्रतिशत 17 है।

विभिन्न वर्षों में भारत से अन्य देशों की यात्रा पर जाने वाले पर्यटकों की संख्या को निम्न तालिका द्वारा देखा जा सकता हैः

तालिका संख्या5

वर्ष	Out bound list (मिलियन)	Percentage Change over the Year
1997	3.73	7.6
1998	3.81	2.3
1999	4.11	8.0
2000	4.42	7.3
2001	4.56	3.4
2002	4.94	8.2
2003	5.35	8.3
2004	6.21	16.1
2005	7.18	15.6
2006	8.34	16.1
2007	9.78	17.3
2008	10.87	11.1
2009	11.07	1.8
2010 (Provisional)	12.07	9.0

स्त्रोत : Indian tourism statistic 2010 at a Glance

तालिका में अन्य देश की यात्रा पर गये पर्यटकों को दिखाया गया है जिससे स्पष्ट है कि वर्ष 2004, 2005, 2006 तथा 2007 में पर्यटकों के जाने में सर्वाधिक परिवर्तन क्रमशः 16.1, 15.6, 16.1 तथा 17.3 प्रतिशत रहा है। जबकि 2008 और 2009 में प्रतिशत परिवर्तन में कमी क्रमशः 11.1 और 1.8

दिखाई गई है। वर्ष 2020 में भारत से जाने वाले पर्यटकों की संख्या 12.07 मिलियन का अनुमान लगाया गया है। इस पकार भारत से जाने पर्यटकों की संख्या 2004, 2005, 2006 व 2007 में सर्वाधिक रही है। भारत से जाने वाले पर्यटकों की संख्या में बढ़ोतरी देखी गयी।

3.2.1 अर्न्तराष्ट्रीय पर्यटन के मुख्य मुद्दे[8]:

अर्न्तराष्ट्रीय पर्यटन से विकास और वृद्धि के लिए असमानता चिंता का विषय है आर सामाजिक, आर्थिक तथा पर्यावरण लागत और लाभ पर्यटन के प्रमुख मुद्दे हैं। ये मुद्दे राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दोनों ही स्तर पर हैं।

पर्यटन एक वैश्विक उद्योग है जिसमें शताब्दी के अन्तिम 25 वर्षों से नियमित तरीके से वृद्धि हुई है, क्योंकि विकासशील देशों तथा उद्योग दोनों की यह समस्या है। इस के बावजूद पर्यटन उद्योग ने विश्व में उल्लेखनीय वृद्धि की है। सभी अर्न्तराष्ट्रीय यात्री 20 प्रतिशत मुख्य औद्योगिक देशों में केन्द्रित हैं और विश्व का 90 प्रतिशत यात्री बाजार विकसित देशों में है। पर्यटन की आर्थिक समृद्धि के लिए योजना के अनुसार चला जाये तो एक बहुत मजबूत आर्थिक परम्परा विकसित होगी। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप तथा उत्तरी अमेरिका महाद्वीप ने ट्रेवल को महत्व प्रदान करना आरम्भ कर दिया था। परन्तु पर्यटन की गैर योजनागत वृद्धि के परिणाम स्वरूप अत्यधिक प्रदूषण तथा शोर उत्पन्न हा गया। जबकि विकासशील देश घरेलू पर्यटन द्वारा कोई लाभ प्राप्त नहीं कर पाये तथा ना ही अन्तर्राष्ट्रीय घरेलू पर्यटन से कोई पर्याप्त आय ही प्राप्त कर सके और पीछे रह गये।

विकासशील देशों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन से विदेशी मुद्रा अर्जन पर ही ध्यान केन्द्रित किया गया। बिना आधारभूत सुविधाओं का विकास किये पर्यटन की वृद्धि प्राप्त नहीं की जा सकती है। ज्यादातर तीसरी दुनिया के देशों की यही समस्या रही है। उन्हें कृषि आधारित अर्थव्यवस्था से ऊँची

छलांग लगाकर मध्य अवस्था से निकलकर सेवा क्षेत्र में प्रवेश तेजी से करना होगा।

तीसरी दुनिया के देश अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन का विकास आर्थिक लाभ के दृष्टिकोण से करते हैं, जिसके फलस्वरूप रोजगार तथा आय का निर्माण होता है। साथ ही विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। पर्यटकों का बड़ी संख्या में आगमन तथा उससे प्राप्त होने वाला राजस्व तथा आय संतुलन आर्थिक रूप से दिखाई पड़ते हैं। साथ ही पश्चिम शहरी औद्योगीकरण दिखाई देता है।

पर्यटन का यह दावा है कि इससे गरीब देशों को आर्थिक दृष्टि से लाभ पहुँचा है, परन्तु इससे इन देशों में गरीब और अमीर के बीच की खाई और भी गहरी हुई है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद तीसरी दुनिया के देश पश्चिम के अमीर और औद्योगिकृत देशों पर अधिक निर्भर होते चले गये। भारतीय संसाधनों और श्रम बल का उपयोग निर्यात बाजार के लिए एवं वस्तुओं के उत्पादन के लिए किया जाने लगा ताकि भूमण्डलीकरण बाजार अर्थव्यवस्था का विकास हो सके।

इसके अलावा व्यापार का सन्तुलन पश्चिम की ओर होने से विदेशी मुद्रा का बहाव और पूँजी का हस्तांतरण गरीब देशों से अमीर देशों की ओर होने लगा। व्यापारिक घरानों, निर्मित माल ढोने वाली जहाजरानी कम्पनियों और अन्तर्राष्ट्रीय वाणिज्य को वित्त प्रदान करने वाले बैंकों पर पश्चिमी अमीर देशों का या तो स्वामित्व होता है या नियन्त्रण।

पर्यटन उद्योग की संरचना पूरी तरह से अन्तर्राष्ट्रीय है जिसमें संलग्न अधिकांश अधिसंरचना पर बहुराष्ट्रीय निगमों का स्वामित्व होता है। जैसे हिल्टन, होली डे इन, शेरेटन, हयात सभी अमेरिकी होटलो की श्रृंखला इसका उदाहरण है।

यह कहा जाता है कि पर्यटन से मेजबान देश को आर्थिक लाभ होता है परन्तु असल लाभ किसे होता है। मेजबान देशों में मुनाफे का कितना हिस्सा असल में जमा हो पाता है, जबकि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों, टूर ऑपरेटर और पहली दुनिया के देश अधिकांश आय को अपने पास खींच लेते हैं।

पर्यटन एक निर्यात है और अन्य निर्यातों की तरह निर्यातक देश इससे विदेशी मुद्रा अर्जित करता है। अतः जब कोई भ्रमण दल भारत आता है तो वह "भारत में छुट्टी" उत्पाद खरीदता है जैसेः आवास, भोजन, स्थानीय भ्रमण, मनोरंजन आदि। वे अपनी छुट्टी के दौरान जो खर्च करते हैं, उससे भारत की विदेशी आय में वृद्धि होती है। पर्यटकों को विभिन्न प्रकार की सुविधाऐं प्रदान करने में तीसरी दुनिया के देशों को काफी मात्रा में विदेशी मुद्रा खर्च करनी पड़ती है और इस बहाव को रिसाव के रूप में जाना जाता है। इससे निम्न मदों में रिसाव होता है।[9]

1. पर्यटन होटलों द्वारा सामानों और सेवाओं का आयात जैसेः भोजन, पेय, मशीनरी फर्नीचर आदि।
2. अन्तर्राष्ट्रीय प्रचार और विज्ञापन।
3. विदेशों में कार्यरत टूर ऑपरेटरों को दिया जाने वाला कमीशन।
4. विदेशो कार्मिकों को दिया जाने वाला वेतन।

आलोचकों का मानना है कि देश की अधिकांश जनसंख्या के लिए अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन से उन्हें एक धेले की कमाई न हो परन्तु इससे उत्पन्न मुद्रास्फीति की मार उन्हें अवश्य सहनी पड़ती है। यहाँ तक कि आम ज़रूरत की चीजें भी उनकी पहुँच स दूर चली जाती है। उन्हें शुद्ध पानी या बिजली की आपूर्ति की जाए या नहीं उनकी कर मुद्रा का उपयोग होटलों और रिसॉर्टों को रियायत देने के लिए अवश्य प्रदान किया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन से कुछ आर्थिक समस्याऐं उत्पन्न हो सकती हैं जिन्हें निम्न प्रकार देखा जा सकता है :

1. अर्न्तराष्ट्रीय पर्यटन से स्फीति की समस्या उत्पन्न होती है। ऐसा देखा गया है जहाँ पर्यटक ज्यादा आते हैं, भूमि, वस्तुओं की कीमतें बढ़ जाती हैं जिससे स्फीति की समस्या उत्पन्न होती है।
2. मेजबान देश की अर्थव्यवस्था में पर्यटन उद्योग योजना अनुरूप अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन विदेशी परिसम्पत्ति पर निर्भर है, वहीं माँग तथा पूर्ति में अनिश्चित उतारचढ़ाव रहते हैं।
3. विकासशील देशों के पर्यटन उद्योग में अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन का अधिक प्रभुत्व होता है इसमें किसी प्रकार की कमी होने पर भुगतान संतुलन में घाटा उत्पन्न हो सकता है।
4. अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन मौसमी रोजगार उत्पन्न करने में मुख्य आधार बना है तथा होटल एवं अन्य रोजगार उत्पन्न करने में सहायक है।
5. अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन क्षेत्रीय आर्थिक वृद्धि के लिए सम्भावनाऐं प्रदर्शित करता है और विकास को बढ़ाता है।

3.2.2 अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन को बढ़ावा देने वाल संगठन एवं संस्थाऐं[10]:

धीरेधीरे पर्यटन में अनेक संगठनों की स्थापना हुई। पर्यटन नीति निर्माण, योजना प्रोत्साहन और स्थल विकास, पर्यटकों के अधिकारों की रक्षा समझौते आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस प्रकार के संगठनों का जन्म पर्यटन सम्बन्धी जरूरतों से उत्पन्न हुआ। पर्यटन से विदेशी मुद्रा की आय होती है, रोजगार बढ़ते है। इन सबको तथा राष्ट्रीय हित और पर्यटन विकास को ध्यान में रखते हुए ही इन संगठनों की स्थापना की गई। यहाँ इनका संक्षिप्त उल्लेख किया जा सकता है।

1. विश्व पर्यटन संगठन (WTO) :

विश्व पयटन संगठन एक अर्न्तसरकारी निकाय है। इसकी स्थापना 1975 में की गई। 1949 में International Union of official Travel Organisation (IUOTO) की स्थापना हुई थी। 1975 में उसे ही विश्व पर्यटन संगठन में परिणित कर दिया गया। यह संयुक्त राष्ट्र का एक विशेषीकृत अभिकरण है। 113 देश इसके

सदस्य हैं और भ्रमण और पर्यटन उद्योग (अंतर्राष्ट्रीय और प्रांतीय पर्यटन संगठन) से जुड़े लगभग 170 सदस्य इसमें शामिल हैं, इसका मुख्यालय मेड्रिड (स्पेन) में स्थित है।

इस संगठन का आधारभूत लक्ष्य निम्नलिखित है

''पर्यटन का विकास'' आर्थिक विकास, अंतर्राष्ट्रीय तालमेल, शांति, समृद्धि को मद्देनज़र रखते हुए एक दूसरे का आदर मानवाधिकारों और मौलिक स्वतंत्रता के प्रति सम्मान का भाव रखना तथा कहीं भी प्रजाति, लिंग, भाषा या धर्म के नाम पर भेदभाव न हो। संगठन इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए उचित कदम उठायेगा। इस उद्देश्य के लिए कदम उठाते समय, संगठन, विकासशील देशों में विकास कर रहे पर्यटन का विशेष ख्याल रखेगा।

WTO के कार्य

i) तकनीकी सहयोगः

UNDP (संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम) के एक कार्यान्वयन अभिकरण के रूप में विश्व पर्यटन संगठन के मामले में सरकारों को पर्यटन के लम्बी अवधि के विकास कार्यों, निवेश जरूरतों और विपणन तथा प्रोत्साहन के लिए तकनीकी स्थानांतरण संबधी मुद्दों पर सहयोग और परामर्श प्रदान करता है।

ii) शिक्षण और प्रशिक्षणः

भ्रमण और पर्यटन उद्योग के लिए शिक्षण और प्रशिक्षण अतिआवश्यक है। WTO अनेक प्रकार के कार्यक्रम चलाता है। इसके द्वारा पर्यटन संबंधी शिक्षण केन्द्रों की स्थापना की गयी है।

iii) पर्यावरण और योजना :

पर्यटन विकास को दीर्घजीवी बनाने के लिए WTO पर्यावरण और योजना पर बल देता है। यह रियो भू सम्मेलन और कनाड़ा में आयोजित भू मण्डल गोष्ठियों जैसे आयोजनों में शामिल होता है।

iv) सरलीकरण और उदारीकरण :

विश्वपर्यटन संगठन, पर्यटन के मार्ग में आने वाली सभी प्रकार की बाधाओं को दूर करता है। इस क्षेत्र में यह संगठन कई प्रकार के कार्य करता है। मसलन अपाहिजों के लिए पर्यटन सुलभ करना, स्वास्थ्य और सुरक्षा मुद्दों पर सहायता, गैट प्रक्रिया में शामिल होना आदि।

v) विपणन और प्रोत्साहन :

WTO लगभग 165 देशों की भ्रमण और पर्यटन प्रवृत्तियों पर लगातार नजर रखता है और उसका विश्लेषण करता है। इसके ज़रिये उसे योजना और विपणन के आँकड़े प्राप्त होते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय वायु परिवहन संगठन (IATA) :

IATA एक सरकारी संगठन है और लगभग सभी वायु वाहक इसके सदस्य है। इसके सक्रिय सदस्य अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र को देखते हैं जबकि सहयोगी सदस्य घरेलू उड़ान से संबद्ध होते हैं IATA की स्थापना 1945 में हुई थी। उसी समय से इसकी गतिविधियाँ लगातार बढ़ती गई और आज इसकी मुख्य सेवाऐं

1. सभी वायुसेवाओं के लिए अंतर्राष्ट्रीय मार्गों पर यातायात टिकट का निर्धारण।
2. अंतर्राष्ट्रीय उड़ानों के लिए समय तालिका नियोजन।
3. सामान जांच आरक्षण आदि जैसे कुछ सेवाओं का मानवीकरण और संयोजन आदि है।

इसक अतिरिक्त कुछ अन्य संगठन जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन को बढ़ाने के लिए सक्रिय है इस प्रकार है :

1. अंतर्राष्ट्रीय टूर ऑपरेटर संघ (IFTO) राष्ट्रीय टूर आपरेटर संगठनों का प्रतिनिधित्व करता है।
2. अंतर्राष्ट्रीय युवा हॉस्टल संघ (IYHF) युवा होस्टल संगठनों का प्रतिनिधित्व करता है।
3. अंतर्राष्ट्रीय होटल संगठन (IHA) होटल और रेस्टरां उद्योग का प्रतिनिधित्व करता है।
4. अंतर्राष्ट्रीय टूर मैनेजर संगठन (IATM)
5. प्रशांत एशिया यात्रा संगठन (PATA) आदि है।

3.2.3. अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन का महत्व[11]:

पर्यटन उद्योग आज अरबों रूपये का कारोबार करने वाला ऐसा विश्व उद्योग बन गया है जिसमें सालाना 10 से 15 प्रतिशत की वृद्धि होती है। श्रीलंका, स्विट्जरलैण्ड, सिंगापुर, इंडोनशिया, मॉरीशस, थाईलैण्ड, मलेशिया, नेपाल आदि दर्जनों ऐसे देश हैं, जिनकी अर्थव्यवस्था केवल और केवल पर्यटकों की वहाँ पर आवक पर ही निर्भर करतो है। बहुत से देशों में तो वीजा लेने की खानापूर्ति एयरपोर्ट पर पहुँच कर ही पूरी करने की प्रकृति है। ''वीजा ऑन अराइवल'' के तहत मुक्त आकाश नीति आज विश्व के लगभग हर उस देश ने अपनानी प्रारम्भ कर दी है, जिसने पर्यटन के आर्थिक महत्व को समझ लिया है। पर्यटन क आर्थिक महत्व को समझते हुऐ पर्यटकों के भ्रमण और उनसे आमदनी के आँकड़ों का संकलन 1950 से विधिवत प्रारम्भ हुआ माना जाता है। 1950 में 2 करोड़ 52 लाख 80 हजार पर्यटक पर खर्च किया। विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार 1995 में 56 करोड़ 70 लाख के माध्यम से 372.6 अरब डॉलर की आय अर्जित की गयी। इसके बाद तो विश्व पर्यटन में और अधिक तेजी से विकास हुआ। विश्व पर्यटन तथा विश्व के 10.6 प्रतिशत श्रमिक बल को रोजगार उपलब्ध कराता है। यह विश्व के कुल

घरेलू उत्पाद में 10.2 प्रतिशत का योगदान ही नहीं करता बल्कि 655 बिलियन डॉलर का राजस्व पैदा करने वाला विश्व का सबसे बड़ा निर्यात उद्योग बन गया है। विश्व पूँजी निवेश का 10.7 प्रतिशत तथा सभी सरकारी खर्चों का 6.9 प्रतिशत पर्यटन पर खर्च किया जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का 30 प्रतिशत तथा विश्व के सकल घरेलू उत्पाद का 12 प्रतिशत पर्यटन के खाते में आता है।

संदर्भ सूची

1. गोयल, राजेश, भारतीय पर्यटन उद्योग, वंदना पब्लिकेशन, नई दिल्ली, **2011** पृष्ठ **10**
2. Negi, JMS,Tourism Hoteliering: A world–wide Industry, Gitanjali Publishing House New Delhi, 1988 पृष्ठ 374-395
3. तदैव पृष्ठ 374-395
4- Raj, Lajipathi H, Development of Tourism in India, Published by Printwell Jaipu, 1993 P-176
5. चौधरी, मंजुला, योजना मासिक पत्रिका, पर्यटन क्षेत्र में मानव संसाधन विकास, मई **2010** पृष्ठ -07
6. Malra, Renu, Tourism, Principles, Practicals, councept and philosophic Anmol Publication, New Delhi, 2013 पृष्ठ -48-50
7. तदैव
8. घर, प्रेमनाथ, International Tourism; Energing Challenges and Eutere Baspects, Kanishka Publication, New Delhi, 2000 पृष्ठ 6-10
9. इग्नु, टीएस1, पर्यटन : नियोजन और नीति, **2013** पृष्ठ **45–48**
10. इग्नु टीएस1, पृष्ठ **24–26**
11. व्यास, राजेश कुमार, पर्यटन उद्भव एवं विकास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, 4th Edition, **2013** पृष्ठ -115

अध्याय– चतुर्थ

पर्यटन के प्रकार एवं स्वरुप

4.1 पर्यटन के प्रकार

4.2 पर्यटन के स्वरुप

अध्याय–चतुर्थ
पर्यटन के प्रकार एवं स्वरुप

आजकल काफी लोग पर्यटन के लिए बाहर निकलते हैं। उन सभी के उद्देश्य भिन्नभिन्न होते हैं। पर्यटक इन उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास करता हैं।

4.1 पर्यटन के प्रकारः

4.1.1 उद्देश्यों के आधार पर पर्यटन के प्रकार निम्न हैं[1]

(1) समय अवधि के आधार परः

समय अवधि के आधार पर पर्यटन को तीन भागों में बाँटा जा सकता है।

(अ) दीर्घकालीन पर्यटनः

जब यात्रा का कार्यक्रम कई सप्ताह अथवा कई माह के लिए बनाया जाता है तो इस प्रकार के पर्यटन को दीर्घकालीन पर्यटन कहा जाता है। दीर्घकालीन यात्रा कई राष्ट्रों में की जा सकती है। परंतु यात्रा व ठहरने की अवधि किसी भो स्थान या राष्ट्र में कम से कम 24 घण्टे होनी चाहिए। प्रायः स्वास्थ्य लाभ आराम की प्राप्ति, व्यावसायिक उद्देश्य अथवा अन्वेषण हेतु दीर्घकालीन पर्यटन को अपनाया जाता है।

(ब) अल्पकालीन पर्यटनः

जब पर्यटन की अवधि 24 घण्टे से लेकर अधिकतम 7 दिन तक की होती है तो इस प्रकार के पर्यटन को अल्पकालीन पर्यटन कहा जाता है। इस प्रकार के पर्यटन का उपयोग प्रायः उन पर्यटकों द्वारा अधिक किया जाता है जो लम्बी छुट्टियाँ नहीं ले पाते या पर्यटन का उद्देश्य सीमित अवधि वाला होता है अधिकतर पर्यटक दूसरी श्रेणी के होते हैं। धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पर्यटन, सम्मेलन एवं

सभाऐं, मनोरंजन एवं छुट्टियाँ का सदुपयोग इत्यादि वे उद्देश्य हैं जिन की प्राप्ति के लिए प्रायः अल्पकालीन पर्यटन का उपयोग किया जाता है।

(2) मौसमी प्रकृति के आधार पर पर्यटनः

पर्यटकों द्वारा मौसम प्रकृति के आधार पर भी पर्यटन किया जाता है जैसेः गर्मी में पर्यटक ठण्डें प्रदेशों में जाना पसंद करते हैं। इसके अतिरिक्त मौसमी शिकार, मछली पकड़ना एवं खेलकूद आदि ऐसी ही घटनाऐं है। इसके अन्य रुप भी हो सकते हैं जैसेः धार्मिक मेले एवं उत्सव, सांस्कृतिक उत्सव, व्यापार मेले, आदि भी एक मौसम विशेष में आगमन हेतु पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। मौसम की प्रकृति के आधार पर तीन भागों में बाँटा जा सकता हैः

(i) शीतकालीन पर्यटनः

दिसम्बर से मार्च तक जो पर्यटन किया जाता है उसे शीतकालीन पर्यटन कहते हैं।

(ii) ग्रीष्मकालीन पर्यटनः

इस प्रकार का पर्यटन प्रायः अप्रैल माह से अगस्त तक चलता है। ग्रीष्मकालीन पर्यटन में मैदानी क्षेत्रों में रहने वाले लोग पर्वतीय या समुद्री स्थानों पर चले जाते हैं तथा वहाँ पर सुहाने एवं गुनगुने मौसम का आनंद उठाते हैं।

(iii) परिस्थितिजन्य पर्यटनः

ये स्थानीय पर्यटन है जो परम्परागत उत्सवों को सम्पन्न करके पयटकों को आकर्षित करने के लिए होता है। ये उत्सव धार्मिक, सांस्कृतिक, खेलकूद संबंधी होते हैं।

4.1.2 यात्रियों की संख्या पर आधारित पर्यटनः

(अ) निजी पर्यटन को स्वतंत्र पर्यटन भी कहा जाता है। जब कोई व्यक्ति किसी धर्म स्थल या किसी अन्य स्थल की यात्रा करने के लिए समय निर्धारित करता है व कार्यक्रम बनाता है तथा निर्धारित किए गए समय, स्थान पर कार्यक्रम में अपने मन के अनुसार परिवर्तन करता है तो उसे निजी पर्यटन कहा जाता हैं। यात्री अपने परिवार के साथ यात्रा करते हैं। ऐसे पर्यटकों को रुकने के स्थल की व्यवस्था से कोई नाता नहीं रहता है। यात्री स्वयं सीधे माल वाहक, होटल, ट्रेवल के द्वारा जाने के लिए साधन, रहने के लिए आवास अथवा अन्य सुविधाओं की व्यवस्था कर सकते हैं।

(ब) सामूहिक पर्यटनः

सामूहिक पर्यटन को सम्मिलित या संगठित पर्यटन भी कहा जा सकता है। इस यात्रा के अंतर्गत वे यात्री सम्मिलित होते हैं जो सामूहिक रुप से किसी निर्धारित एक स्थान पर खर्च का भुगतान करते हैं। इस भुगतान में सभी खर्चे शामिल होते हैं। इन भुगतानों में से यात्रा भाड़ा, होटल खर्च आदि यदि एक यात्री अपने खर्चे को उस में से अलग करना चाहे तो अलग नहीं कर सकता। सामूहिक पर्यटक एक समूह के सदस्य के रुप में यात्रा निर्धारित समयानुसार करते हैं।

सामूहिक पर्यटन के लिए ट्रेवल कम्पनियाँ पहले से निर्धारित व्यवस्था के तहत किसी संपूर्ण समूह को एक विशिष्ट स्थान हेतु किए गए पूर्व भुगतान के बदले यात्रा में सम्मिलित होने की स्चना देती है यात्रियों को स्वयं कुछ करना नहीं पड़ता क्योंकि सारी जिम्मेदारीयाँ इन कम्पनियों के ऊपर आधारित होती हैं।[2]

4.2 पर्यटन के स्वरुपः

पर्यटन को कई रुपों में परिभाषित किया गया है। यहाँ एक बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि पर्यटक घूमने फिरने, पर्यटक उत्पादों, सेवाओं आर पर्यटन स्थलों का आनंद उठाने के बाद हमेशा घर लौटता है। पर्यटन

के स्वरुप में भी अंतर होता है। एक लम्बे समय में पर्यटन की अनेक अवधारणाऐं सामने आई हैं जिसे यहाँ स्पष्ट किया जा सकता है।

1. धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन[3]:

भारत भौगोलिक तथा सांस्कृतिक एवं धार्मिक दृष्टिकोण से विविधता वाला देश है परन्तु धार्मिक तीर्थ स्थलों का यहाँ अपना महत्व है। राष्ट्र में विभिन्न धर्मों का समावेश है तथा विभिन्न धर्मों के लोग अपनेअपने धार्मिक स्थलों की ओर आकर्षित होते हैं। जैसेः बौद्ध, सारनाथ, मुस्लिम मक्का मदीना आदि तीर्थ स्थलों पर जाते हैं, परन्तु भारत में हिन्दू धर्म का विशेष महत्व है। इसके मानने वालों की भी प्रधानता है। इसी कारण देश में हिन्दू धर्म के धार्मिक स्थल भी अधिक है। जैसेः हरिद्वार, वाराणसी, मथुरा, अयोध्या आदि। हिन्दू धर्म से तीन नये धर्मों का जन्म हुआ बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिक्ख धर्म। इसके अलावा मुस्लिम, इसाई का भी महत्व है।

भारतीय पर्यटन स्थलों पर आकर विदेशी पर्यटक बहुत प्रभावित होते हैं उनके हृदय पर संस्कृति सभ्यता की अनूठी छाप पड़ती है। कह सकते ह कि भारत में पर्यटन से सांस्कृतिक सम्पर्क किसी न किसी पहलू पर विद्यमान होता है जो विदेशीयों को भारतीय संस्कृति की जानकारी करना चाहता है। यात्रा में उन्ह भारतीय जीवन का देखना चाहिए। भारत की सांस्कृतिक मन्दिर, धार्मिक पर्यटन का चित्र मन्दिर के दर्शन कर यहॉ विदेशी पर्यटक भारत की सांस्कृतिक सम्पदा तथा आधुनिकता के विकास से स्वयं साक्षात्कार कर सकते है।[1]

सन् 1960 से सन् 1980 तक हमारे देश में विदेशी पर्यटक एवं अनुसंधानकर्ता हिन्दू धर्म की पुरातन जीवन शैली, ''सेवा भावना की परोपकारी छवि एवं मेहमान ही भगवान है'' पर अनुसंधान करने भारत आते रहे हैं। हिन्दू धर्म के रहस्यों को जानने के लिए पूर्व एवं पश्चिम के अनेकानेक पर्यटक, विद्वान एवं बुद्धिजीवी भारत आते रहे है इनका एकमात्र उद्द्धेश्य

हिन्दू धर्म का भूत, भविष्य एवं वर्तमान जानने के बारे में अनेक प्रकार के वार्तालाप, संभाषण एवं तथ्यपरक जानकारी प्राप्त करना होता था विश्व में हिन्दू सभ्यता एवं हिन्दू धर्म ही ऐसा है जो धरती पर चिरकाल से जीवित है एवं फलफूल रहा है। इस के प्रकार, कारण एवं जीवित रहने की इतनी लम्बी अवधि से कई विद्वान अत्यन्त आश्चर्य चकित हैं। यह हिन्दू धर्म की लोच एवं सहिष्णुता का महत्वपूर्ण परिचायक है। हिन्दू धर्म की शिक्षा, दीक्षा के अनेक पर्यटन स्थल जैसे काशी, इलाहाबाद, मथुरा आदि ऐसे स्थल हैं जहां हिन्दू धर्म एवं संस्कृति की गहरी छाप पड़ी है।[2]

इसी प्रकार भारत में हिन्दू धर्म से सम्बन्धित अनेक धार्मिक स्थल ह जो हिन्दू धर्म से सम्बन्धित हैं ये देश की लम्बाई चौड़ाई में सर्वत्र व्याप्त है। ऐसा माना जाता है कि मोक्ष की प्राप्ति के लिए चारधाम, बद्रीनाथ, द्वारका, रामेश्वरम् और जगन्नाथपुरी जो क्रमशः उत्तर, पश्चिम, दक्षिण और पूर्व में स्थित ह कि यात्रा करना एक हिन्दू धर्म को मानने वाले को अवश्य करनी चाहिए। इसलिए हिन्दू धम में लोग पर्यटन की अपेक्षा तीर्थों के दर्शन आर मोक्ष प्राप्ति के लिए करते ह।[3]

भारत विश्व के कई लोकप्रिय धर्मों का उत्पत्ति स्थल रहा है। जिस में हिन्दू, बौद्ध, जैन व आज का इस्लाम धर्म, ईसाई, सिक्ख आदि हमारे धर्म निरपेक्ष देश में एक साथ मिलकर रहते हैं इस वर्ग में तीर्थ काफी संख्या में है जिन्हें निम्नांकित भागों में वर्गीकृत किया जाता है[4]।

1. अमेरीकन व यूरोपियन, हिन्दु, बौद्ध, इसाई व सिक्ख धर्म में कतिपय पहलुओं में रूचि रखते हैं।
2. हिन्दु, मुस्लिम, जैन, बौद्ध, इसाई व सिक्ख व दूसरे साम्प्रदाय व धर्मो के अनुयायिया को पवित्र स्थानों की अपनी जिन्दगी मे एक बार अवश्य यात्रा करनी चाहिए।
3. निरन्तर यात्रा करने वाले तथा भारत में निवासित व्यक्ति व सैलानी विश्व के विभिन्न भागों में है। ये व्यक्ति अपनी प्रचीन पीढ़ियों के धर्म स्थानों के सांस्कृतिक क्षेत्रों की खोज करने की जिज्ञासा रखते हैं।

4. जापान, थाईलैण्ड, लंका आदि से बढ़ते हुए असंख्य सैलानी जो कि बौद्ध धर्म से सम्बन्धित केन्द्रों की यात्रा करना चाहते हैं।

स्पष्टतः तीर्थ यात्री परिवहन उद्योगों को अत्यधिक प्रभावित करते हैं यह एक सामान्य बात बन चुकी है कि यात्री अपनी व्यवसायिक यात्रा में पर्यटन स्थल व पवित्र स्थानों की यात्रा भी शामिल करते हैं जिस वजह से अन्य देशो से भारत में यात्री लगातार आते रहते हैं। कुछ वर्ष पूर्व सरकार भारतीय पंचवर्षीय योजनाओं के तहत सांस्कृतिक पर्यटन को विशेष महत्व दिया गया तथा यह विचार भी प्रस्तुत किया गया कि कुछ चुने हुए पुरातत्व के चारों ओर कतिपय इस प्रकार के मास्टर प्लान बनाये जायें जिससे उनके पर्यावरण व प्राकृतिक सौन्दर्य की बनावट को सुरक्षित रखा जा सके। कुछ वर्ष पूर्व भारत ने यूनेस्को की सहयता से सांस्कृतिक पर्यटन क्षेत्र में कुछ योजनाओ को तैयार भी किया गया है। इन योजनाओ में विभिन्न सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों को शामिल किया गया है जैसे एलीफेण्टा, अजन्ता व एलोरा की गुफायें, बौद्ध धर्म के केन्द्र सारनाथ, गया, नालन्दा, राजगिरी, कुशीनगर, श्रीबस्ती, सांची तथा बीजपुर एटोला, बादामी पटाडरवाल, हैप्पी, खुजराहो, भुवनेश्वर, पुरी व कोणार्क आदि है।[5]

2. ऐतिहासिक पर्यटन[6]

पर्यटन क्षेत्र में ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी से तात्पर्य है कि हम अधिकाधिक अपने इतिहास को जान क्योंकि इस के द्वारा अपने भविष्य का भी निर्धारण होता है। कहा भी गया है कि "जो व्यक्ति" देश या अपने बीते दिनों से शिक्षा नहीं लेता, वर्तमान एवं भविष्य उस का सम्मान नहीं करता, कभी उन्नती नहीं कर सकता उसका निरन्तर ह्रास ही होता है, अवनति की ओर गतिमान होता है अतः उन्नती के लिए परम आवश्यक है कि अतीत का अध्ययन किया जाए। उससे लाभान्वित हुआ जाए। प्राचीन समय में समयसमय पर ऐसे अनेक स्मारक बनवाये गये थे जिनसे भारत के समाज, संस्कृति तथा इतिहास को सम्पन्नता प्रदान की जा सके। हिन्दू, बौद्ध, जैन, मुस्लिम एवं

अन्य प्राचीन भारतीय धार्मिक सम्प्रदायों के अन्तर्गत ऐसे कई कलात्मक स्मारक निर्मित किए गए जिनसे तत्कालीन समाज की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त होती है, ये स्मारक न सिर्फ ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अमूल्य है बल्कि इनके द्वारा देशविदेश में भारतीय संस्कृति के लोकप्रियता और गौरवपूर्ण अतीत की उद्घोषणा भी होती है। ये स्मारक भारत के विविध सामाजिक एवं धार्मिक संस्कृतियों को सुरक्षित रखे हुये है। इन स्मारकों में विभिन्न तरह के भवन, दुर्ग, मन्दिर, स्तूप, विहार, गुफायें इत्यादि विशेष उल्लेखनीय ह। साथ ही प्राचीन भारत में अलगअलग धार्मिक सम्प्रदायों से जुड़े मूर्तियों एवं प्रतिमाऐं भी निर्मित की जाती रही हैं जिनमें उन्नत शक्ति, परम सत्य और लोकोपकार के सन्देश मिले है। सारनाथ, नालन्दा, कौशाम्बी, हस्तिनापुर, पाटिलीपुत्र इत्यादि ऐतिहासिक स्थलों की पुरातात्विक खुदाई से हमारे देश के अतीत काल पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। अतः स्पष्ट है कि ऐतिहासिक पर्यटन के लिए पर्यटकों जिनमें देशी व विदेशीयों के द्वारा यात्रा की जाती है अतः ऐतिहासिक पर्यटन का विशेष महत्व है।

3. पारिस्थितिकीय पर्यटन[7]:

विश्व के अनेक भागों में प्राकृतिक रूप से अनेक महत्वपूर्ण वन एवं बियाबान ह। ये विविध प्रकार से प्राकृतिक सौन्दर्य एवं पर्यावरण पर्यटन के लिए बेजाड़ सौन्दर्य स्थल है। इनका उपयाग कुछ देशों के पर्यावरण पर्यटन के रूप में विश्वभर के पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए किया जाता है। इससे प्रेरित होकर कई देश तरह तरह से वन एवं बियाबानों का रख रखाव कर उनका सदुपयोग पर्यावरण पयटन को बढ़ाने में कर रहे है। अफ्रोका महाद्वोप के कुछ देशों में पर्यावरण पर्यटन क्षेत्र व्यापक रूप से बढ़ गया है जो उनकी अर्थव्यवस्था का आधार बनता जा रहा है। पर्यावरण पर्यटन एक विशाल अर्न्तराष्ट्रीय उद्योग के रूप में लोकप्रिय हो गया है

1. पर्यावरण पर्यटन में विशाल घने वनों एवं बियाबानों का उपयोग पर्यटकों के मनोरंजन के लिए किया जाता है।

2. विशाल चारागाह एवं घास के मैदानों का उपयोग अन्वेषण यात्राओं के लिए किया जाता है।
3. विशाल चट्टानों, हरियाली से आच्छादित मैदानों तथा नदियों के स्थलों व किनारों को रात्रि शिविर या दिवस शिविर के उपयोग किया जाता है।
4. अति महत्वपूर्ण वन क्षेत्र एवं अति महत्वपूर्ण पक्षी क्षेत्रों को संरक्षण देकर उनका उपयोग पर्यटकों के मनोरंजन के लिए करना चाहिये। विश्व के अनेक विद्वानों, पर्यावरण विशेषज्ञों एवं योजनाकारों की नजर में पर्यावरण पर्यटन संरक्षण एवं विकास के मार्ग में एक ऐसा हथियार है जो सम्पन्नता, मनोरंजन एवं आर्थिक प्रगति के मार्ग को खोल देता है।

पिछले दो दशकों में पर्यावरण का बड़ी तेजी के साथ विकास हुआ है। यह पर्यटकों के बीच लोकप्रिय होता जा रहा है। पर्यावरणीय पर्यटन स्थानीय लोगों के लिए सामाजिक आर्थिक विकास का एक प्रमुख अस्त्र है। अतः आसपास के संरक्षित वन, बियाबान एवं प्राकृतिक भूमि का उपयोग इस प्रकार सकारात्मक लाभ स्थानीय आबादो को मिलते है। पहला यह कि इस से अच्छी आय प्राप्त होती है जिसका एक भाग सरकारी खजाने में तथा दूसरा भाग प्राकृतिक स्थलों के रख रखाव, प्रबन्धन आदि में काम में लाया जा सकता है।

1998 ई. में United Nation Economic and Social Council (UNESCO) ने संयुक्त राष्ट्र संघ सामान्य सभा के सदस्य देशों को वर्ष 2002 को अन्तर्राष्ट्रीय ईको पर्यटन वर्ष के रूप में प्रारूपित करने का सुझाव दिया यह भी कहा गया कि “International year of mountain” की भांति प्रचारित और प्रसारित किया जाये। विश्व पर्यटन संगठन (WTO) के सतत् विकास सम्बन्धी आयोग (CSD) तथा अन्य संस्थाओं को भी वर्ष 2002 को अन्तर्राष्ट्रीय ईको पर्यटन वर्ष के रूप में क्रियान्वित करने का सुझाव दिया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय ईको पर्यटन वर्ष 2002 विश्व स्तर पर ईको पर्यटन से प्राप्त अनुभवों का अवलोकन और मूल्यांकन करने के लिए विश्व समुदाय को अवसर प्रदान करेगा। विश्व पर्यटन संगठन और संयुक्त राष्ट्रों का पर्यावरण कार्यक्रम अन्तर्राष्ट्रीय ईको पर्यटन वर्ष 2002 के दौरान, ईको पर्यटन के क्षेत्र में निम्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए कार्य करेगें।[8]

1. सतत् विकास और जैव विविधता संरक्षण में ईको पर्यटन के योगदान में कैसे वृद्धि की जा सकती है इस सम्बन्ध में विश्व स्तरीय चर्चा के द्वार खोलना।
2. ईको पर्यटन के सम्बन्ध में किये गये सतत् नियोजन, ईको पर्यटन के सतत् विकास, ईको पर्यटन के प्रबन्ध और विपणन के क्षेत्र में किये जा रहे उत्कृष्ट प्रयासों और इस से प्राप्त अनुभवों के सम्बन्ध में विश्व स्तर पर सूचनाओं का प्रसार करना।
3. ईको पर्यटन से प्राप्त होने वाले सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय लाभों की आधुनिकतम स्थिति और इस से सम्बन्धित प्रभावों का प्रचार प्रसार करना।
4. सतत् विकास और प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक संसाधनो के यन्त्र के रूप में ईको पर्यटन के प्रभावी प्रयोग के लिए सरकारों, निजी क्षेत्रों और गैर सरकारी संगठनों की क्षमता बढ़ाने को दिशा में कार्य करना।
5. विश्वस्तर पर ईको पर्यटन के प्रबन्ध और सतत् विकास के वितरण के विचार से अन्तर्राष्ट्रीय और आन्तरिक सहयोग पाने के लिए नये क्षेत्रों को परिभाषित करना।

4. पर्वतीय पर्यटन[8]

पर्वतीय पर्यटन, पर्यटकों को अपनी ओर सहज की आकर्षित करता रहा है। तेजी से बदल रही परिस्थितियों में पहाड़ी इलाकों में पर्यटन शायद सब

से तेजी से सम्पूर्ण विकास क्रिया को प्रभावित कर रहा है। भारत में पर्वतीय पर्यटन की संभावना बहुत अधिक है क्योंकि यहां जम्मूकश्मीर, हिमाचल प्रदेश तथा उत्तराखंड आदि इलाकों में प्राकृतिक सौन्दर्य देखने लायक है। इन क्षेत्रों में पर्यटन के लिए मूलभूत सुविधाओं का विकास कर पर्वतीय पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है।

ब्रह्मपुत्र एवं सिन्धु घाटियों के बीच स्थित एवं लद्दाख से अरूणाचल तक फैली हुई हिमालय की 2500 किमी लम्बी ऊँची पर्वत श्रृखंलाऐं विश्व पर्यटन के मानचित्र में एक मुख्य वर्णनीय स्थान रखती है। इस क्षेत्र की हिम आच्छादित सुरम्य पहाड़िया दर्शकों को अपने जादुई आकर्षण से मंत्रमुग्ध कर देती है। आज का पर्यटक मौजमस्ती और पहाड़ों पर साहसिक खेलों में रूचि लेता है इसके अनेक रूप है

1. पर्वतारोहण[9]

इस खेल में पर्वत के अति दुर्गम स्थल पर चढ़ाई करके निर्देशित स्थान तक पहुॅचन के प्रयास किये जाते है। गढ़वाल एवं कुमाऊँ क्षेत्र में इस साहसिक खेल की असीमित सम्भावनाऐं हैं। भारत का पर्वतारोहण अभियान सबसे पहले 1951 में शुरू हुआ सन् 1993 में एवरेस्ट पर्वत पर चढ़नें का प्रयास किया गया तथा गढ़वाली बछेन्द्रीपाल प्रथम भारतीय महिला पर्वतारोही बनने का गौरव प्राप्त किया।

पर्वतारोहण एक रोमांचकारी एवं साहसपूर्ण क्रिया बन जाने के फलस्वरूप उत्तरकाशी में हिमालय पर्वतारोहण स्टेशन की स्थापना की गयी। यह संस्थान पवतारोहण के कई पहलुओं में प्रशिक्षण देने के लिए अतिउत्तम कार्य कर रहा है। इसके तहत ऊँचाई पर चढने के प्रशिक्षण, शारीरिक बनावट, पर्वतारोहण का इतिहास, पर्वतीय जीवजन्तु पर्वतारोहण की विभिन्न प्रणालियां एवं प्रवृत्तियां प्रचलित है, इसके लिए यह संस्थान प्रशिक्षण भी उपलब्ध करवाता है।

2. पैराग्लाईडिंग एवं हैंग ग्लाईडिंग

यह नभ में पक्षियों के जैसा उड़ने एवं विचरण करने का एक बेहतरीन खेल है। पैरा ग्लाइडिंग के लिए इस्तेमाल किये जाने वाले एयरो फाइल डेन हैंग ग्लाइडिंग साहसिक लोगों के बीच अधिक लोकप्रिय होती जा रही है। जब हैंग ग्लाइडिंग केवल प्रतियोगी स्पर्द्धात्मक तक सीमित है। इन साहसिक पर्यटकों को उत्साहित करने के लिए इन खेलों का आयोजन अवकाश के दिनों में आबादी क्षेत्रों में किया जाता है।

3. स्कीइंग

सबसे पुरातन व प्रचलित क्रीड़ा स्कीइंग है। स्कीइंग होने की सम्भावनाओं को ध्यान में रखते हुए गढ़वाल क्षेत्र में औली रिजोर्ट में अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी के साथसाथ अनुभवी प्रशिक्षण भी उपलब्ध है। औली में चियर लिफ्ट, आरामदेह लकड़ी के केबिन और रेस्तरां है। हिमालय स्कीइंग गत कुछ वर्षों से लोगों को अपनी और आकर्षित करने मे सफल रहा है तथा इस साहसिक खेल की ओर रूचि बढ़ती जा रही है। स्कीइंग का आनन्द कार द्वारा कई हजार फुट लम्बे बर्फ के ढलानों पर लम्बी दौड़ का आनन्द लिया जा सकता है।

4. ट्रेकिंग

पहाड़ी क्षेत्रों में घूमने का सर्वोत्तम एवं लुभावना तरीका ट्रैकिंग या पैदल यात्रा करना है। पैदल यात्रा करने वाले सैलानियों के लिए समस्त हिमालय क्षेत्र स्वर्गमय है। ट्रेकिंग एक कम खर्च करने वाली साहसिक गतिविधि है। इसमें भारीभरकम उपकरणों की जरूरत नहीं होती है यदि आवश्यकता है तो बस कुछ दूर तक चलनेबढ़ने तथा उतरने की क्षमता और प्रकृति का आनन्द लेने की ट्रैकिंग अकेले या समूह मे की जा सकती हैं। ट्रैकिंग करने वाला व्यक्ति अपनी इच्छानुसार किसी भी समय किसी के साथ और किसी भी स्थल से अपनी सुविधानुसार शुरू की जा सकती है। सम्पूर्ण हिमालय में लोग ट्रैकिंग के प्रति दिनप्रतिदिन आकर्षित हो रहे है। इस पकार पर्वतीय पर्यटन

अपने विभिन्न रूपों में उपस्थित होने के कारण लोगों को प्रभावी ढंग से अपनी ओर आकर्षित करता है।

5. चिकित्सा पर्यटन[10]

आधुनिक समय में घूमनेफिरने के तौरतरीके भी अधिक वैज्ञानिक और उद्‌देश्य परक होते जा रहे है। गर्मियों के मौसम में लोग ऐसे स्थानो पर जाना चाहते है जहां वे पर्यटन का आनन्द उठा सकें, उनके शौक व स्वास्थ्य सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति भी हो जाए। यही वजह है कि अब भारत में ऐसे केन्द्रों का विकास हो रहा है जहां आयुर्वेद, योग, मेडिटेशन, एरोमोथेरेपी, यूनानी व सिद्धा, होम्योपैथी, तिब्बती चिकित्सा, नेुचरोथैरेपी, जेम थेरेपी, बॉडी मसाज आदि सुविधाऐं उपलब्ध हैं।

उत्तरांचल में ऋषिकेश के समीप ''आनंदा'' को ब्रिटेन की पत्रिका ''कोन्डे नास्ट ट्रेकर'' ने दुनिया का नम्बर वन 'स्पा' घोषित किया है सौ एकड़ जंगल के बीचोंबोच व हिमालय के दिलकश नजारों के मध्य स्थित आनन्दा को टिहरी गढ़वाल महाराज के महल को केन्द्र बनाकर निर्मित किया गया है।

भारत चिकित्सा पर्यटन और इस क्षेत्र में विदेशी निवेश के एक प्रमुख केन्द्र के तौर पर उभर रहा है। इस क्षेत्र मे काफी विदेशी निवेश हुआ है प्रमुख व्यापारिक संगठन एसोचैम की ताजा रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2012 में डेढ़ लाख पर्यटक स्वास्थ्य लाभ के लिए भारत आए थे। साल् 2015 तक यह बढ़कर 32 लाख तक पहुॅचने की संभावना है।

एशियाई देशों मे स्वाथ्य पर्यटन के लिहाज से भारत फिलहाल पहले नम्बर पर है। थाईलैण्ड, सिंगापुर, चीन और जापान जैसे देश भी अब ऐसे पर्यटकों को लुभाने की कोशिश कर रहे है।

आधुनिक यूरोपियों और थाई उपचार पर आधारित शरीर की वृद्ध और इन्द्रियों को निर्मल करने के उपाय पर्यटकों में खासे लोकप्रिय है। यहॉ वाष्प

स्नान, हाइड्रो मसाज पद्धति उपलब्ध है। इन्सटीट्यूट ऑफ वर्ल्ड टूरिज्म के अनुसार इस तरह के नए परिवर्तनों को पर्यटक अत्यन्त उत्साह के साथ पसंद कर रहे है। यहो नहीं इन बदलावों से इस उद्योग के राजस्व में अभूतपूर्व रूप से बढ़ोतरी हुई है। मार्च 2006 तक दुनिया भर के कुल सैलानियों में से लगभग 24 प्रतिशत व्यक्तियों ने मेडिकल टूरिज्म को सर्वाधिक प्राथमिकता दी। दक्षिण अफ्रीका, व इक्वाडोर जैसे देशों के बाद भारत में भी पर्यटन के इस रूप को हाथों हाथ लिया गया है।

इस प्रकार चिकित्सा पर्यटन की अपार सम्भावनाऐं है सरकारी आंकड़ों के अनुसार अप्रैल 2010 से दिसम्बर 2012 तक सिर्फ अस्पतालों और डायग्नोस्टिक सन्टरों में ही 15.42 करोड़ डॉलर का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश हुआ है अतः चिकित्सा पर्यटन एक उभरता हुआ क्षेत्र है।

6. ग्रामीण पर्यटन[11]

भारत गांवों का देश है जहॉ लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में निवास करती है यहां ग्रामीण पर्यटन की काफी सम्भावनाऐं हैं। ग्रामीण पर्यटन विकसित करने का मुख्य उद्देश्य सुस्थापित पर्यटन केन्द्रा पर पर्यटकों के बढ़ते दबाव को कम करने के साथ साथ राज्य के ग्रामीण अंचलों में उपलब्ध प्राकृतिक, एतिहासिक तथा सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण तथा संवर्द्धन पर बल देना है तथा साथ ही पर्यटन विकास के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों का सृजन करना भी है।

भारत में ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए अनेक परियोजनाऐं शुरू की गई हैं जिनमें सामुदायिक भागीदारी सुनिश्चित की गई है। गन्तव्य परिपथ की वृहत परियोजनाऐं अनक राज्यों में संचालित की जा रही ह। पर्यटन मन्त्रालय ने 27 राज्यों में 139 ग्रामीण पर्यटन परियोजनाऐं मंजूर की हैं। इससे स्थानीय शिल्पकारों, हस्तशिल्पियों को अपनी कला एवं हस्तशिल्प के प्रदर्शन करने के अवसर सिर्फ भारत ही नही विदेशों में भी मिल रहे है।

विजिट इण्डिया एयर 2009 के लिए ग्रामीण इका अवकाश स्थलों के रूप में 15 ग्रामीण स्थल चुने गए।

राजस्थान राज्य में ग्रामीण स्तर पर पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु ''आदर्श पर्यटन गॉव योजना'' शुरू की गइ है। योजनान्तर्गत राज्य म प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर एक आदर्श पर्यटन गॉव का चयन करके पर्यटन की दृष्टि से पूर्णतः सक्षम बनाने का प्रयास किया जा रहा है। राज्य में केन्द्र और राज्य सरकार के संयुक्त प्रयासों से संचालित इस योजना में पर्यटकों की सहायता के लिए 'पर्यटन वाहिनी' का गठन किया गया है। योजना के प्रथम चरण में चयनित गाँवों सांगोद (जयपुर), चावड़ (उदयपुर), छीजल (जोधपुर), मोलेला (कोटा), ओसियां (जोधपुर), खुड़ी (जैसलमेर), ताल छापर (चुरू), चौथ का बरवाड़ा (सवाईमाधोपुर), कालीबंगा (हनुमानगढ़) आदि मुख्य ह। उल्लेखनीय है कि केन्द्रीय योजना आयोग के निर्देशानुसार राजस्थान सरकार, हर ग्रामीण हाथ को काम के उद्धेश्य से पर्यटन को पूरी तरह से गाँव आधारित रखने का प्रयास कर रही है।[12]

7. फार्म हाउस पर्यटन[13]

विगत कुछ वर्षों से पर्यटन उद्योग में फार्म हाऊस पर्यटन अवधारणा अत्यन्त लोकप्रिय बनती जा रही है। पर्यटन के इस स्वरूप में स्थानीय परम्परागत खेलों की प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन फार्म हाउसेज पर किया जाता है। जिसमें विदेशी पर्यटक भी बढ़चढ़कर हिस्सा लेते है। फार्म हाउसेज में विदेशी पर्यटकों को होटलों जैसी उच्चस्तरीय सुविधाओं के साथ ग्रामीण संस्कृति और जीवनशैली को नजदीक से देखने का अवसर मिल जाता है। ध्यान देने योग्य यह भी है कि अभी तक फार्म हाउस पर्यटन के संचालन और संवर्द्धन मे ''मुरारका फाउण्डेशन'' जसे गिनेचुने गैर सरकारी संगठन ही रूचि ले रहे है। इस फाउण्डेशन द्वारा विश्वभर में भित्ती चित्रों के लिए प्रसिद्ध शेखावाटी अंचल जिसे ''राजस्थान की ओपन एयर आर्ट गैलेरी'' भी कहा जाता है में फार्म ट्यूरिज्म को अत्यधिक प्रोत्साहित किया जा रहा है।

फाउण्डेशन द्वारा विदेशी पर्यटकों के लिए खेल, मनोरंजन और साहस सृजित करने के लिए शेखावाटी के परम्परागत खेलों, सिटोलिया, गिल्लीडण्डा, लूणक्यार, हरदड़ा मारदड़ी आदि को बढावा दिया जा रहा है।

8. वैकल्पिक पर्यटन[14]

वैकल्पिक पर्यटक सब कुछ अलग ढंग से करना चाहते है। वे पर्यटकों के कम से कम और स्थानीय संस्कृति के ज्यादा से ज्यादा सम्पर्क में रहना चाहते है। वे विशेष 'पर्यटक' आवास, परिवहन और अन्य पर्यटक सेवाओं के उपयोग से बचने का प्रयास करते हैं। वे स्थानीय जनता के साथ सफर करना चाहते है इस प्रकार वे उनके जीवन के निजी पहलू से वाकिफ होना चाहते हं।

कई पर्यटक पर्यटन स्थलों पर जन पर्यटन के पड़ने वाले निषेधात्मक प्रभावों के कारण विकल्पों का चुनाव करत है। टूर ऑपरेटर इस क्षेत्र में भी विशेषज्ञता प्राप्त कर सकते है। जहां बनी बनाई सुविधाओं के बजाए स्थानीय लोगों और संस्कृति पर बल दिया जाता हो। इस प्रकार के ट्रिप, लम्बी अवधि के भी हो सकत है। परम्परागत रूप से दो सप्ताह की छुट्‌टी वाले ट्रिप से इस की लागत कम होती है। इस के बावजूद इसे ऊँचे दामों पर भी बेचा जा सकता है।

''स्थानीय मित्रों'' के साथ यात्रा और राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक परम्पराओं को अपने ढंग से समझना इस प्रकार के पर्यटन का मुख्य उद्‌देश्य है। इस प्रकार के पर्यटक दूर दराज के ग्रामीण इलाकों और कबीलाई या पूर्व महाराजाओं के महलों की ओर ज्यादा आकृष्ट होते हं। ये आम जनता के साथ सफर करना पसंद करते हं। वे आम बाजारों में घूमना चाहते हं। जहॉ स्थानीय रंग ही, ऊँट, खच्चरा पर यात्रा करते और सामान ढ़ोते लोगों से मुलाकात हो सके।

भारत एक लोकप्रिय वैकल्पिक पर्यटन स्थल है। यहाँ ''पुरातन और आध्निक'' अनुष्ठान और शहरीपन का अदभूत मिश्रण, स्थानीय रंग और जीवन से साक्षात्कार होता है।

9. वन्य जीव पर्यटन[15]

भारत में वन क्षेत्रा का काफी विस्तार है। जिनमें विभिन्न प्रकार के वन्य जीव पाये जाते ह। इनमें कुछ जीव जो विलुप्त होने के कगार पर ह, उनकी सुरक्षा हेतु भारत सरकार ने अनेक राष्ट्रीय पार्क, अभ्यारण्य आदि स्थापित किये ह। इन सभी का उद्देश्य वन्य प्राणियों का संरक्षण करना है और मनुष्य और वन्य जीवों के मध्य प्रेम का वातावरण बनाना है। इस तरह के वन्यजीव स्थल पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बनते जा रहे हैं आज हमारे देश में छोटे बडे. तकरीबन 53 राष्ट्रीय पार्क तथा 247 वन्य जीव सेन्चूरी ह।

इनमें से अनेक प्रोजेक्ट टाइगर अन्तर्गत आते ह। इन राष्ट्रीय पार्कों तथा वन्य जीव सेन्चूरी में 350 से अधिक जानवर तथा लगभग 1,200 किस्म के पक्षी ह। भारत वर्ष मे लगभग 65,000 तरह के जानवर, 13,000 तरह के पौधों तथा 2,000 तहर की मछलियॉ मिलती हैं।

वन्य प्राणियों में रूचि रखने वाले अनेक विदेशी पर्यटक भारत के प्रति काफी आकर्षित होते हैं परन्तु इन पर्यटकों को भारत अफ्रोका से पूर्णतः पृथक हैं अगर हम इसमें असफल रहे और इसके प्रतिकूल यदि हम अपने वन्य प्राणी स्थलों पर भारी प्रवेश शुल्क लगाकर यह कहकर आकर्षित करें कि हमारे यहां की अफ्रीका के समान अपितु कहीं अधिक सुन्दर वन्य प्राणी आकर्षण ह तो निश्चित तौर पर हमें गर्म हवा के गुब्बारों की सैर शैम्पेनयुक्त नाश्ते, वातानुकूति लेण्ड रोवर्स तथा अत्याधुनिक पाश्चात्य शैली के प्रसाधनों से युक्त तम्बुओं की सुविधाऐं प्रदान करनी होगी। यह सब सुलभ कराना हमारी क्षमता म है परन्तु सिर्फ कुछ लोगों के लिए यह सुविधा उपलब्ध कराना वन्य जीव के हित में नहीं है।

पर्यटक जब वन्य क्षेत्रों का भ्रमण करके अपने घरों को लौटते ह तो वे अपने साथ सुन्दर वनों शाश्वत वातावरण की अमूल्य निधि लेकर वापस लौटते है न कि टाईल्स एवं बाथरूम की रंगीनियां अथवा टेलीविजन पर दिखाये जाने वाले बहुरंगी कार्यक्रम की यादें। पर्यटन को बढ़ावा देने वालों को नेक परामर्श देना चाहिए कि वे अपने सैलानी ग्राहकों हेतु सम्पूर्ण पर्यावरणीय अनुभव की प्रतिष्ठित संस्थाओं से सेवाऐं प्राप्त करे।

भारत के मुख्य कुछ राष्ट्रोय पार्क इस प्रकार है

1. काजीरंगा नेशनल पार्क	असम
2. सुन्दरवन टाइगर रिजर्व	पश्चिम बंगाल
3. घाना वर्ड सेन्चुरी	राजस्थान
4. सरिस्का टाइगर रिजर्व	राजस्थान
5. रणथम्भौर टाइगर रिजर्व	राजस्थान
6. नन्दा देवी नेशनल पार्क	उत्तराखंड
7. कान्हा नेशनल पार्क	मध्यप्रदेश
8. जिम कार्बेट नेशनल पाक	उत्तराखण्ड
9. गिर नेशनल पार्क	गुजरात
10. दुधवा नेशनल पार्क	उत्तर प्रदेश
11. मद्रास नेशनल पार्क	तमिलनाडु
12. पेरियार टाइगर रिजर्व	तमिलनाडु
13. चिल्का सैन्चुरी	उड़ीसा
14. बांदीपुर सैन्चूरी	तमिलनाडु
15. राजाजी नेशनल पार्क	उत्तराखण्ड
16. डाचीगाम सेन्चूरी	जम्मू एण्ड कश्मीर

10. आरामदायक या आलीशान पर्यटन[16]

इसके तहत वे समस्त पर्यटक आते है जो अवकाश के दिनों में नये नये स्थानों के दर्शनार्थ, प्राकृतिक सौन्दर्यता 'लोकगीत' शान्त व आधुनिक व्यक्ति पर्यटन स्थल का आनन्द लेने हेतु एक जिज्ञासा की भावना से आराम से यात्रा कर सकते है। इस श्रेणी के कतिपय पर्यटक यात्रा व भ्रमण के दौरान अनवरत् परिवर्तनशील स्थानो एवं वातावरण का आनन्द लेते ह। औधोगिकरण व यंत्रीकरण के विस्तार के कारण अनविज्ञता व व्यस्त जीवन तथा कठिन जीवन क्रिया की दिनचर्या में आराम अभाव के कारण आराम की क्रियाओं की जरूरत होती है ये सैलानी अपने स्थलों में शान्त वातावरण देखना चाहते हैं। इन सैलानियों को निवासित पर्यटन अथवा अधिकतर मौसमी पर्यटन, जिस में विचलन के कम गुण ह, की श्रेणी में सम्मिलित किया जा सकता है। इन को पुनः स्वास्थ्यलाभोन्मुख पर्यटन भी कहा जा सकता ह।

11. शैक्षणिक पर्यटन[17] :

शैक्षणिक पर्यटन में विश्वविद्यालयों, विद्यालयों द्वारा वार्षिक भ्रमण का आयोजन किया जाता है तथा अन्यत्र स्थानों पर मीटिंग, कॉन्फ्रेन्स आदि का आयोजन किया जाता है विद्यार्थी, शोधकर्ता शिक्षकों द्वारा इनमें भाग लेने के लिए जाते ह जिससे उन्हे एक नये स्थान पर भ्रमण करने का अवसर प्राप्त होता है और ज्ञान में वृद्धि करते हैं इस प्रकार के आयोजन द्वारा पर्यटन को बढ़ावा प्राप्त होता है तथा विचार विमर्श का अवसर प्राप्त होता है।

12. जातोय पर्यटन[18]:

इसे सांस्कृतिक पर्यटन में भी शामिल माना जाता है। इस में एस्किमों, अमेरिका इण्डियनों आदिवासी समुदायों, अनजाने लोगों और उनके रीतिरीवाजों, समाराहों, आदि कलाओं, घरेलू जीवन और निजी एव सार्वजनिक गतिविधियों आदि को शामिल किया जाता है। इसमें गठित जाति या समुदाय विशेष के रीतिरीवाजों, समारोहों एव कलाओं का आनन्द उठाया जाता है।

13. मोटिवेशनल टूरिज्म[18] :

इसका सम्बध ओजस्वी भाषणों से लोगा को सकारात्मक ऊर्जा देना होता है इस तरह अनेक आयोजन विभिन्न स्थानो पर किये जाते हैं। इस तरह के पर्यटन को 'आउट बाउण्ड ट्रेनिंग' का नाम दिया गया है। किसी हॉल या कमरे की दिवारों से बाहर ऐसी जगह जहां प्रकृति अपने वास्तविक रंगरूप में हो, यह प्रशिक्षण चलता है इसमें प्रशिक्षण लेने वाले को बाहरी दुनिया से पूरी तरह अलग कर दिया जाता है ताकि वह अपने आप को पहचान सके भारत में इस नवाचार को शुरूआत हो चुको है। मानसिक अवसाद, परेशानियों और चिंताओ से घिरे हजारो लोग आजकल हिन्दुस्तान के विभिन्न मोटिवेटिव टूरिस्ट प्लेसेज की यात्रा करने लगे हैं। कन्याकुमारी का विवेकानन्द रॉक मेमोरियल होल, ध्यान मंडप अथवा पाण्डुचेरी का अरबिंदो आश्रम, आजकल यहां मानसिक शांति एंव आन्तरिक शक्ति की तलाश में आने वाले सेलानियों की संख्या बढ़ रही है इसका तेजी से विकास हो रहा है।

14. अन्य पर्यटन :

इसके अतिरिक्त अन्य पर्यटन के रूप विद्यमान है जैसेसंवाद पर्यटन, पलायन, डेन्टो टूरिज्म आदि है।

संदर्भ सूची

1. गोयल, राजेश, भारतीय पर्यटन उद्योग, वंदना पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2011 पृष्ठ सं. 70–71
2. रावत, ताज, पर्यटन विकास के विविध आयाम, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002 पृष्ठ सं. 55–56
3. शर्मा, देवेश, धार्मिक पर्यटन, मोहित बुक्स इण्टरनेशनल, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 03
4. गोयल, राजेश, भारतीय पर्यटन उद्योग, वंदना पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2011 पृष्ठ सं. 73
5. तदैव पृष्ठ संख्या 71
6. गोयल, आशीष, ऐतिहासिक पर्यटन, मोहित बुक्स इंटरनेशनल, नई दिल्ली, 2010 पृष्ठ संख्या 23
7. रावत, ताज, प्राकृतिक पर्यटन, विकास एवं बदलाव, आकाश द्वीप पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2007 पृष्ठ संख्या 24–25
8. जोशी, अतुल, कुमार अमित जोशी, महिमा, भारत में आधुनिक पर्यटन, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2007 पृष्ठ संख्या 24–25
9. गोयल, राजेश, पर्वतीय पर्यटन उद्योग, मौलिक सुविधाओं का विकास, वंदना पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 1,2,3,5
10. पॉल, रेखा, पारम्परिक औषधियाँ और चिकित्सा पर्यटन, योजना, मई 2010 पृष्ठ संख्या 13–14
11. उपाध्याय, देवेन्द्र, विकास में पर्यटन की भूमिका, योजना मई 2010 पृष्ठ संख्या 13–14
12. रैना, अभिनव कमल, सारण, भूराराम, पर्यटन एवं होटल उद्योगः प्रबन्ध सिद्धान्त एवं व्यवहार, कनिष्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2010 पृष्ठ संख्या 17
13. प्रतियोगिता दर्पण, दिसम्बर 2005 प्रतियोगिता दर्पण पृष्ठ 896
14. इग्नू –टी.एस.1, पर्यटन के आधार पाठ्यक्रम, 2011 पृष्ट संख्या 70–71

15.प्रताप, राणा, पर्यटन भूगोल, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008 पृष्ठ संख्या 62–63

16.प्रताप, राणा, पर्यटन भूगोल, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2000 पृष्ठ संख्या 23

17.इग्नू– टी.एस.2, पर्यटन विकास : उत्पाद, संचालन और स्थिति का अध्ययन, 1997 पृष्ट संख्या 27

18.चंबल संदेश, संडे मॉर्निंग विशेष, 2014

अध्याय– पंचम

कोटा संभाग के पर्यटन स्थल

5.1 कोटा के पर्यटन स्थल

5.2 बूँदी के पर्यटन स्थल

5.3 सवाईमाधोपुर के पर्यटन स्थल

5.4 झालावाड़ के पर्यटन स्थल

5.5 कोटा संभाग में पर्यटन की संभावनाऐं

5.6 कोटा संभाग में आयोजित होने वाले उत्सव व मेले

अध्याय–पंचम

कोटा संभाग के पर्यटन स्थल

कोटा संभाग में पर्यटन स्थल पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। यहाँ शोध में कोटा संभाग और सवाईमाधोपुर को शामिल किया गया है। जहाँ कोटा संभाग में बूँदी पर्यटन स्थलों के लिहाज से सर्वाधिक पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है वहीं सवाईमाधोपुर टाईगर सफारी के लिए जाना जाता है। लेकिन इनके अतिरिक्त भी यहाँ पर्यटक स्थलों का अभाव नहीं है। यहाँ पर्यटक स्थल इस प्रकार से देखे जा सकते हैं

5.1 कोटा के पर्यटन स्थल

कोटा मे पर्याप्त रुप से पर्यटन स्थल मौजूद हैं जो इस प्रकार हैं

5.1.1 चम्बल गार्डनः

यह प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर बगीचा चम्बल नदी के किनारे स्थित ह। चम्बल नदी में नौका विहार की सुविधा भी उपलब्ध है तथा यह एक अच्छा पिकनिक स्थल बन गया है।

5.1.2 जग मंदिरः

किशोर सागर की कृत्रिम झील के बीच जग मंदिर का मनमोहक घाटी महल स्थित है। इसे सन् 1346 में बूँदी के राजकुमार धरदेह ने बनवाया था। किशोर सागर क किनारे सेवन वंडर पार्क भी बनाया गया है। जो लोगो को अपनी ओर आकर्षित करता है।

5.1.3 देवताजी की हवेलीः

बाजार के बीचा–बीच देवता श्रीधर जी की सुंदर हवेली है। यह हवेली अपने लालित्यपूर्ण भित्ति चित्रों व अलंकृत कमरों के कारण प्रसिद्ध है।

5.1.4 कोटा बांधः

यह चंबल नदी का सिंचाई नहर का एक हिस्सा है। यहाँ का आसपास का दृश्य सुंदर व उत्तम होने के कारण लोग यहाँ घूमने आते हैं।

5.1.5 भीम चौरीः

कोटा से 50 कि.मी. दूर दरा नामक स्थान की नाभि में भीम चौरी स्थित है। एक लम्बेचौड़े पत्थर के दो स्तरीय चबूतर पर कुछ स्तम्भों वाला एक ध्वस्त मंदिर को ही भीम चौरी या भीम चँवरी कहा जाता है। इतिहासकार इसे गुप्तकालीन मानकर इसका निर्माण काल चौथी शताब्दी बताते हैं। यहाँ

पर 44 फीट चौड़े और 74 फीट लम्बे बड़ेबड़े शिलाखण्डों से निर्मित एक चबूतरे पर भीम चौरी का एक मूल मंदिर ध्वस्त रुप में स्थित है, जिसे भीम का मण्डप माना जाता है। मंदिर में शिवलिंग की प्रतिष्ठा मानी गई है। कोटा के राजकीय संग्रहालय की एक प्रतिमा तंत्रिका पट्टिका पूरे हाड़ौती अँचल में अनोखी है, जो विदेशों की यात्रा भी कर चुकी है। मकर मुख से अलंकृत इस पट्टी में एक व्यक्ति को वाद्ययंत्र बजाते हुए देखा जा सकता है।

5.1.6 चारचौमा का शिवालयः

कोटा से 25 कि.मी. दूर चारचौमा ग्राम के पास प्राचीन शिव मंदिर है, जिसे गुप्तकालीन अर्थात चौथीपाँचवी सदी का बताया जाता है। चारचौमा के शिव मंदिर को कोटा राज्य में सबसे पुराना देवालय बताया जाता है। मंदिर में स्थित चतुर्मुखी शिव मूर्ति है। वेदी से चोटी तक प्रतिमा की ऊँचाई 3 फीट है। कंठ से ऊपर के ये चारों मुख काले तथा चमकीले हैं। चारों मुखों का केश विन्यास भी आकर्षक है।

5.1.7. बूढ़ादीत का सूर्य मंदिरः

कोटा के पूव में ग्वालियर की तरफ जाने वाली सड़क पर दीगोद तहसील मुख्यालय से 14 कि.मी. दक्षिण में बूढ़ादीत गाँव के तालाब के पश्चिमी किनारे पर पूर्वाभिमुख शिखर बंध सूर्य मंदिर निर्मित है। पंचायतन शैली के मंदिर में गर्भगृह तथा मण्डप हैं। मण्डप का आधुनिकीकरण 18वीं शताब्दी में किया गया। मंदिर आज भी अपने मूल रुप में स्थित है। सूर्यमंदिर 9वीं शताब्दी में निर्मित माना जाता है।

5.1.8 लक्खी बुर्ज उद्यानः

छत्र विलास तालाब के किनारे कोटा नगर के परकोटे की लक्खी बुर्ज पर एक आकर्षक एवं फल सीढीनुमा उद्यान 1976 ई. में विकसित किया गया।

5.1.9. राजकीय संग्रहालयः

किशोर सागर के निकट बृज विलास पैलेस में स्थापित राजकीय संग्रहालय में दुर्लभ सिक्को व हाड़ौती मूर्ति शिल्प का अच्छा संग्रह है।

5.1.10 बारदौलीः

कोटा से 48 कि.मी. दूर प्रताप सागर बांध के रास्ते पर स्थित 9वीं शताब्दी का सुंदर व प्राचीन मन्दिर का स्थान है। नक्काशी और मण्डप के दरवाजे पर नटराज शिव की मूर्ति शिल्प का बेहतरीन नमूना है।

5.2 बूँदी के पर्यटन स्थलः

अरावली पर्वतमाला की गोद में बसे बूँदी नगर में पर्यटको के देखने के लिए यहाँ बहुत कुछ है। यहाँ के पर्यटन स्थलों को इस प्रकार देखा जा सकता है

5.2.1 तारा गढ दुर्गः

हाड़ा राजपूता के अप्रतीम शौर्य और वीरता का प्रतीक बूँदी का तारागढ़ दुर्ग पर्वतशिखरों से सुरक्षित होने के साथसाथ नैसर्गिक सौन्दर्य से भी ओतप्रोत है। वीरता और बलिदान की सुदीर्घ एवं गौरवशाली परम्परा का धनी बूँदी दुर्ग अपनी विशिष्ट संरचना और अनूठे स्थापत्य के कारण राजस्थान के किलों में विशेष स्थान रखता है। इस दुर्ग के निर्माण में सुंदरता और सुदृढ़ता का मणिकांचन संयोग हुआ है। इसका स्थापत्य कछवाहा राजवंश की पूर्व राजधानी आम्बेर से मिलता जुलता है। लगभग 1426 फीट ऊँचे पर्वत शिखर पर विनिर्मित यह दुर्ग पाँच मील के क्षेत्र में फैला है।

पर्वतीय ढलान पर बने बूँदी के भव्य राजमहल अपने अनूठे शिल्प और सौन्दर्य के कारण अद्वितीय हैं। इन महलों में छत्रमहल, अनिरुद्धमहल, रतनमहल, बादलमहल और फूलमहल, स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण ह।

बूँदी के राजमहलों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनके भीतर अनेक दुर्लभ एवं जीवन्त भित्ति चित्रों के रुप में कला का एक अनमोल खजाना विद्यमान है। विशेषकर महाराव उम्मेदसिंह के शासनकाल में निर्मित चित्रशाला बूँदी चित्रशैली का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है।

5.2.2 रतन दौलतः

राजा रतन सिंह द्वारा निर्मित यह स्मारक जिसमें 9 घोड़ा के लिए अस्तबल व एक हथिया पोल है।

5.2.3 केसर बागः

इस बाग में बूँदी के पूर्व शासकों व उन की रानियों की छत्रियाँ हैं। जो नगर की उत्कृष्ट वास्तुकला का उदाहरण है।

5.2.4 रानी जी की बावड़ीः

इस बावड़ी का निर्माण नाथावतजी ने सन् 1699 में करवाया था। जिसकी गहराई लगभग 46 मीटर है। यहाँ पर ऊँचा मेहराब द्वार भी है। इस बावड़ी के खम्भों पर उत्कृष्ट नक्काशी दर्शनीय है।

5.2.5 नवल सागरः

किले से दिखाई पड़ने वाली नवल सागर झील की चोकोर झील है। इस झील में आर्यों के जल देवता तरूण का सुन्दर मन्दिर स्थित है। यह लगभग आधा जलमग्न है।

5.2.6 रामेश्वरः

यह लगभग कोटा से 45 किमी है यह नगर केशवराय जी (विष्णु) के मन्दिर के लिए विख्यात है। इस मन्दिर का निर्माण सन् 1601 ई. में बूँदी के महाराजा शत्रुशाल ने करवाया था। यहाँ प्रसिद्ध जैन मन्दिर भी है।

5.2.7 बिजोलियाः

यह लगभग कोटा से 50 किमी है यहाँ प्राचीन किला बूँदीचित्तौड़गढ़ मार्ग पर स्थित है। किले के पास ऊँचे रास्ते में भगवान शिव का भव्य मन्दिर है। मन्दिर के प्रवेश द्वार पर संरक्षक के रूप में खड़े भगवान गणेश जी की सुंदर प्रतिमा है।

5.2.8. तलवासः

यह कोटा से 53 किमी है राजा अजित सिंह द्वारा निर्मित किले के लिए जाना जाता हैं। यहाँ पर स्थित धूलेश्वर महादेव का मन्दिर और जल प्रपात दर्शनीय है।

5.2.9 इन्द्रगढ़ः

इन्द्रगढ जो कोटा से 77 किमी दूर है। इन्द्रगढ़ किला और पास ही देवी माता और कमलेश्वर के मन्दिरों के लिए विख्यात है।

5.2.10 हिण्डोली का तालाबः

बूँदी से 15 मील दूर अजमेर रोड़ के पास हिण्डोली का तालाब है, जिस का निर्माण लगभग 500 वर्ष पूर्व हुआ था। बाद में इसके किनारे एक बाग एवं महलों का निर्माण महाराव राजा रघुवीर सिंह ने करवाया था।

5.2.11. बांसी दुगारीः

यह स्थान चमत्कारी देवता श्री तेजाजी महाराज की कर्मस्थली रहा है। यहॉ एक बड़ा तालाब है जिसके पास ही तेजाजी का पवित्र तीर्थ स्थल है।

5.2.12. जैत सागरः

नगर से थोड़ी दूर पहाड़ियों के बीच जैत सागर तालाब है। प्रारम्भ में यह तालाब जैत नाम के मीणा ने बनवाया था। इस तालाब के पास सूरत महल है। जिस का निर्माण राजा विष्णु सिंह ने करवाया था।

5.2.14 रामगढ़ विषधारी अभ्यारण्यः

इस अभ्यारण्य में बाघ, बघेरा, साँभर, चिंकारा आदि अनेक वन्य जीव पाये जाते ह। इस अभ्यारण्य के मध्य से मेज नदी निकलती है।

5.2.15 कनक सागर पक्षी अभ्यारण्यः

1987 ई. में स्थापित यह अभ्यारण्य प्रवासी पक्षियों के लिए जाना जाता है।

5.3. सवाई माधोपुर के पर्यटन स्थलः

5.3.1 रणथम्भौर नेशनल पार्कः

रणथम्भौर राष्ट्रीय पार्क उत्तर भारत में एक प्रसिद्ध और सब से बड़ा पार्क है, जो राजस्थान में वन्य जीव पर्यटन का पूर्ण रूप से पयावाची है। जिस की जयपुर से दूरी 180 कि.मी. तथा कोटा से 110 कि.मी. है। रणथम्भौर के लिए सब से नजदीक रेलवे स्टेशन सवाईमाधोपुर है। रणथम्भौर का क्षेत्र 392 वर्ग किमी है, जहाँ टाईगर (बाघ) को आसानी कहीं भी देखा जा सकता है। रणथम्भौर में बाघों की संख्या अच्छी है।

भारत में रणथम्भौर पार्क वन्य जीव रिजर्व को "Tiger Friendly Land" के तौर पर परिभाषित किया गया है। यहाँ चीताओं को पहचानने के लिये उनके शरीर पर चिन्ह बनाये गये हैं, जिन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है। जहाँ मादा चीता और नन्हें शावकों को आसानी से देखा जा सकता है।

1955 में रणथम्भौर को टाईगर रिजर्व के रुप में स्थापित किया गया था। सन् 1973 में एक टाईगर प्रोजेक्ट के तौर पर घोषित किया गया है और 1980 में रणथम्भौर को राष्ट्रीय पार्क बनाया गया तथा 1984 में इस अभ्यारण्य को सवाईमानसिंह नाम दिया गया। सन् 1991 में इस का क्षेत्र सवाई मानसिंह तथा कैला देवी अभ्यारण्य को मिला कर बडा कर दिया गया।

5.3.2 वन्य जीवः

इस अभ्यारण्य में बाघ मुख्य आकर्षण है। इसके अलावा बघरा, भालू, जंगली सूअर, बिल्ली, गीदड़, लकड़बग्गा, चीतल, चिंकारा एवं हिरण भी यहाँ स्वतन्त्र रूप से विचरण करते दिखाई देते हैं।

इसके अलावा अनेक प्रकार की वनस्पति तथा लगभग 270 प्रकार के विभिन्न तरह के पक्षीयों की प्रजातियाँ भी यहाँ देखी जा सकती ह। जहाँ टाइगर रिजर्व में बाघों की संख्या 1982 में 44 थी वहीं 2005 में इनकी संख्या घटकर मात्र 26 रह गयी। गैर सरकारी श्रातों द्वारा 2008 में सर्वे किया गया उस समय 34 व्यस्क बाघ थे। साथ ही 14 शावक थे।

रणथम्भौर बाघ अभ्यारण्य पूरे भारत में इनके स्थानीय नामों से भी पसिद्ध है। जिनमें मुख्य जैसे मछली (टी16), डॉलर (टी25), सितारा (टी28) और अन्य नामों से जाने जाते ह। कुछ बाघ पास के अभ्यारण्य सरिस्का में भी देखे जाते हैं।

रणथम्भौर अभ्यारण्य क्षेत्र की भूगर्भीय रचना भी अद्वितीय है। जहा दो भिन्न भिन्न पर्वत श्रृंखलाऐं विध्यांचल तथा अरावली मिलती ह, वहीं चम्बल एवं बनास नदियाँ यहाँ मिलती ह। वहीं चम्बल एवं बनास नदियाँ यहाँ की जैविक विविधता को चार चाँद लगाती ह। क्षेत्र में उष्ण कटिबंध शुष्क तथा मिश्रित पतझड़ वाले वृक्ष की प्रजातियाँ अच्छादित हैं। यहाँ के वनों में वन्यजीव की बहुतायात एवं सघन वनस्पति बाघों को समुचित भोजन, पानी तथा शरण स्थल देने के लिए पर्याप्त है।

5.3.3 रणथम्भौर किलाः

सवाई माधोपुर रेल्वे स्टेशन से 13 किमी की दूरी पर ऊँची पहाड़ी पर रणथम्भौर दुर्ग में स्थित त्रिनेत्र गणेश जी का अधिक महत्व है। यहाँ देश के हर भाग से श्रद्धालु आकर शादी विवाह, फसल की बुवाई तथा अन्य मांगलिक अवसरों पर गणेश जी को प्रथम आमंत्रण देते हैं।

5.3.4 काचिदा घाटीः

काचिदा घाटी रिजर्व के सीमांत में स्थित है जहाँ विभिन्न तरह के वन्यजीव मुख्यतः भालूओं को देखा जा सकता है। जहाँ पर बाघों को भी देखा जा सकता है। यहाँ पर्यटक जीप सफारी से आसानी से पहुँच सकते हैं।

5.3.5 लकारदा अनंतपुराः

यह रणथम्भौर पार्क के उत्तर पश्चिम में स्थित है। जहाँ लक्कडबग्गा आदि जानवरों को आसानी से देखा जा सकता है।

5.3.6. जोगी महलः

जोगी महल मुख्यतः रणथम्भौर राष्ट्रीय पार्क में वन्यजीवों को पर्यटकों द्वारा देखने के लिये जाना जाता है, जो रणथम्भौर पार्क के पास ही स्थित है। जहाँ पर्यटकों के लिए अच्छी सुविधाऐं प्रदान की गयी हैं।

5.3.7. राजीव गाँधी रीजनल म्यूजियम ऑफ नैचुरल हिस्ट्री (त्डछभ)

यह म्यूजियम चौथा क्षेत्रीय प्राकृतिक म्यूजियम है जो सवाईमाधोपुर के पश्चिम में रामसिंहपुरा गाँव में स्थित है। यह म्यूजियम प्राकृतिक धरोहर की मुख्य विशेषताओं को प्रदर्शित करता है जो सामान्य व्यक्तियों, बच्चों तथा मुख्यतः छात्रों की गतिविधियों का केन्द्र है। इसके साथ ही रणथम्भौर पार्क

तथा सांस्कृतिक धरोहरों के साथ संतुलन बनाने में ही यह अपना सहयोग देता है। अतः सवाई माधोपुर देश में अपनी धरोहर के कारण आकर्षण का केन्द्र है।

रणथम्भौर म्यूजियम गैलरी के साथ खुलता है गैलरी एक ''बायोडायवर्सिटी ऑफ राजस्थान'' और ''फॉरेस्ट एण्ड वाईल्ड लाईफ ऑफ राजस्थान''

गैलरी 3 ''डिजर्ट'' गैलरी 4 : ईकोलॉजी नैचुरल नेटवर्क'' एण्ड कन्जर्वेशन, गैलरी5: ऑरिजन एण्ड इवोल्यूशन ऑफ लाइफ नाम दिये गये है। यहाँ यात्रा का समय 10:00 बजे से शाम 5:00 बजे तक का है। सोमवार के दिन व राष्ट्रीय अवकाश में बन्द रहता है।

5.3.8 चमत्कार जैन मन्दिर:

चमत्कार जैन मन्दिर जिस की रेलवे स्टेशन से दूरी मात्र 03 किमी है जो अरावली पर्वतमालाओं से धिरा हुआ है। इस मन्दिर में स्फटिक पाषाण से निर्मित ऋषभ देव की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। मन्दिर की व्यवस्था श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कमेटी चमत्कारी जी द्वारा की जाती है। जहाँ जैनीयों के प्रमुख धार्मिक स्थल ह।

5.3.9. काला गौरा भैरव मन्दिर:

सवाई माधोपुर शहर के प्रवेश द्वार पर स्थित यह प्राचीन मन्दिर ऐतिहासिक महत्व का प्रमुख दर्शनीय स्थान है। कहा जाता है कि मन्दिर का उपयोग तन्त्र विद्या के लिये किया जाता था इस मन्दिर के प्राचीन महत्व को देखते हुए पर्यटन विभाग की ओर से इस का जीर्णोद्धार किया गया है।

5.3.10. अमरेश्वर महादेव मन्दिर:

सवाईमाधोपुर रेलवे स्टेशन से करीब 7 किमी की दूरी पर रणथम्भौर राष्ट्रीय पार्क मार्ग में ही अमरेश्वर महादेव मन्दिर स्थित है। अमरेश्वर महादेव

मन्दिर लगभग 1200 वर्ष पुराना मन्दिर है। यहाँ पर ''हो'' पहाड़ियों के मध्य से हमेशा बहने वाले झरने से जलधारा निरन्तर प्रवाहित होती है। इस स्थान पर कुण्ड बना हुआ है जहाँ प्रतिवर्ष शिवरात्रि को मेला आयोजित किया जाता है। यहाँ प्राकृतिक सुन्दरता होने के कारण अधिक संख्या में पर्यटक आते ह ।

5.3.11 घुश्मेश्वर महादेवः

यह जिले के उत्तर पश्चिमी छोर पर मनोरम विध्यांचल पर्वत श्रृंखला के अंचल में अवस्थित ऐतिहासिक तथा पौराणिक अतीत के वैभव से परिपूर्ण घुश्मेश्वर महादेव का मन्दिर शिवाड़ गाँव में स्थित है।

5.3.12 कुवाल जी मन्दिर (Kuwal Ji Temple)

यह मन्दिर सवाई माधोपुर से लगभग 40 किमी दूरी पर स्थित है जो रणथम्भौर राष्ट्रीय पार्क के दक्षिण पश्चिम में फलौदी और खानपुर गाँव के रास्ते पर अरावली तथा विध्यांचल पर्वत श्रृंखला के क्षत्र में स्थित है जहाँ जैव विविधता के दर्शन भी होते हैं। यहाँ वन्य जीव दृश्य भी देखे जा सकते हैं। जैसेः हिरन, साँभर, नीलगाय, आदि।

कुवाल जी मन्दिर भगवान शिव के तौर पर जाना जाता है। जहाँ हजारों लोग अपनी समृद्धि की प्रार्थना करने के लिए यहाँ आते हैं। कहा

जाता है कि यह मन्दिर 7वीं और 9वीं शताब्दी के मध्य बनवाया गया था। यह भी कहा जाता है कि पाण्डवों के समय बनवाया गया था।

5.4. झालावाड़ के पर्यटन स्थलः

5.4.1 गढ़ भवनः

पुरातत्व और भवन निर्माण कला की दृष्टि से यह गढ़ दर्शनीय ह इस का निर्माण सन् 1838 ई. में झाला राजा मदन सिंह ने करवाया था। गढ का शीश महल दर्शनीय है। इसके एक भाग में बने राजाओं के चित्र अभी भी अपने चटख रंगों के कारण खूबसूरत प्रतीत होते है। अन्य भित्ति चित्रों में रामायण के दृश्य, कृष्ण रासलीला, श्री नाथ जी का पूर्ण श्रृंगारयुक्त, राजभोग झाँकी देखते ही बनती है।

5.4.2 रेन बसेराः

झालावाड़कोटा मार्ग पर 7 कि.मी. दूर किशन सागर झील के किनारे पर लकड़ी से निर्मित एक अत्यन्त सुंदर विश्रामगृह है, जो रैन बसेरा के नाम से प्रसिद्ध है देहरादून के वन शोध संस्थान द्वारा निर्मित इस अनूठे भवन को सन् 1936 ई. में लखनऊ की एक उद्योग प्रर्दशनी में रखा गया था। झालावाड़ के तत्कालीन महाराजा इस भवन को खरीद कर यहाँ ले आए तथा किशन सागर के किनारे इस को स्थापित किया।

5.4.3. भवानी नाट्य शालाः

यह नाट्यशाला राज्य में ही नहीं अपितु देश भर में अनोखी है। सन 1921 ई. में कला प्रेमी महाराजा भवानी सिंह द्वारा बनवाई गई नाट्यशाला पारसी ऑपेरा शैली की है। इस में तीन मंजिला दर्शक दीर्घा एवं भव्य रंगमंच आकर्षक है। यहाँ हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू तथा संस्कृत के अनेक नाटकों का मंचन किया जा चुका है।

5.4.4. पुरातत्व संग्रहालयः

महाराजा भवानी सिंह द्वारा सन् 1915 में स्थापित संग्रहालय यहाँ के पैलेस के मुख्य द्वार के समीप स्थित है। अनेक ऐतिहासिक और दुर्लभ प्रतिमाओं, शिलालेखों, चामुण्डा, षटमुखी सूर्यनारायण, अर्द्ध नारीश्वर, शूकर वराह तथा त्रिमुखी विष्णु की आकर्षक मूर्तियॉ विशेष रूप से दर्शनीय ह। संग्रहालय में प्रदर्शित विभिन्न कलात्मक तथा आकर्षक वस्तुओं में से झालावाड़ के गौरवशाली समृद्ध साँस्कृतिक इतिहास की झलक मिलती है।

5.4.5. गागरोन का किलाः

यह किला झालावाड शहर से पांच कि.मी. दूर उत्तर पूर्व में एक लम्बी पहाड़ी पर स्थित है। इसे जल दुर्ग भी कहा जाता है। इस किले के पास ही चौड़े पाट की दो नदीयाँ काली सिंध तथा आहू का संगम होता है। पूरा किला बिना किसी नींव के सीधी चट्टानों पर खड़ा किया गया है। सामरिक दृष्टि से किले की स्थिति ऐसी है कि दोतीन कि.मी. दूर पता ही नहों चलता की यहां कोई किला भी है। किले के तीनों तरफ प्रवाहित नदीयाँ भी अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान करती है। श

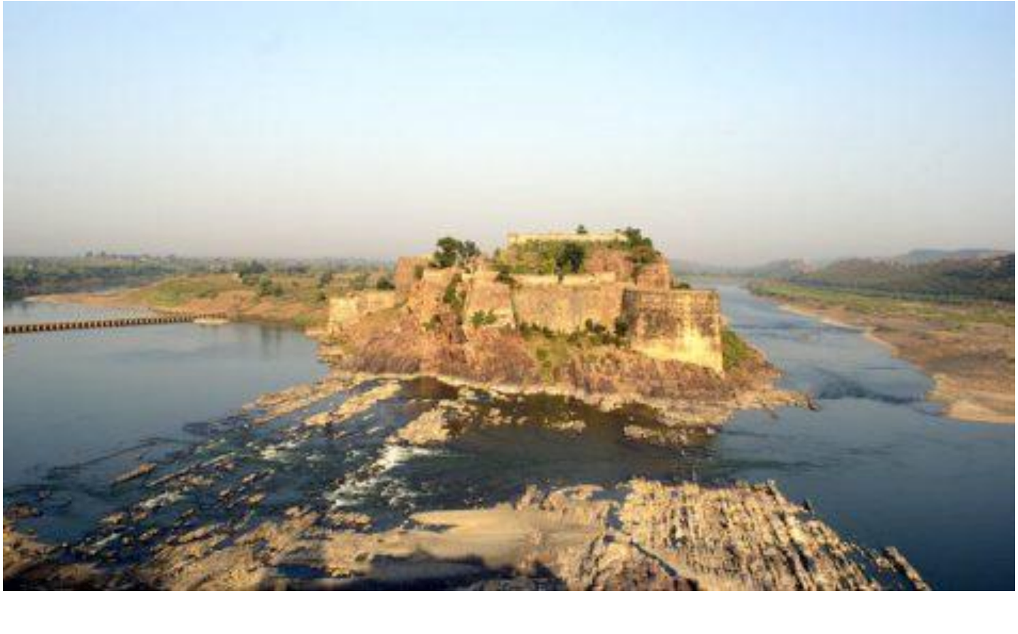

5.4.6 नवलखा किलाः

झालावाड़ के झालरापाटन की तरफ जाने वाली सड़क के बायीं तरफ की एक पहाड़ी पर यह किला स्थित है। इस किले का निर्माण कार्य झाला राजा पृथ्वीसिंह ने सन् 1860 में आरम्भ कराया था किन्तु यह पूर्ण नही हो सका।

5.4.7. चन्द्रावतीः

झालरापाटन शहर के दक्षिण में पौराणिक नगर चन्द्रावती के ध्वस्त अवशेष हैं। पावन चन्द्रभागा नदी के तट पर स्थित इस वैभवशाली नगर का निर्माण मालवा के राजा चन्द्रसेन ने करवाया था। कुछ बचे हुए मंदिर अभी इस क्षेत्र के समृद्ध इतिहास की गौरवगाथा गा रहे हैं। चन्द्रभागा नदी के तट पर स्थित शीतेश्वर महादेव, काली देवी, विष्णु तथा वराह के मन्दिरों का समूह विशेष रूप से दर्शनीय है।

5.4.8. सूर्य मन्दिरः

झालरापाटन नगर के बीचोंबीच बने इस मन्दिर को सात सहेलियों का मंदिर तथा पद्मनाभ मंदिर भी कहा जाता है। सूर्य मंदिर अपनी भव्यता के लिये प्रसिद्ध है और झालावाड़ का प्रमुख दर्शनीय स्थल है।

5.4.9. मनोहर का किलाः

परवन और काली खाड़ मंदिरों के संगम पर बना यह किला ऐतिहासिक एवं सामरिक महत्व का स्थल रहा है। किले का आन्तरिक भाग बहुत पुराना है, लेकिन बाहरी भाग भीम सिंह द्वारा बनवाया गया था। झालावाड़ जिला मुख्यालय से दुर्ग लगभग 90 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

5.4.10 बौद्ध कालीन गुफाऐंः

झालावाड के दक्षिण में स्थित डग पंचायत समिति क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर पत्थरों के विशाल खण्डों को काटकर बनाई गई बौद्ध कालीन गुफाऐं और स्तूप हैं। क्यासरा गाँव में 50 कि.मी. उत्तर पश्चिम की तरफ पहाड़ की चोटी पर 35 कोलवी गुफाएं निर्मित हैं। इनमें से अधिकतर गुफाऐं अब समाप्त सी हो गई हैं। यहाँ 5 खण्ड हैं जिनमें से तीन स्तूप और दो मंदिर स्वरूप में हैं।

5.4.11 नागेश्वर पार्श्वनाथः

राजस्थान और मध्य प्रदेश की सीमा के समीप चौमहला से लगभग नौ किलोमीटर दूर उन्हेल गाँव में नागेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ स्थल है। यहाँ प्रतिष्ठित मूर्ति लगभग ढाई हजार साल पुरानी भगवान पार्श्वनाथ के मूल शरीर के अनुसार, ग्रेनाईट सेन्ड स्टोन से निर्मित है।

5.4.12 द्वारकाधीश मंदिरः

यह झालावाड़ का मुख्य मंदिर है जिसका निर्माण 1796 ईस्वी में जालिम सिंह ने करवाया था।

5.4.13 शीतलेश्वर महादेव मंदिरः

इस मंदिर का मूल नाम चन्द्र मौली मंदिर था। यहाँ से प्राप्त एक शिलालेख के अनुसार इस मंदिर का निर्माण ईसा की सातवीं सदी में देवा के भाई वयस्क ने करवाया था।

5.4.14. कालिका मंदिरः

महाकाली का मंदिर विष्णु को समर्पित था। गर्भगृह के मध्य में कालिका की आठ भुजा वाली साढ़े पाँच फीट ऊँची प्रतिमा विराजमान है।

5.4.15 सुनेलः

झालावाड़ जिले के शहर सुनेल में 1400 वर्ष पुराना देवालय देवनारायण कटारमल जी का मंदिर स्थित है।

5.4.16 चाँदखेड़ीखानपुर अतिशय जैन मंदिरः

यह झालावाड़ से करीब 35 कि.मी. है। इस मंदिर का निर्माण 17वीं शताब्दी में हुआ। यह मंदिर वास्तुकला का एक उत्कृष्ट नमूना है। 6 फुट ऊँची पद्मासन मुद्रा में भगवान आदिनाथ जी की प्रतिमा स्थापित है।

5.5 कोटा सम्भाग में पर्यटन की संभावनाऐंः

कोटा संभाग में पर्यटन की संभावनाऐं मौजूद हैं, लेकिन इन पर उचित ध्यान नहीं दिया जा रहा है कोटा संभाग के बाराँ जिल को पर्यटन की दृष्टि से विकसित किया जा सकता है। अभी तक बाराँ जिले में किसी भी प्रकार की पर्यटन गतिविधि पर ध्यान नहीं दिया गया है बाराँ के पर्यटन स्थलों को इस प्रकार देखा जा सकता है।

5.5.1 बाराँ के पर्यटन स्थलः

(1) काकूनीः

बाराँ जिले में छीपाबड़ोद, सारथल रास्ते में काकूनी का दुर्लभ शिल्पधाम है। परवन नदी के किनारे पहाड़ी पर पूर्व में यहां कभी 108 मंदिर की श्रृंखला थी। अटरू के पास पश्चिम में ऊँचे टीले पर गढ़ गच्च पुराने मंदिर के अवशेष आज भी उच्च कोटी की शिल्पकला को प्रस्तुत करते हैं।

(2) सीताबाड़ीः

बाराँ से 45 कि.मी. पर प्राकृतिक छटा से भरपूर सीताबाड़ी का धार्मिक व रमणीय स्थल है। लक्ष्मण कुण्ड, सीताकुण्ड व वाल्मीकी आश्रम की विशेषता के साथ सीताबाड़ी यहाँ की सहरीया जनजाति का प्रमुख धार्मिक स्थल है।

(3) सोरसनः

सोरसन अभ्यारण्य को पर्यटन की दृष्टि से विकसित किया जा सकता है। यहाँ हजारों की संख्या में कृष्णमृग, सियार, लोमड़ी, चिंकारा व अन्य वन्यजीव, पक्षियों को देखने की व्यवस्था की जाये। इसके अलावा ब्राह्माणी माता का ऐतिहासिक मंदिर पर्यटन की दृष्टि से आकर्षण का केन्द्र बन सकते है।

5.5.2 कोटाः

कोटा में पर्यटन की सम्भावनाऐं मौजूद है उपनिदेशक पर्यटन विभाग के अनुसार यहाँ धार्मिक, ऐतिहासिक, प्राकतिक, शैक्षिक पर्यटन की सम्भावनाऐं मौजूद हैं।

5.5.3. धार्मिकः

यहाँ धार्मिक पर्यटन में मथुराधीश मंदिर, कंसुआ शिव मंदिर, छोटी समाज मंदिर, नीलकंठ महादेव, चन्द्रेसल मठ, शिवपुरी धाम, गोदावरी धाम, अधरशिला, गुरूद्वारा, अगमगढ, पार्श्वकुशल धाम दानबाड़ी पर्यटक स्थल के रूप में विकसित किए जा सकते ह।

5.5.4. ऐतिहासिक पर्यटनः

ऐतिहासिक पर्यटन में यहाँ क्षारबाग, महात्मा गाँधी व महारानी भवन, घंटाघर, सेठ दानमल की हवेली, छामुनिया सेठ की हवेली को विकसित किया जा सकता है।

5.5.5. प्राकृतिक पर्यटनः

प्राकृतिक पर्यटन में मुकुन्दरा हिल्स, चम्बल नदी, उम्मेदगंज पक्षी विहार, जवाहर सागर अभ्यारण्य, गेपरनाथ मंदिर क्षेत्र, गराड़िया महादेव मंदिर क्षेत्र, भीतरीया कुण्ड, चम्बल गार्डन को विकसित किया जा सकता है।

5.5.6. शैक्षणिक पर्यटनः

देश में ख्याति प्राप्त कोचिंग संस्थान, राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, कृषि विश्वविद्यालय, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा विश्वविद्यालय यहाँ शैक्षणिक भ्रमण के लिए शोधार्थी आते हैं, जिससे शैक्षणिक पर्यटन की सम्भावनाऐं काफी मात्रा में मौजूद हैं।

इसके अलावा यहां घड़ियाल सेंचुरी भी है जो पर्यटकों को आकर्षित करती है। 417.17 वर्ग कि.मी. के बफरजोन के कुल 759.99 कि.मी. क्षेत्र का यह प्रदेश का तीसरा टाईगर रिजर्व है, जिसे रणथम्भौर के बाघों की प्रजनन स्थली के रूप में विकसित किया जा सकता है।

5.6 कोटा सम्भाग में आयोजित होने वाले उत्सव व मेलेः

कोटा सम्भाग में प्रसिद्ध मेलों का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है। जो पर्यटको को अपनी ओर भारी संख्या में आकर्षित करते हैं।

5.6.1 कोटाः

(1) दशहरा मेलाः

कोटा का दशहरा मेला जो देश मं लगने वाले मेलों में तीसरा स्थान रखता है। सन् 1979 में कोटा के प्रथम शासक राव माधोसिंह द्वारा स्थापित परम्परा चार सौ वर्षों के बाद आज भी चली आ रही है। सन 1895 ई में महाराव उम्मेद सिंह ने इस मेले के आयोजन का श्री गणेश किया। नगरनिगम व पर्यटन विभाग द्वारा मेले का आयोजन सफलता पूर्वक किया जाता है। इस के साथ ही गणगौर मेला भी हर वर्ष कोटा में आकर्षण का केन्द्र रहता है।

(2.) चम्बल एडवेंचर फेस्टीवलः

इस फेस्टीवल का आयोजन 911 फरवरी को कोटा में किया जाता है। जहाँ
पर्यटक पानी तथा एअर स्पोर्टस का आनन्द प्राप्त करते हैं।

5.6.2. बूँदीः

(1) बूँदी उत्सवः

बूँदी उत्सव का आयोजन नवम्बर माह में ता. 14 से 16 तक चलता है। उत्सव में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन, हस्तशिल्प तथा पारम्परिक कलाकारों द्वारा प्रदर्शन किया जाता है। यहाँ पर्यटकों का भारी संख्या में आगमन होता है। जिस में देशी व विदेशी पर्यटक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भागीदार होने का अवसर प्राप्त करते है। इस समारोह का आयोजन राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा किया जाता है।

(2) कजली तीज महोत्सवः

बूँदी में कजली तीज महोत्सव का आयोजन जुलाईअगस्त में होता है। यह त्यौहार भद्रा के तीसरे दिन मनाया जाता ह। तीज महोत्सव में एक विशाल जुलूस निकलता है। जिसमें भारी संख्या में लोग शामिल होते हैं। जो मुख्य बाजार से गुजरता हुआ आजाद पार्क में जाकर खत्म होता है। इस त्यौहार में हाथी, ऊँट, और बैण्ड तथा स्थानीय कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं।

(3) चन्द्रभागा मेलाझालावाड़ः

यह मेला अक्टूबर से नवम्बर के महीने में आयोजित किया जाता है। इस का आयोजन झालरापाटन में चन्द्रभागा नदी के किनारे किया जाता है। हजारों तीर्थ यात्री यहाँ स्नान करते हैं। यह कार्तिक पूर्णिमा के दिन प्रारम्भ होता है। मेला व्यापार और उत्सव का मिश्रण है। जिसका आयोजन राजस्थान पर्यटन विभाग व पशुपालन विभाग द्वारा किया जाता है।

5.6.4 बाराँः

बाराँ में डोल यात्रा पर्व डोल उत्सव के रूप में मनाया जाता है। यह भाद्रमास के शुक्ल पक्ष की एकादशी अर्थात जल झूलनी एकादशी का यहाँ भव्य शोभायात्रा एवं वार्षिक मेले का आयोजन किया जाता है।

5.6.5 सवाईमाधोपुरः

सवाईमाधोपुर में प्रतिवर्ष गणेश मेला का आयोजन किया जाता है। जो गणेश चतुर्थी वाले दिन लगता है।

संदर्भ सूची

1- Discover, Rajasthan, Depp. of Tourism

2- Department of Tourism

3- Kota Bundi.com

4- sawaimadhopur.in

5- www.tourmyIndia.com/wildlife-santuries/ranthamborenationalpark

6- www.indianholiday.com/fairs and festival/Rajasthan.

7- www.hindi.native Planet.com/jhalawar

8- www.rajasthandirect.com/tourism/jhalawar/places-to-sea-in-jhalawar

9- www. rajasthandirect.com/tourism/Bundi/ places-to-sea-in-Bundi

10.राजस्थान पत्रिका , 27/09/2013

अध्याय षष्ठम

कोटा संभाग में पर्यटन की आधारभूत सुविधाऐं

6.1 यातायात सुविधाऐं

6.1.1 सड़क परिवहन

6.1.2 रेल परिवहन

6.1.3 वायु परिवहन

6.2 आवास सुख सुविधाऐं

6.2.1 कोटा संभाग में आवास सुविधाऐं

6.3 कोटा संभाग में अन्य सुविधाऐं

अध्याय–षष्ठम

कोटा संभाग में पर्यटन की आधारभूत सुविधाऐं

किसी भी उद्योग के लिए आधारभूत सुविधाओं का होना आवश्यक है। इन आधारभ्त सुविधाओं के आधार पर ही वह उद्योग फलताफूलता है। पर्यटन के लिए भी आधारभूत सुविधाओं का होना बहुत ही आवश्यक है। पर्यटन में आधारभूत संरचना में यातायात के साधन, आवास, सुविधा, भोजन एवं पेय पदार्थों की सुविधा, मनोरंजन एवं शॉपिंग आदि सुविधाऐं होती है।[1] इन्हीं सुविधाओं के विकास से पर्यटन का विकास किया जा सकता है। यह आधारभूत सुविधाऐं पर्यटन उद्योग के लिये रीढ़ की हड्डी का कार्य करती है तथा इन्हीं के विकास से पर्यटन उद्योग का विकास होता है।[2] एक पर्यटक स्वाभाविक रुप से वहीं जाना पसंद करता ह जहाँ उन्हें घर से भी अच्छी सुविधाऐं, वातावरण एवं परिस्थितियाँ उपलब्ध हो तथा जहाँ उनका गर्मजोशी के साथ स्वागत हो। पर्यटक अपने अवकाश के क्षणों का अधिकाधिक आनंद लेने हेतु आवश्यकताओं की पूर्ति चाहता है। वे आधारभूत संरचना का ही अंग है।[3] सामान्यतः एक पर्यटक घर से बाहर कदम रखते हुये निम्नांकित आधारभूत सुविधाओं के बारे में गहन विचार करता है एवं ये सुविधाएं उसे जहाँ आसानी से, मितव्ययी रुप से प्राप्त हो जाती है वह वहीं जाना पसंद करता है।[4]

आधारभूत सुविधा में निम्नांकित सुविधाऐं शामिल हैं[5]

(1) यातायात की सुविधा

(2) आवास की सुविधा

(3) भोजन एवं पेय पदार्थों की सुविधा

(4) मनोरंजन एवं शॉपिंग सुविधा

यहाँ इन सुविधाओं का विवेचन कोटा संभाग के संदर्भ में करेगें कोटा सम्भाग में कोटा, बूँदी, झालावाड़, बाराँ, सवाईमाधोपुर को शामिल किया गया

है। कोटा संभाग में पर्यटन स्थलों को देखने के लिये पर्यटक विभिन्न साधनों द्वारा पहुँचते हैं और परिवहन, आवास, मनोरंजन, शॉपिंग, आदि की सुविधाओं का प्रयोग करते हैं यहाँ इसका विवेचन किया जा सकता है।

6.1 यातायात सुविधाऐं :

एक पर्यटक सदव सुरक्षित, सुखद, और सुविधापूर्ण परिवहन साधनों को प्राथमिकता देता है। इसके साथ साथ वे कम पैसों में ज्यादा तेजी से और ज्यादा दूर तक यात्रा करना चाहता है। यहीं पर परिवहन उद्योग को पर्यटकों को आकर्षित करने में चुनौती का सामना करना पड़ता है।[6] पर्यटकों की आवश्यकता के अनुसार परिवहन के साधन उपलब्ध कराना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। पर्यटन के विकास एवं विस्तार में सदैव से ही परिवहन की विशेष भूमिका रही है। इस उद्योग के विकास के लिए यातायात की विभिन्न सुविधाओं का होना आवश्यक होता है। यातायात एवं परिवहन सुविधाओं के अभाव में पर्यटन की गति अवरुद्ध हो जाती है।[7] अतः यातायात के साधन पर्यटकों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाने ले जाने को सुगम बना देते हैं। उसके बहुमूल्य समय की बचत करते हैं। यही नहीं यातायात के साधनों के अभाव में पर्यटन उद्योग की अन्य सामग्री जसे भोजन आदि की तत्काल पूर्ति भी संभव नहीं है। पर्यटन विकास के लिए यातायात के साधन सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों दोनों के द्वारा सुलभ कराये जाते हैं।[8]

कोटा संभाग राजस्थान में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहाँ परिवहन के साधनों की पर्याप्त सुविधाऐं उपलब्ध है। परिवहन के प्रमुख साधन निम्न प्रकार हैं

6.1.1 सड़क परिवहनः

संसार में सड़कों की शुरुआत मेकाडम ने की थी। एक सुदृढ़ परिवहन व्यवस्था किसी भी राज्य के आर्थिक विकास व सुदृढ़ता का द्योतक है। समुद्री जलमार्ग न होने और रेलों के अपर्याप्त विस्तार की स्थिति में राज्य में सड़क ही यातायात का आधारभूत ढाँचा प्रदान करती ह। सड़कें किसी भी राष्ट्र के

विकास की धमनियाँ होती हैं। सडकों के माध्यम से न केवल विकास की प्रक्रिया एवं संसाधन प्रभावित होते हैं। वरन् सड़के व्यक्तियों एवं स्थानों को एकदूसरे के निकट लाती ह। भारत जैसे विशाल देश में इनका सामाजिक एवं आर्थिक समन्वयन व उन्नयन में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है।[9]

भारत में सड़क परिवहन का विकास बड़ी तेजी से हुआ है। लेकिन अभी भी बहुत से क्षेत्र सड़कों से वंचित है। पिछले दो दशकों में सड़कों के निर्माण में काफी तेजी आयी है। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI) द्वारा राष्ट्रीय राजमार्ग का निर्माण कराया जा रहा है। लेकिन राष्ट्रीय राजमार्गो के अलावा अन्य सड़कों की हालत खराब रहती है जिस से सड़को की इस स्थिति को संतोषजनक नहीं कहा जा सकता। अतः आवश्यक है कि पर्यटन के विकास के लिए सड़क मार्गो की स्थिति को सुधारा जाय।

संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) व अन्य यूरोपियन देशों के पर्यटन के विकास में सड़क परिवहन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके अलावा अन्य परिवहन साधन पर्यटकों के बजट को कम प्रभावित करते हैं। अधिकतर पर्यटक दो प्रकार के परिवहन साधनों की माँग करते हैं

1. टूरिस्ट कोच
2. टूरिस्ट कार

पर्यटक कोच व बस में 8 से 30 व्यक्ति सामूहिक रुप से यात्रा करने के लिए एक अच्छे साधन ह यात्रा के दौरान आसपास के दृश्यों का अवलोकन करने के लिए बड़ी व छोटी बसों का प्रयोग किया जा सकता है।[10]

प्रबंध व प्रशासन के उद्देश्य से भारत में सड़क मार्गो को पाँच श्रेणियों में विभाजित किया गया है जो इस प्रकार है[11]

1. एक्सप्रेस वे
2. राष्ट्रीय राजमार्ग
3. राज्य राजमार्ग

4. मुख्य जिला सड़के

5. अन्य जिला व ग्रामीण सड़क

1. एक्सप्रेस वे:

अत्यधिक यातायात वाले मार्ग। इनके निर्माण व रखरखाव का कार्य केन्द्र सरकार व राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण करता है।

2. राष्ट्रीय राजमार्ग:

ये राजमार्ग प्रमुख बंदरगाहों, विदेशी राजमार्गों, राज्य/केन्द्र शासित प्रदेशों की राजधानियों, बड़े औद्योगिक व पर्यटन केन्द्रा तथा सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों को आपस में जोड़ते हैं। इन के संचालन हेतु केन्द्र सरकार जिम्मेदार है। इनके निर्माण व रखरखाव का कार्य राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI) करता है। राष्ट्रीय राजमार्ग देश की कुल सड़क परिवहन सम्बन्धी माँग की लगभग 40 प्रतिशत आवश्यकता को पूरा करता है।

3. राज्य राजमार्ग:

ये राज्य के मुख्य मार्ग ह, जो जिला मुख्यालयों तथा राज्य के मुख्य शहरों को आपस में एवं राष्ट्रीय राजमार्गों से जोड़ते हैं। इनके संचालन की जिम्मेदारी संबंधित राज्य/केन्द्र प्रशासित सरकारों की है।

4. मुख्य जिला सड़क:

जिले के महत्वपूर्ण मार्ग जो विभिन्न जिलों को आपस में तथा मुख्य राजमार्गों से जोड़ते हैं।

5. अन्य जिला व ग्रामीण सड़क:

ये सड़के तहसील मुख्यालयों, खण्ड मुख्यालयों तथा अन्य महत्वपूर्ण सड़कों को जोड़ती ह। ग्रामीण सड़क विभिन्न गाँवों को आपस में तथा अन्य उच्च श्रेणी की सड़कों से जोड़ती हैं।

राजस्थान राज्य में आर्थिक समीक्षा 2012–13 के अनुसार स्वतंत्रता प्राप्ति के समय सड़को की स्थिति काफी असंतोषजनक थी। वर्ष 1949 में सड़कों की कुल लम्बाई 13,553 किमी. थी। उस समय सड़कों का घनत्व मात्र 3.96 किमी. प्रति 100 किमी था तथा एक लाख जनसंख्या पर मात्र 85.24 किमी. सड़के थीं। 31 मार्च 2012 को राज्य में सड़कों की लम्बाई बढ़कर 1,92,551 किमी. होने की संभावना है। राज्य में वर्ष 201112 में सड़कों की सघनता प्रति 100 वर्ग किमी. में 55.52 किमी थी, जो बढ़कर वर्ष 201213 में 56.00 किमी. हो गयी है जो कि राष्ट्रीय औसत 125.02 किमी. से बहुत कम है।

राजस्थान में विभिन्न श्रेणी की सड़कों की लम्बाई

श्रेणी	लम्बाई
1. राष्ट्रीय उच्च मार्ग	7311 किमी.
2. राजकीय उच्च राजमार्ग	10953 किमी.
3. मुख्य जिला सड़के	10255 किमी.
4. अन्य जिला सड़के	24713 किमी
5. ग्रामीण सड़क	139319 किमी.

प्रगति प्रतिवेदन परिवहन विभाग राजस्थान सरकार वर्ष 2012–13 के अनुसार, 1609 किलोमीटर लम्बाई के 9 नवीन राष्ट्रीय राजमार्ग घोषित किए गए। जिस से 31 मार्च 2012 तक राज्य में 30 राष्ट्रीय राजमार्ग हो गए हैं, जिनकी राज्य में लम्बाई 7260 किमी. है। 9 नये राजमार्गों का निर्माण किया जा चुका है, वे है 3 ए, 32 ए, 65 ए, 76 ए, 76 बी, 94 ए, 116 ए, 186 ए, 192ए।[11]

कोटा संभाग राजस्थान का एक प्रमुख भाग है जिस में कोटा, बूँदी, झालावाड़, बाराँ शामिल हैं। अध्ययन में सवाई माधोपुर भी शामिल है इस

लिहाज से देखा जाय तो कोटा संभाग पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

कोटा संभाग सड़क मार्ग द्वारा राजस्थान के साथ ही सीमावर्ती राज्यों के साथ राष्ट्रीय राजमार्ग व राज्य मार्गों से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। सड़क मार्ग से कोटा संभाग के जिलों की दूरी कोटा से इस प्रकार हैः

श्रेणी	लम्बाई
1. बूँदी	36 किमी.
2. बाराँ	72 किमी.
3. झालावाड़	95 किमी.
4. सवाई माधोपुर	110 किमी.

राष्ट्रीय राजमार्गों की दृष्टि से कोटा संभाग को इस प्रकार देखा जा सकता है।

कोटा संभाग से गुजरने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग

राष्ट्रीय राजमार्ग	कोटा संभाग
1. राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 17	जयपुर–टोंक–बूँदी–कोटा–झालावाड़–'इकलेरा
2. राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 76	कोटा–चित्तौड़गढ़–उदयपुर–पिण्डवाड़ा–शिवपुरी
3. राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 90	बाराँ–इकलेरा (बारा–झालावाड)
4. राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 116	सवाईमाधोपुर–टोंक

इस प्रकार कोटा से राजमार्ग नं. 12, 76, बूँदी से 12, 76, 116ए, झालावाड से नं. 12, 76, बाराँ से नं. 76, 90 तथा सवाईमाधोपुर से 11बी, 116 राजमार्ग गुजरते हैं।

प्रमुख शहरों की कोटा संभाग के जिलों की दूरी को इस प्रकार देखा जा सकता है।

गन्तव्य स्थल तथा दूरी (किमी में)

प्रमुख शहर	कोटा	बूँदी	बाराँ	झालावाड़	सवाई माधोपुर
दिल्ली	497	485	569	590	363
मुम्बई	920	929	992	816	997
जयपुर	246	192	318	335	160
इंदौर	255	351	309	235	443
भोपाल	346	375	304	265	455
उदयपुर	288	260	442	360	378
अजमेर	210	170	273	292	264
जोधपुर	381	342	451	450	436
बीकानेर	506	466	506	593	473
भरतपुर	327	312	360	409	225

बूँदी सड़क परिवहन के लिहाज से राजस्थान के प्रमुख शहरों से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। जैसे जयपुर, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, अजमेर, कोटा इसके अलावा आगरा के लिए भी बस सेवा उपलब्ध है बूँदी कोटा संभाग का प्रमुख पर्यटन केन्द्र है जहाँ देशी विदेशी सभी तरह के पर्यटक यहाँ आते हैं।

सवाईमाधोपुर पर्यटन की दृष्टि से बहुत ही महत्व रखता है। सवाईमाधोपुर प्रमुख शहरों तथा नजदीकी जिलों से सड़क मार्ग से अच्छी तरह जुड़ा है। एन.एच.116 (टोंक–सवाईमाधोपुर) और कोटा–'लालसोट मैगा हाईवे शहर से गुजरता है।

स्थानीय परिवहन सुविधाऐं भी आसानी से उपलब्ध हैं और नजदीकी पर्यटन स्थलों जैसे रणथम्भौर राष्ट्रीय पार्क तथा रणथम्भौर किले के लिए जीप, जिप्सी आदि अनेक परिवहन सुविधाऐं, आसानी से उपलब्ध हैं।

झालावाड़ : झालावाड़ कोटा सम्भाग का एक महत्वपूर्ण जिला है जो परिवहन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। झालावाड़ की कोटा से दूरी करीब 95 किमी है, कोटा से झालावाड़ जाने के लिए परिवहन सुविधाऐं आसानी से उपलब्ध हैं।

झालावाड़ एन.एच. 12 द्वारा जुड़ा हुआ है यहॉ से सरकारी रोड़वेज बस सेवा उपलब्ध हैं और निजी परिवहन सेवा भी आसानी से उपलब्ध हैं।

बाराँ : बाराँ कोटा से करीब 72 किमी की दूरी पर स्थित है जो कोटा से राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक76 (अब राष्ट्रीय राजमार्ग 27 है) से जुड़ा हुआ है यह ईस्टवेस्ट कॉरिडोर का हिस्सा है। बांरा से दिल्ली, जयपुर, कोटा, अजमेर, इंदौर, से प्रमुख शहरों के लिए सीधी बस सेवा उपलब्ध हैं। यह मध्य प्रदेश की सीमा से लगा हुआ है। यहाँ आसानी से पहुँचा जा सकता है।

6.1.1. कोटा संभाग में स्थानीय स्तर पर सड़क परिवहन की सुविधाऐंः

1. कोटा में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सड़क परिवहन सुविधाऐं :

कोटा में दो प्रमुख बस स्टैण्ड

1. राजस्थान रोड़वेज बस स्टैण्ड, नयापुरा
2. रावतभाटा बस स्टैण्ड, घोड़े वाले बाबा

तथा अन्तर्राज्यीय बस टर्मिनल, डी.सी.एम. रोड़ से प्राप्त कर सकते हैं तथा शहर में स्थानीय बस सेवा भी उपलब्ध है।

कोटा में ट्रैवल एजेण्ट और टूर ऑपरेटरः

कोटा में स्थानीय स्तर पर बहुत सी ट्रेवल्स एजेन्सी हैं जो घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों को अपनी सेवाऐं उपलब्ध कराती ह जिन में कुछ पर्यटन विभाग से मान्यता प्राप्त व गैर मान्यता प्राप्त ह।

कोटा में स्थित महत्वपूर्ण ट्रेवल्स एजेंसी जो इस प्रकार हैं

1. हाड़ौती टूअर्स, नयापुरा, कोटा (पर्यटन विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त)
2. श्रीनाथ ट्रेवल्स, बूँदी रोड़, कोटा
3. जाखड़ यात्रा, रंगबाड़ी रोड़ केशवपुरा, कोटा
4. शताब्दी यात्रा, गोवर्धन चौराहा, कोटा सिटी
5. सिद्धि विनायक यात्रा, मुख्य सड़क, केशवपुरा, कोटा
6. भ्रमण पर्यटन और यात्रा, हाट रोड़, कोटा जंक्शन
7. विजयवर्गीय टूर और यात्रा

8. तिवारी यात्रा
9. बंशीवाल पर्यटन और सफर, ढाबा वाली गली
10. ब्लैक पर्ल प्राईवेट लिमिटेड, एमबीएस मार्ग, रंगबाड़ी
11. दीप यात्रा एजेंसी, कोटड़ी रोड़ गुमानपुरा, कोटा
12. कोटा टैक्सी, भूतल हवाई अड्डा सर्किल, कोटा
13. मिश्रा टूर एण्ड ट्रेवल्स
14. श्री साँई ट्रेवल्स
15. नागर टूर एण्ड ट्रेवल्स महावीर नगर एक्सटेंशन
16. हमराज टैक्सी सेवा, बोरखेड़ा कोटा
17. अर्जुन यात्रा, रामपुरा बाजार
18. हनीफ यात्रा, शॉपिंग सेंटर, गुमानपुरा
19. अनुराधा बस सेवा, जवाहर नगर
20. स्वरुप बस सेवा, कोटा
21. नवरंग यात्रा, रंगबाड़ी

इनके अतिरिक्त अखिल भारतीय स्तर पर ट्रेवल ऐजेंसिया जो अपनी सेवाऐं प्रदान करती ह, जैसे

1. थॉमस कुक इण्डिया लिमिटेड, 587ए, तलवण्डी, कोटा
2. एअर ट्रिप, 34 वल्लभ नगर एक्सटेंशन, गुमानपुरा के पास

2. बूँदी में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सड़क परिवहन सुविधाऐं :

बूँदी में ट्रेवल एजेण्ट और टूर ऑपरेटरः

बूँदी कोटा संभाग का प्रमुख पर्यटन स्थल होने के कारण काफी पर्यटक यहाँ घूमने आते हैं कोटा से नजदीक स्थित होने के कारण ज्यादातर यात्री कोटा से ही ट्रेवल एजेंट और टूर ऑपरेटर से संपर्क कर लेते हैं। यहाँ कुछ ही टूर और ट्रेवल्स ऑपरेटर्स है जो इस प्रकार हैं

1. बाबू ट्रेवल्स, बाईपास रोड़, बूँदी
2. राजवंश बूँदी, बूँदी पैलेस रोड़

3. रोशन टूर एण्ड ट्रेवल्स, सदर बाजार, बूँदी

4. हनी यात्रा

5. बूँदी टूअर एजेंसी (मान्यता प्राप्त)

3. सवाईमाधोपुर में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सड़क परिवहन सुविधाऐं :

सवाईमाधोपुर में टूर एण्ड ट्रेवल्स ऑपरेटर्स

टैक्सी सेवाः

(1) भारतीय वन्यजीव सफारी रणथंभौर रोड सवाईमाधोपुर

(2) आरआईएफए टूअर्स भारत

टूअर ऑपरेटर्सः

(1) रणथंभौर पार्क, रणथंभौर रोड़, सवाई माधोपुर

(2) टाईगर हार्ट टूर्स और ट्रेवल, रणथंभौर रोड़

(3) रॉयल जंगल सफारी, राज थैला टीचर्स कॉलोनी

(4) अवकाश मंत्र, गीतांजलि एनक्लेव, मालवीय नगर

(5) कॉक्स एण्ड किंग

बस सेवा

(1) अभ्यारण्य पर्यटन और सफर

(2) चौधरी यात्रा

(3) राकेश टूर एण्ड ट्रेवल्स

पर्यटक गाइड सेवाः

(1) भारतीय वन्य जीव सफारी, रणथंभौर रोड़, सवाईमाधोपुर

(2) आरआईएफए टूअर भारत

(3) रॉयल जंगल सफारी

(4) टाईगर हार्ट टूअर्स और यात्रा

4. झालावाड़ में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सड़क परिवहन सुविधाऐं :

झालावाड़ मे टूर एण्ड ट्रेवल्स ऑपरेटरः

(1) बाबा ट्रेवल्स, मंगलपुरा टोंक, झालावाड़

(2) विजय यात्रा

(3) अंबा ट्रेवल्स एजेंसी, बस स्टैण्ड इकलेरा

(4) रॉयल ट्रिप मेकर

5. बाराँ में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सड़क परिवहन सुविधाऐं :

बाराँ में टूर एण्ड ट्रेवल्स ऑपरेटर

(1) प्रेम ट्रेवल्स, कोटा रोड़, बाराँ

(2) श्री रामतीर्थ यात्रा, बाराँ

(3) माँ वैष्णोदेवी एजेंसी

6.1.2 रेल परिवहनः

रेलवे पूरे विश्व में बहुत ही सुविधाजनक और बहुत लोकप्रिय परिवहन रहा है। परन्तु रेलवे पिछले कुछ समय में ऑटो मोबाइल्स और एयरलाइन्स का उत्तरी अमेरिका तथा यूरोप में अधिक प्रयोग होने से रेल का महत्व थोड़ा कम हुआ है। लेकिन फिर भी भारत जैसे देशों में अब भी रेलवे मुख्य परिवहन साधन है।

पर्यटन में रेल्वे का बहुत बड़ा भाग है। पूर्व में एक मात्र रेल्वे ही ऐसा परिवहन साधन था जो पर्यटकों की यात्रा सम्बन्धी आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करता था। लेकिन पर्यटन में रेल्वे का आज भी महत्वपूर्ण योगदान है। व्यवसायिक परिवहन तथा पर्यटन होली डे के लिए रेल्वे का महत्व आज भी बहुत है।

रेल द्वारा यात्रा करने पर अनेक अनुभव प्राप्त होते हैं। पर्यटकों को बहुत से देशों तथा वहां के लोगों को मिलने का अवसर प्राप्त होता है। जब

पर्यटक रेल द्वारा यात्रा करता है। तो विभिन्न इमारतों, कस्बों, हरेभरे खेतों, गन्दी बस्तियों से होकर गुजरता है।

पुराने दिनों में सभी पर्यटक भारत में रेल द्वारा ही यात्रा करते थे और रेल्वे को किराये के रूप में राजस्व की प्राप्ति होती थी। भारत में रेल्वे से पर्यटकों का पारिवारिक रिश्ता रहा है। पर्यटक केवल रेल सुविधा का ही प्रयोग करते थे। क्योंकि पर्यटक स्थल वायु परिवहन से जुड़े हुए नहीं थे। रेल यात्रा काफी आरामदायक तथा किफायती और अच्छी होती थी और आज भी है।

भारतीय रेल्वे तन्त्र एशिया में सब से बड़ा तन्त्र है और विश्व में चौथा सबसे बड़ा तन्त्र है और देश में सबसे बड़ा लोक उद्यम ह। रेल्वे ग्यारह मिलियन लोगों को प्रतिदिन ले जाता है।

लगभग 11,000 ट्रेन 3,368,100 वर्ग किमी आपस में पार करती है। भारत में 60,000 किमी से अधिक रेल रूट्स हैं जो 7,072 रेल्वे स्टेशनों से जुड़ा हुआ है।[12] यहां भारतीय रेल्वे में पांच श्रेणियों में यात्री यात्रा करते हैं। एयर कन्डीशनर प्रथम श्रेणी, वातानुकूलित टूटियर, स्लीपर, वातानुकूलित कुर्सीयान और द्वितीय श्रेणी।

विदेशी पर्यटकों के लिए वातानुकूलित सुविधा तथा प्रथम श्रेणी, आरक्षण 180 दिन पहले किये जा सकते हैं। पर्यटकों के लिए यह सुविधा भी दी गई है कि वह एक कोच और पूरी ट्रेन को आरक्षित करा सकते ह। भारतीय रेल द्वारा यूलरपास की तरह इण्डिरल पास जारी किया गया है जो सात दिन से 90 दिनों की अवधि के लिए, विदेशी पर्यटको के लिए किसी भी श्रेणी की सुविधा के लिए मान्य रहता है। मुख्य रेल्वे स्टेशनों पर फोरेन एक्सचेंज की सुविधाऐं भी उपलब्ध करायी गयी ह।

भारतीय रेल्वे द्वारा कुछ नये प्रोजेक्ट पर्यटकों के लिए प्रारम्भ किये गये हैं जो इस प्रकार हैं:[13]

(1) पैलेस ऑन व्हील्सः पैलेस ऑन व्हील्स एक शाही ट्रेन है जो दिल्ली जयपुर–चित्तौड़गढ़–उदयपुर–सवाईमाधोपुर–जैसलमेर–जोधपुर–भरतपुर–आगर ा–दिल्ली को जोड़ती है।

यह ट्रेन असाधारण लोगों के लिए असाधारण ट्रेन है। ये ट्रेन ऐतिहासिक सुंदरता और आधुनिक सुविधायुक्त है। पैलेस ऑन व्हील्स आधुनिक आवश्यकता से परिपूर्ण है। ट्रेन में प्रत्येक कोच में आरामदेह कमरा जो टेलीफोन सिस्टम से जुड़े हैं। प्रत्येक कोच में सुरक्षित तौर से जुड़े हुए स्नानागार हैं आदि सुविधाऐं दी गई हैं।

पैलेस ऑन व्हील्स के 14 कोचों को राजपूतों के सम्मान में सजाया गया है। जो राजपूतों के समय की स्मृतियों को जगाते हैं।

पैलेस ऑन व्हील्स के गन्तव्यः

दिन 1 बुधवार दिल्लीः शाही यात्रा दिल्ली से प्रारम्भ होती है।

दिन 2 गुरूवार आगमन 2:00 बजे। प्रस्थान 19:30 बजे।

एक शाही आपका स्वागत सजेधजे हाथियों, संगीत और हार के साथ आपका इंतजार कर रहा है। जहां जयपुर में हवामहल, नाहरगढ़ किला आदि का अवलोकन कर सकते हैं।

दिन 3 शुक्रवार जैसेलमेर 08:15 बजे। प्रस्थान 23:00 बजे।

दिन 4 शनिवार जोधपुर आगमन 7 बजे। प्रस्थान 15:30 बजे।

दिन 5 रविवार सवाईमाधोपुर आगमन 4 बजे। पस्थान 10:30 बजे।

दिन 5 रविवार चित्तौड़गढ़ आगमन 16 बजे।

दिन 6 सोमवार उदयपुर आगमन 20 बजे।

दिन 7 मंगलवार भरतपुर आगमन 6:30 बजे। प्रस्थान 11:45 बजे।

दिन 8 मंगलवार आगरा आगमन 14:30 बजे। प्रस्थान 23:00 बजे।

दिन 9 बुधवार दिल्ली पुनः प्रस्थान

2. ग्रेट इण्डियन रोवरः

यह ट्रेन बौद्ध धार्मिक स्थलों के भ्रमण के लिए चलाई गयी है। यह कोलकाता से चलती है और बौद्ध धार्मिक स्थलों जैसे लुम्बनी जहाँ गौतम बुद्ध का जन्म हुआ, बौद्धगया, सारनाथ और कुशीनगर जाती है। ट्रेन में एक प्रार्थना कमरा भी बना हुआ है। इस ट्रेन में वातानुकूलित तथा प्रथम श्रेणी सुविधाऐं दी गयी है।

3. रॉयल ऑरियन्टल

दिल्ली, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, जूनागढ़, सोमनाथ, सेसनगिर, अहमदपुर, पलितना, सरखेज, अहमदाबाद, जयपुर, दिल्ली।

यह ट्रेन सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दो प्रदेशों की यात्रा कराती है। गुजरात और राजस्थान। यह ट्रेन लग्जरी सुविधाओं से युक्त है।

4. भारत दर्शन

भारत दर्शन ट्रेन भारत के विभिन्न हिस्सों में अलग–अलग दिन चलायी जाती है। जो भारत के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक स्थलों का दर्शन कराती है।

पर्यटन को बढ़ाने के लिए रेल्वे द्वारा अन्य कदम भी उठाये गये हैं

(1) ट्रेवल्स एज यू लाइक

रेलवे द्वारा ट्रेवल्स एज यूलाइक समुद्र पार के पर्यटकों के लिए विशेष रूट प्रदान करता है। यह टिकट यात्रा के प्रारम्भ से 21 दिनों तक मान्य रहती है। इस टिकट की विशेषता यह कि पर्यटक देश के किसी भी हिस्से में यात्रा कर सकता है।

(2) रियायती वापसो टिकट

घरेलू और विदेशी दोनों ही के लिए यह सुविधा उपलब्ध रहती है। रेल्वे द्वारा एक विशेष मौसम के दौरान रियायती टिकट हिल स्टेशनों के लिए

दिया जाता है। जिस पर 10: रियायत वातानुकुलित श्रेणी पर यात्रियों को दिया जाता है।

(3) ग्रुप पर्यटन

पर्यटकों के लिए जो ग्रुप में पर्यटन करते हैं। सभी सुविधायुक्त उनकी इच्छा के अनुसार सुविधा के समयानुसार चलायी जाती है। वातानुकुलित श्रेणी सामान्य रूप से उपलब्ध नहीं होती। उनके लिए विशेष रूप से व्यवस्था की जाती है। ग्रुप में कम से कम 12 से 14 पर्यटक हो सकते हैं।

(4) अन्य सुविधाऐं

रेलवे द्वारा ठहरने के कमरों की व्यवस्था की जाती है। प्रमुख स्थानों पर उचित चार्ज के साथ सोने की सुविधा प्रदान की जाती है। प्रशाधन सुविधाऐं भी रेल्वे द्वारा सभी को दी जाती है। इसके अलावा रेलवे द्वारा रेस्टोरेंट भी रेलवे स्टेशनों पर उपलब्ध रहते हं। साथ ही ट्रेनों में भी रेस्टोरेन्ट की सुविधा रहती है। जहाँ भारतीय तथा पश्चिम के व्यंजन उपलब्ध रहते हैं।

(5) ट्रेवल्स एजेन्सी सुविधा:

रेलवे द्वारा मान्यता प्राप्त ट्रेवल्स एजेन्सीयों को रेलवे टिकट जारी करने की अनुमति होती है। ट्रेवल्स एजेन्सी द्वारा रेलवे आरक्षण की सुविधा और रिटायरिंग रूम तथा प्लेटफॉर्म टिकट सुविधा प्रदान की जाती है।

(6) घरेलू पर्यटकों के लिए विशेष ट्रेन

रेलवे द्वारा गर्मी की छुट्टियों में विशेष ट्रेन, किसान विशेष, छात्र और यूथ विशेष और अन्य विभिन्न भारत दर्शन पर्यटन ट्रेनें चलायी जाती है।

7. वातानुकूलित टूरिस्ट कार

विभिन्न श्रेणी के रेल्वे सुविधाओं को प्रयोग करने वाले पर्यटकों के लिए उनकी माँग पर वातानुकूलित कार सुविधाऐं भी उपलब्ध करायी जाती है। भारत के विभिन्न हिस्सों में स्थित बौद्ध धार्मिक स्थलों की यात्रा करने वालों के लिए उत्तर – पूर्व रेलवे द्वारा उन्हें यह सुविधा दी जाती है।

VIP और नेपाल से पहाड़ों तक लम्बी यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए इस तरह की सुविधा उपलब्ध करायी जाती है।

6.1.2.1 कोटा सम्भाग में रेल परिवहन[14]:

कोटा संभाग रेल परिवहन से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। कोटा भारत के सभी प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है। कोटा रेल्वे स्टेशन दिल्लीमुम्बई मुख्य लाइन से जुड़ा हुआ है। कोटा जंक्शन पश्चिममध्य रेल्वे का एक प्रमुख जंक्शन है। कोटा से कोलकाता के लिए सीधे ट्रेन सेवा उपलब्ध है। कोटा जंक्शन के अलावा दक्षिण कोटा शहर म डकनिया रेल्वे स्टेशन है जहाँ अवध एक्प्रेस, देहरादून एक्सप्रेस और रणथम्भौर एक्सप्रेस का ठहराव है।

जयपुर–इन्दौर सुपरफास्ट, उदयपुर सुपरफास्ट (दिल्ली–उदयपुर सिटी एक्प्रेस), दयोदया एक्सप्रेस (जयपुर–जबलपुर एक्सप्रेस), जोधपुर–इन्दौर इन्टरसिटी, हजरत निजामुद्दीन इन्दौर एक्सप्रेस, मरूसागर एक्सप्रेस (अजमेर–ऐर्नाकुलम एक्सप्रेस, जयपुर–चैन्नई एक्सप्रेस, मुम्बई राजधानी एक्सप्रेस आदि।

दिल्ली–मुम्बई मुख्य रेल्वे लाइन कोटा जंक्शन से गुजरती है।

कोटा जंक्शन पश्चिममध्य रेल्वे का प्रमुख स्टेशन है, यहाँ से बहुत सी ट्रेन चलाई जाती ह। जैसे कोटा–दमोह पैसेन्जर (कोटा–कटनी पैसेन्जर) जो कोटा से दमोह (म.प्र.) को जाती है। कोटा–इन्दौर इन्टरसिटी एक्सप्रेस जो मध्य प्रदेश के इन्दौर के अलावा अन्य प्रमुख शहरों को जोड़ती है।

कोटा से राजधानी दिल्ली के लिए जनशताब्दी एक्सप्रेस कोटा से चलाई जाती है।

इनके अतिरिक्त कोटा–बड़ौदरा पेसेन्जर, कोटा–हनुमानगढ़ एक्सप्रेस, कोटा–अजमेर, कोटा–जबलपुर, कोटा–बीना पेसेन्जर, कोटा–पटना एक्सप्रेस जो कोटा से मथुरा, आगरा, कानपुर, लखनऊ और वाराणसी होते हुए पटना जाती है।

कोटा संभाग के अन्य गन्तव्य बूँदी, बाराँ, झालावाड़, सवाईमाधोपुर कोटा जंक्शन से भलीभांती जुड़े हुए हैं।

बूँदी[15]:

रेल मार्ग द्वारा कोटा, नीमच (म.प्र.) चित्तौड़गढ़ और दिल्ली से जुड़ा हुआ है। आप मेवाड़ सुपरफास्ट एक्सप्रेस और देहरादून एक्सप्रेस से बूँदी सीधे आ सकते हैं। अन्य शहरों से बूँदी के लिए कोटा जंक्शन से आसानी से ट्रेन या बस द्वारा पहुँचा जा सकता है। कोटा की बूँदी से दूरी मात्र 35 किमी हैं।

ट्रेनों की जानकारी बूँदी रेलवे स्टेशन से प्राप्त की जा सकती है। बूँदी के लिए अनेक ट्रेन उपलब्ध ह।

उदयपुर सिटी, शिमला एक्सप्रेस, अजमेर–कोलकाता एक्सप्रेस, जयपुर–नागपुर साप्ताहिक एक्सप्रेस, नीमच–कोटा पैसेन्जर, हल्दीघाटी पैसेन्जर।

सवाईमाधोपुर[16]:

सवाईमाधोपुर जंक्शन दिल्ली–मुम्बई ट्रंक रूट पर स्थित है। सवाईमाधोपुर दिल्ली–जयपुर, कोटा मार्ग से जुड़ा होने के कारण यहाँ आसानी से पहुँचा जा सकता है।

सवाईमाधोपुर जंक्शन पर बहुत सी महत्वपूर्ण ट्रेनों का ठहराव है पर्यटन की दृष्टि से सवाईमाधोपुर महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जहाँ पर्यटकों का बड़ी संख्या में जयपुर, दिल्ली व अन्य जगहों से आगमन होता है।

सवाईमाधोपुर पर अनेक ट्रेनों का ठहराव है। दिल्ली से जयपुर और दिल्लीमुम्बई रेल मार्ग पर होने के कारण यहाँ लगभग सभी महत्वपूर्ण ट्रेनों का ठहराव रहता है।

सवाईमाधोपुर रेल्वे स्टेशन पर लग्जरी ट्रेनपैलेस ऑन व्हील्स, द रॉयल राजस्थान ऑन व्हील्स, महाराजा एक्सप्रेस का ठहराव होता है।

झालावाड़[17]:

झालावाड़ शहर कोटा से रेलमार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। झालावाड़ के निकट स्टेशन रामगंजमण्डी जो झालावाड़ से 25 कि.मी., भवानीमण्डी जो झालावाड़ से 4 कि.मी. है जो नजदीकी रेल्वे स्टेशन है रेल द्वारा कोटा से झालावाड़ आसानी रेल द्वारा पहुँचा जा सकता है।

बाराँ[18]

बाराँ रेलवे स्टेशन पश्चिममध्य रेलवे सैक्शन के कोटाबीना मार्ग पर स्थित है। कोटा जंक्शन से बाराँ की दूरी 67 किमी है।

बाराँ स्टेशन पर कम्प्यूटराज्ड आरक्षण की सुविधा भी उपलब्ध है। आरक्षण सुविधा स्टेशन पर 8:00 बजे से 14:00 बजे तक उपलब्ध है। कोटा से बारां के क्ड़ ़ कोटा पैसेन्जर दयोदया एक्सप्रेस, कोटाबीना पैसेन्जर, पुरी एक्सप्रेस, इन्टरसिटी कोटा एक्सप्रेस आदि अनेक ट्रेन उपलब्ध ह ।

6.1.3 वायु परिवहन[19]:

देश में पर्यटकों के लिए वायु परिवहन की सुविधाऐं उपलब्ध ह । शीघ्र एवं तीव्र गति के यातायात के लिए वायु परिवहन सबसे उपयुक्त साधन है।

वायु निगम अधिनियम 1953 के पारित होने के बाद भारत में वायु परिवहन उद्योग का राष्ट्रीयकरण हुआ और एयरलाइन्स और एयर इण्डिया की स्थापना हुई। इण्डियन एयरलाईन्स घरेलू उड़ानों और पड़ोसी देशों तक सीमित है। इण्डियन एयरलाईन्स भारत के 54 शहरों तथा 11 पड़ोसी देशों से जुड़ी है जिन पड़ोसी देशों से जुड़ी है वे बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, मालदीव, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, थाईलैण्ड, सिंगापुर और शारजाह व कोच्चीन और पश्चिमी एशिया से जुड़ी हुई है। इण्डियन एयरलाईन्स द्वारा 300 और 320 बड़ी एयरबसों और बोइंग 737 का प्रयोग किया जाता है।

जबकि एयर इण्डिया को अन्तर्राष्ट्रीय यातायात का जिम्मा दिया गया है जो देश के छः मेट्रोपोलिटन शहरों से जुड़ी है जिनमें मुम्बई, दिल्ली, कोलकाता, चैन्नई, त्रिवेन्द्रम और हैदराबाद अन्तर्राष्ट्रीय सेवाओं से जुड़े हैं।

1990 से भारत सरकार ने भारत के मुख्य मार्गों पर निजी उद्यमियों को वायुयान चलाने की अनुमति दी है। अब ये इण्डियन एयरलाइन्स के प्रतियोगी हैं। कुछ छोटी कम्पनियाँ इण्डियन एयरलाईन्स के मार्गों पर उड़ान भर रही ह ये हैं: ईस्टवेस्ट एयरलाईन्स, ट्राँस भारत एविएशन, जैगसन एयरलाईन्स, सिटी लिंक, एयरवेज आदि। ''मुक्ताकाश'' नीति को आगे बढ़ाने के लिए हाल ही में एयर कॉरपोरेशन अधिनियम में कुछ परिवर्तन लाया गया है।[20]

राजस्थान राज्य में जयपुर में साँगानेर अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है जिससे पर्यटकों को बैंकॉक एवं दुबई की अन्तर्राष्ट्रीय सेवाएँ उपलब्ध कराई जा रही है[21] तथा तीन अन्य हवाई अड्डे रातानाडा एयरपोर्ट जोधपुर में, महाराणा प्रताप एयरपोर्ट डबोक उदयपुर में, कोटा एयरपोर्ट कोटा में स्थित हैं।[22] स्वर्ण नगरी जैसलमेर 31 अक्टूबर 2000 को वायुयान सेवा से जुड़ गया है।

6.1.3.1 कोटा संभाग में वायु परिवहन सेवाः

कोटा में एयरपोर्ट स्थित होते हुए भी यहाँ से किसी प्रकार की वायु परिवहन सेवा प्रारम्भ नहीं की गई है। इसलिये यहाँ से जयपुर स्थित निकटतम एयरपोर्ट सेवा का प्रयोग पर्यटकों व व्यवसायियों द्वारा किया जाता है।

बूँदी से निकटतम एयरपोर्ट जयपुर है जो यहाँ से 180 किमी. और उदयपुर एयरपोर्ट जो 213 किमी.स्थित है का पर्यटकों द्वारा प्रयोग किया जाता है। सवाईमाधोपुर, झालावाड़, बाराँ, के लिए भी जयपुर स्थित एयरपोर्ट ही नजदीकी एयरपोर्ट है।

6.2 आवास सुख सुविधाऐंः

आवास पर्यटन उद्योग का मेरुदण्ड है, आवास एक पर्यटक की आधारभूत एवं प्राथमिक आवश्यकता है जो पर्यटकों के आवागमन को सर्वाधिक प्रभावित करती है। पर्यटन के तीन स्तम्भ ट्रेवल्स, आवास, मनोविनोद हैं। आवास एक ऐसा स्तम्भ है, जो पर्यटन की गतिविधि को मुख्य रुप से प्रस्तुत करता है। जब पर्यटक आता है तो विभिन्न प्रकार की आवास सुविधाओं को माँग करता है जैसेः होटल, मॉटल्स, यात्री आराम गृह, यात्री बंगला आदि पर्यटन उद्योग की आधारभूत संरचना में आवास का महत्वपूर्ण स्थान होने के कारण एक पर्यटन उद्योग के विकास एवं विस्तार के लिए इनका होना अपरिहार्य है क्योंकि एक पर्यटक अपने घर से बाहर कदम रखते समय अपना ध्यान सर्वप्रथम आवास, रूकने, ठहरने की व्यवस्था पर केन्द्रीत करता है। आवास नहीं तो पर्यटन नहीं की अवधारणा को ध्यान में रखते हुये देश मे पर्यटको के आवास के लिए स्वच्छ, साफसुथरे, यातायात के साधनों के निकट हर आय वर्ग के पर्यटकों के अनुरूप पर्यटन आवास व्यवस्था उपलब्ध है जिस से पर्यटक बिना किसी झिझक, बिना किसी संकोच के हँसीखुशी एवं मनोरंजन के साथ अपना समय व्यतीत कर सकें। इसके लिए विभिन्न प्रकार की आवासीय व्यवस्थाए उपलब्ध करायी जाती हैं।

संक्षेप में विभिन्न प्रकार की आवास व्यवस्थाओं को देखा जा सकता है:[23]

1. पाँच सितारा (फाईव स्टार) डोलक्स होटल

   इस प्रकार के होटल मुख्य तौर पर बड़े शहरो मे होते हैं और इन में 200 से लेकर 800 तक कमरे होते हैं। इस श्रेणी के कुछ होटलों में हजार से ऊपर कमरे भी होते हैं। रेस्तराँ की संख्या, लॉबी का आकार, व्यापार केन्द्र सुविधाओं, स्विमिंग पूल आदि के आधार पर उन का अन्तर्राष्ट्रीय मानक से वर्गीकरण किया जाता है। इन होटलों में आमतौर पर अमीर पर्यटक ठहरते हैं।

   इसके अलावा अन्य श्रेणीयों के होटल भी होते हैं

   1. वन स्टार
   2. टू स्टार
   3. थ्री स्टार
   4. फोर स्टार
   5. फाइव स्टार डीलक्स

   स्टार श्रेणी प्रदान करने के लिए भारत सरकार के पर्यटन विभाग ने होटल और रेस्तरां मंजूरी और वर्गीकरण समिति, स्थापित की है, जो निर्धारित शर्तें पूरी करने वाले होटलों को यथास्थिति स्टार श्रेणी में शामिल करती है।

2. प्रथम श्रेणी के होटल

   यह श्रेणी स्टार श्रेणो के होटलों के नीचे की श्रेणी है। ये होटल शहरों तथा मध्यम कोटि के शहरो मे स्थित होते हैं। इन में स्टार होटलों जैसी सुविधाऐं होती हैं इनमें पर्यटक और व्यापारीगण ठहरते ह।

3. बिना स्टार वाले होटल :

   पर्यटक स्थलों पर ऐसे अनेक छोटेछोटे होटल आपको मिल जाऐगें जो किसी वर्गीकृत श्रेणी के अन्तर्गत नही आते पर अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार कई पर्यटक इन में भी ठहरते ह।

4. विरासत होटल :

ऐतिहासिक स्थलों को जाने वाले पर्यटकों में ऐतिहासिक महलों के प्रति गहरा आकर्षण होता है। उनके मन में राजाओं की तरह रहने का सपना होता है। पर्यटकों की इस रूचि को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने विरासत होटलों को प्रोत्साहन देना शुरू किया है। किलों, महलों, और हवेलियों के मालिकों को वित्तीय सुविधाऐं और रियायतें प्रदान कर पर्यटन विभाग ने उन्हें अपनी संपदा को विरासत होटलों में परिवर्तित करने के लिए प्रोत्साहित किया है। इस योजना के तहत कई क्षेत्रों में विरासत होटलों का निर्माण हुआ है।

5. अतिथि गृह :

नगरो, छोटे शहरों तथा कस्बों में इस प्रकार की आवास इकाईयाँ देखने को मिलती है। इन अतिथि गृहों में ज्यादातर ऐसे पर्यटक ठहरते हैं, जो अकेले यात्रा के लिए निकलते हैं और उस स्थान विशेष की संस्कृति को जानने पहचानने के लिए अथवा अन्य किसी कारणों से लम्बे समय तक अकेले रहते हैं, यहाँ ठहरने का खर्च भी अपेक्षाकृत कम होता है।

6. कैंप आवास :

यह पर्यटकों के लिए अस्थाई आवास सुविधा होती है, जो वर्तमान में काफी लोकप्रिय हो रही है। इस मे अपेक्षाकृत कम पैसे लगाने पड़ते है। इस में 50 से 500 तम्बूओं के बने आवास होते है। इन में सुविधाऐ (गुसलखाना) कमरे से ही लगा होता है। ऐसे अस्थाई आवास दूरस्थ इलाकों जैसे वन्य जीव उद्यान या अभ्यारणया के निकट बनाए जाते ह।

7. अन्य आवास व्यवस्था :

उपर्युक्त आवास योजनाओं के अतिरिक्त अनेक वैकल्पिक पर्यटन आवास व्यवस्था होती है, जिन मे पर्यटक ठहरते है। जैसे पेइंग गेस्ट,

निजीगृह, कैम्पिंग साईट्स, यूथ हॉस्टल, धर्मशाला, पर्यटन विश्राम गृह आदि

6.2.1 कोटा संभाग में आवास सुविधाऐंः

कोटा संभाग जिस में कोटा, बूँदी, झालावाड़, सवाईमाधोपुर, बाराँ शामिल ह, जहाँ सभी प्रकार की आवास सुविधाऐं उपलब्ध हैं। यहाँ उनका संक्षेप मे उल्लेख किया जा सकता है।

6.2.1.1 कोटा में आवास सुविधाऐं[24] :

कोटा में मान्यता प्राप्त होटलों को क्रमबद्ध रूप से देख सकते है :

1. द ग्राण्ड चन्दिराम, झालावाड़ रोड़, कोटड़ी गोरधनपुरा, कोटा
2. होटल फिजा पैलेस, स्टेशन रोड़, कोटा
3. होटल मधुश्री तलवण्डी, रंगबाड़ी रोड़, कोटा
4. होटल मिनाल रेजिडेंसी (ए रिसोर्ट होटल)
5. होटल सुरपिन पैलेस, स्टेशन रोड़, कोटा
6. होटल सूर्या प्राईम, झालावाड़ रोड़, कोटड़ी, कोटा
7. होटल सूर्या रॉयल, झालावाड़ रोड़ कोटड़ी, कोटा
8. होटल स्वागत, तलवण्डी, रंगबाड़ी रोड़, कोटा
9. होटल द लेजर इन, कोटा
10. होटल उदय रेजीडेन्सी, तलवण्डी, रंगबाड़ी रोड़ कोटा
11. होटल मरूधर, छावनी कोटा
12. होटल किशन कुंज, कोटा
13. होटल वन्दना, झालावाड़ रोड़, कोटा
14. होटल पनघट, स्टेशन रोड़, कोटा
15. होटल तुषार, कोटा
16. गायत्री रेजीडेन्सी, कोटा
17. होटल चित्रकूट, स्टेशन रोड़, कोटा
18. होटल विक्रांत, कोटा

19.होटल शिवम्, कोटा

20.होटल खजांची, स्टेशन रोड़, कोटा

21.होटल सम्राट, नयापुरा कोटा

22.होटल वीनस प्लाजा, कोटा

23.होटल मीरा इन, स्टेशन रोड़, कोटा

24.होटल फूल प्लाजा, स्टेशन रोड़ कोटा

25.होटल राजश्री, कोटा

26.होटल अजित कोटा, आदि

आर.टी.डी.सी. द्वारा संचालित होटल[25]

कोटा में आर.टी.डी.सी. द्वारा संचालित दो होटल है

1. होटल चम्बल, नयापुरा कोटा
2. मोटल चन्द्रवती, झालावाड़ रोड़, कोटा

कोटा में स्टार होटल :

कोटा में स्टार होटल की श्रृखंला में थ्री स्टार होटलों की संख्या 4, टू स्टार होटलदो, वन स्टार होटल 19 और बजट होटल 14 है

कोटा में हैरिटेज होटल की सुविधा :

कोटा मे हैरिटैज होटल की श्रृखंला में तीन होटल है:

1. उम्मेद भवन पैलेस
2. पलकिया हवेली
3. सुखधाम कोठी

इन विरासत होटलों में ऐतिहासिक राजपूताना शैली को बनाये रखकर पर्यटकों को एक नया अनुभव प्रदान किया जाता है। यह होटल ऐतिहासिकता के साथ आधुनिक सुखसुविधाओं से परिपूर्ण है।

1. उम्मेद भवन पैलेस[26] :

उम्मेद सिंह द्वितीय, कोटा शहर के भीतर मध्ययुगीन किले में रहते थे, जो 1900 के प्रारम्भ में कोटा के राजा सत्तारूढ़ थे, वे अपने निजी इस्तेमाल के लिए एक आधुनिक महल चाहते थे। इसके लिए उन्होनें एक महल बनाने का फैसला किया। इस भवन का निर्माण 1905 में प्रारम्भ किया गया। यह भवन भारतअरबी शैली में बनाया गया था। उम्मेद भवन पैलेस की अपनी खुद की एक प्रभामण्डल है। उत्तम शाही विरासत के साथ रसीला लॉन और आँगनों, सुरम्य छत, संगमरमर, पुराने शिकार ट्रॉफियाँ महल की विशेष विशेषताऐं हैं। महल में 32 कमरें आधुनिक सुविधाओं से युक्त ह और समकालीन जीवन और राजस्थान की संस्कृति का आभास कराते ह।

सेवाऐं और सुविधाए:

सामान्य सुविधाऐं :

कक्ष सेवा, इंटरनेट, टी.वी., भारतीय और चाइनीज व्यंजन, बार, क्रेडिट कार्ड, मनी एक्सचेंज, साईकिलिंग ट्रेक, बैडमिंटन कोर्ट, कैरम और शतरंज, चिकित्सा आदि सेवाऐं उपलब्ध हैं।

सम्मेलन और बैठक की सुविधा :

सम्मेलन और बैठकों के लिए होटल में सुविधा उपलब्ध है। जिसमें बैंक्वेट हॉल दरबार महल, महकमाएखास, आऊटडोर लॉन, इनर लॉन, छत के ऊपर, आँगन उपलब्ध है।

आवास :

उम्मेद भवन में कुल 32 कमरे है जिनमें :

14 डीलक्स कमरे

17 रॉयल सूईट्स

01 प्रेसिडेशियल सुइट

टैरिफ रूपये में : मान्य 10 अक्टूबर 2014 से 30 सितम्बर 2015 तक

कमरे का प्रकार	सिंगल	डबल
डीलक्स रुम	6000 रु.	7000 रु.
रॉयल सूईट	7500 रु.	8500 रु.
प्रेसिडेंशियल सूईट	10,000 रु.	12000 रु.

टैक्सीजः लक्जरी टैक्स 5ः, सर्विस टैक्स कक्ष पर 7.42ः, वैट 5ः,

2. पलकिया हवेली[27]:

हवेली 18वीं सदी में पारम्परिक राजपूत शैली में बनायी गयी थी और ठाकुर देवसिंह जी द्वारा समकालीन वास्तुकला का एक उत्कृष्ट नमूना है। हवेली का एक दिलचस्प रंग प्रवेश द्वार है, जो केन्द्रीय आँगन की और जाता है। यह सुंदर नक्काशीदार बालकनियाँ, आकर्षक आँगनों, खुली छतों, सुंदर उद्यान और पुराने डिजायन के कपड़े और एंटीक फर्नीचर के साथ आरामदायक कमरे ह। हवेली अन्तर्राष्ट्रीय पारम्परिक माहौल में अत्याधुनिक सुविधाऐं प्रदान कर पर्यटकों के लिए खोल दिया गया है।

आवास और सुविधाऐं[28]

हवेली के सभी कमरे और सूईट्स समृद्ध और मिसाल के इतिहास और संस्कृति को प्रतिबिम्बित करते हैं। शांतिपूर्ण वातावरण के साथ बड़े कमर और सूईट्स वर्तमान सुविधाओं के साथ अतीत की उत्तम विलासमयता को बरकरार रखा गया है। पुराने परिवार की तस्वीरें, कलाकृतियों और शाही जीवन एवं स्वाद को बनाये रखने की कोशिश की गयी है।

पुराने इतिहास को बरकरार रखते हुए आधुनिक सुविधाओं, टेलीफान, वातानुकूलित कमरे, आसपास के बाथरूम, गर्म व ठण्डे पानी की व्यवस्था की गयी है।

टेरिफ: 1 अक्टूबर से 31 सितम्बर 201314

सिंगल	2300रू
डबल	2800रू
सूईट्स	3400रू
कर	17.42 प्रतिशत

कोटा में लॉज सेवा:

1. श्री आंनद लॉज, कोटा जंक्शन
2. सुखधाम लॉज
3. शर्मा लॉज
4. विक्रम लॉज
5. जनता लॉज

कोटा में रिसोर्ट:

1. सावन फुहार वाटर पार्क

   N.H.12, Kaithouni
2. माहेश्वरी रिसोर्ट और गार्डन रेस्टोंरेण्ट

   NH.12, Bundi Road

3. सुखधाम कोठी, सिविल लाइन, कोटा[29]:

उत्कृष्ट नक्काशीदार पत्थर बालकनियां और खुली छतों के साथ बड़े कमरे सुखधाम में ठहरने के लिए बहुत खास है। इसके सभी 15 कमरे अपनी अनोखी शैली और सुरम्य वातावरण है। प्रत्येक कमरे में एक विशाल और आधुनिक बाथरूम है। इसके साथ ही अन्य सुविधाऐं भी शामिल हैं

1. केबल टी.बी.
2. टेलीफोन
3. एयर कंडीशनिंग
4. रूम सर्विस इंटरनेट
5. बड़े लॉन व बगीचे

सुखधाम कोठी में मूल्य रेंज (प्रति रात) 2100–3500 रू है।

6.2.1.2 बूँदी में आवास सुविधाऐं[30]:

कोटा संभाग में बूँदी एक प्रमुख पर्यटक स्थल के रूप में एक विशेष स्थान रखता है। यहाँ पर्यटकों के लिए आवास सुविधा पर्याप्त रूप से उपलब्ध ह। बूदी होटलों को क्रमबद्ध रूप में यहाँ देख सकते हैं। जो इस प्रकार है:

1. रॉयल रिट्रीट होटल, गढ़ पैलेस, बूँदी
2. हाड़ौती पैलेस, रंजीत टॉकीज के पास, कोटा रोड़, बूँदी
3. बूँदी विला, मोती महल के पीछे, बूँदी
4. उम्मेद बाग रिसॉर्ट, बूँदी
5. शिवम् पर्यटक गेस्ट हाऊस, बूँदी
6. वृन्दावती होटल, जैत सागर, बूँदी
7. ईश्वरी निवास होटल, सिविल लाईन्स, बूँदी
8. अन्नपूर्णा हवेली, नवल सागर झील के पीछे, बूँदी
9. कासेरा स्वर्ग, सुरंग गेट के पास, बूँदी
10. नवल सागर पैलेस होटल, बूँदी
11. हवेली ब्रजभूषणजी, आयुर्वेदिक अस्पताल के पास, बूँदी
12. होटल प्रतापगढ़ हवेली, बूदी
13. देव निवास, बूँदी
14. राजमहल पैसेल होटल और रिसोर्ट, बूँदी
15. नई हवेली, बूँदी
16. चंदा रेजीडेंसी होटल, बूँदी
17. डायमंड होटल, बूँदी
18. सुवालका होटल, बूँदी
19. ग्रांड परमेश्वरी होटल, बूँदी
20. हवेली राज पैलेस, बूँदी
21. आर.एन.हवेली गेस्ट हाउस, बूँदी
22. हवेली उमा मेघ, बूँदी

23. बूँदी पर्यटक पैलेस
24. हवेली परिहार, बूँदी
25. लेक न्यू गेस्ट हाउस, बूँदी
26. सुख महल, बूँदी
27. बूँदी इन, बूँदी

आर.टी.डी.सी. द्वारा बूँदी में संचालित होटलः

आर.टी.डी.सी. द्वारा बूँदी में एक होटल वृंदावती संचालित किया जा रहा है। जिसकी रेलवे स्टेशन और बस स्टेशन से दूरी मात्र 3 किमी है।

बूँदी में विरासत होटल की आवास सुविधाः

बूँदी में विरासत होटल जो बूँदी के ऐतिहासिक महत्व को प्रकट करते हुए पर्यटकों के लिए आधुनिक सुविधायुक्त हैं। इस प्रकार हैं

बूँदी हवेली, बूँदी
बूँदी विलास, बूँदी
देव विलास, बूँदी
हवेली बृजभूषणजी, बूँदी
ईश्वरीय निवास, बूँदी
नई हवेली, बूँदी
नवल सागर पैलेस, बूँदी

1. बूँदी हवेलीः

बूँदी हवेली, पुराने शहर के दिल में एक विरासत सम्पत्ति, यह पृष्ठभूमि, गढ़ पैलेस और तारागढ़ का किला है। हाल ही में इस सुरूचिपूर्ण नए बूटीक होटल डीलक्स मानक से 12 कमरे उपलब्ध कराता है, जो आधुनिक सुविधाओं से युक्त ह। कमरे पुराने शहर के तेजस्वी विचारों, महल, किले और झील को देखने के लिए झरोखे शामिल ह।

आवासः

होटल बूँदी हवेली खूबसूरत और आधुनिक सुविधायुक्त है।

कक्ष सेवा

कॉफी और चाय मेकर

लॉन्ड्री

गर्म और ठण्डे पानी की व्यवस्था

मनी एक्सचेंज

ट्रेवल डेस्क

इन्टरनेट, टेलीफोन

गांव भ्रमण

व्यापार सुविधा

टेरिफ और आरक्षणः

कमरे का प्रकार	कमरों की संख्या	रिहाईश	भारतीय रूपये दरें
मानक	02	दो गुना	1150 रु.
सुपर डीलक्स ए/सी	08	दो गुना	2500 रु.
हवेली सुइट	02	दो गुना	4000 रु.
अतिरिक्त विस्तर		01	500 रु.

2. बूँदी विलास[32]:

बूँदी विलास विरासत होटल के तौर पर 2008 में खोला गया है। इसमें सात सुरूचिपूर्ण ढंग से बहाल कमरे ह ए/सी और आधुनिक सुविधाओं से पूर्ण हैं।

3. देव निवास[33]

देव निवास होटल सदर बाजार के मध्य में स्थित है होटल में 21 कमरे है। जो तीन श्रेणियों स्टेण्डर्ड, डीलक्स, और सूईट्स में उपलब्ध हैं।

टेरिफ और आरक्षणः

श्रेणी	टेरिफ
मानक के कमरे	1200/
डीलक्स कमरे	2995/
सूट	4000/

विलासिता कर 10 प्रतिशत सर्विस टेक्स 7.42 प्रतिशत

भोजनः

ब्रेकफास्ट रु. 275

लंच रु. 400

रात का खाना रु. 450

भोजन मूल्य पर टैक्स 5 प्रतिशत

4. हवेली बृजभूषण जी[34]:

यह हवेली ब्रज भूषण जी बूँदी, भव्य बोहरा ब्रज भूषण परिवार के अन्तर्गत आती है। यह हवेली 200 साल पुराना होटल है। हवेली ब्रजभूषण जी आयुर्वेदिक अस्पताल के सामने स्थित है। सुंदर मोती महल (0.2 किमी.) और निर्मल नवल सागर झील आसानी से हवेली के पास सुलभ पर्यटक स्थल हैं। मोती महल एक अलंकृत छत प्रदर्शन के शीशे के कार्य से किले का एक राजसी शाही अपार्टमेंट है।

हवेली बृजभूषण जी से कोटा हवाई अड्डे की दूरी 45 किमी. (लगभग), जयपुर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे की दूरी 199 किमी. (लगभग), कोटा रेलवे स्टेशन से दूरी 46 किमी. (लगभग), बूँदी रेलवे स्टेशन से दूरी 8 किमी. (लगभग) है।

होटल में सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं।

- 24 घण्टे कक्ष सेवा
- एयर कंडीशनिंग
- पार्किंग
- इंटरनेट, टवल्स डेस्क, डॉक्टर

व्यापार केन्द्र एक व्यापार यात्रा पर मेहमानों के लिए उपलब्ध है। पयटक मसाज और भाप स्नान का उपयोग कर सकते हैं।

ब्रज भूषणजी हवेली के कमरे :

हवेली में तीन प्रकार के कमरे उपलब्ध हैं।

सामान्य कमराः

इस प्रकार के कमरों मं डीवीडी प्लेयर तथा पुस्तकालय सुविधा उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त

- एयरकंडीशनिंग
- सुरक्षा
- टेलीफोन
- हेयर डायर
- इंटरनेट
- निजी बाथरुम
- रंगीन टी.वी.

स्टैंडर्ड कमराः

इस प्रकार के कमरों में डीवीडी प्लेयर व पुस्तकालय के अतिरिक्त एयर कंडीशनिंग, मिनीबार, सुरक्षा, टेलीफोन, हेयर डायर, इंटरनेट, निजी बाथरुम, रंगीन टी.वी. आदि।

डीलक्स कमराः

एयरकंडीशनिंग, सुरक्षा, टेलीफोन, हेयरडायर, इंटरनेट, निजी बाथरुम, रंगीन टी.वी. आदि।

5. ईश्वरीय निवास[35]

ईश्वरीय निवास हाडा विरासत और जातीय संस्कृति का प्रतीक है जहा पयटक शाही आथित्य पाते हैं। हवेली बूंदी राज्य के दीवान के लिए महाराव राजा ईश्वरी सिंह के शासनकाल के दौरान बनाया गया था।

ईश्वरीय निवास हेरिटेज रिजॉर्ट सभी आधुनिक सुविधाओं के साथ आरामयुक्त व सुसज्जित कमरों की एक किस्म प्रदान करता है। सिंगल और डबल कमरे सस्ती कीमतों पर उपलब्ध हैं। आर्थिक कमरे के साथ उपलब्ध ह।

आवास सुविधाः

सभी कमरे संलग्न बाथरुम और अन्य सुविधाओं से अच्छी तरह से सुसज्जित है।

टैरिफ और आरक्षणः

कमरा का प्रकार	किराया (रुपये में)
सिंगल	**400 सी.पी.**
डबल	**4500 सी.पी.**
सूट कमरे	**500 सी.पी.**
अतिरिक्त बिस्तर	**500**

होटल में भारतीय, चीनी और यूरोपीय भोजन उपलब्ध हैः

लंच और डिनर	कीमत
ब्रेक फास्ट	400 रु.
बजट नाश्ता	200 रु.

6. नई हवेली[36]

नई हवेली सभी आधुनिक सुविधाओं के साथ 06 ए.सी. कमरे उपलब्ध है। सभी कमरों में पुरानी वास्तुकला की छाप दिखाई देती है। हवेली के कमरों को पारम्परिक रुप से सजाया गया है।

रेस्तराँ और बारः

होटल नई हवेली में शाकाहारी भोजन परोसा जाता है। बार की व्यवस्था उपलब्ध नहीं है।

अन्य सुविधाएँ और सेवाएँः

पारम्परिक रुप से सजाये गये बड़े कमरे, बूँदी स्कूल चित्रों के संग्रह, महल, किले और शहर, वाईफाई कनेक्टिविटी, शॉपिंग क्षेत्र, विरासत की सैर मानचित्र के आकृष्ट छत देख सकते हैं।

7. नवल सागर पैलेस[37]:

नवल सागर पैलेस आधुनिक सुखसुविधाओं से युक्त विरासत होटल है जहाँ वेज और नॉनवेज दोनों तरह के भोजन की व्यवस्था उपलब्ध है।

होटल की सुविधाएँ और सेवाएँः

कॉल, कक्ष सेवा, पार्किंग, मुद्रा विनिमय, ट्रेवल डेस्क, इन्टरनेट, डॉक्टर ऑन कॉल व्यवस्था उपलब्ध है।

डीलक्स होटलः

बूँदी में दो डीलक्स होटल उपलब्ध हैं, जहाँ सभी प्रकार की आधुनिक सुविधा उपलब्ध है।

(1) हाड़ौती पैलेस

(2) उम्मेद बाग रिसोर्ट

6.2.1.3 सवाई माधोपुर में आवास सुविधाऐं[38]:

कोटा संभाग में सवाई माधोपुर पर्यटन की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। यहाँ प्रतिवर्ष अनेक पर्यटक देशी व विदेशी वन्य जीव दर्शन व अन्य ऐतिहासिक महत्व के स्थानों को घूमने के लिए आते हैं। यहाँ आवास सुविधा काफी अच्छी है। सभी तरह के होटलों, कैपों की व्यवस्था है। फाईव स्टार होटल, हैरिटेज होटल व अन्य सामान्य प्रकार के होटल व गेस्ट हाऊस पर्यटकों के लिए उपलब्ध हैं। सवाई माधोपुर में लगभग 45 होटल हैं जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

1. ऑबेराय पैलेस, रणथंभौर रोड़, सवाई माधोपुर
2. अंकुर रिजोर्ट, रणथंभौर रोड़, सवाई माधोपुर
3. देव विलास, रणथंभौर रोड़, सवाई माधोपुर
4. ग्रीन व्यू, रणथंभौर रोड़, सवाई माधोपुर
5. हमीर वन्य जीव रिजॉर्ट, सवाई माधोपुर
6. होटल अंता पैलेस, रणथंभौर नेशनल पार्क रोड़, सवाई माधोपुर
7. होटल सिटी हार्ट, रणथंभौर नेशनल पार्क रोड़, सवाई माधोपुर
8. होटल कॉन्टिनेंटल, रणथंभौर रोड़, सवाई माधोपुर
9. होटल देव पैलेस, रणथंभौर नेशनल पार्क रोड, सवाई माधोपुर.
10. होटल ग्रीन वैली, रणथंभौर नेशनल पार्क रोड़, सवाई माधोपुर
11. होटल माउंटेन व्यू, रणथंभौर, सवाई माधोपुर
12. होटल रणथंभौर राष्ट्रीय रीजेंसी, सवाई माधोपुर
13. होटल रिद्धी सिद्धी, रणथंभौर, सवाई माधोपुर
14. होटल सैफ, रणथंभौर रोड़, सवाई माधोपुर

15.होटल अभ्यारण्य रिजॉर्ट, रणथंभौर रोड़, सवाई माधोपुर
16.होटल वृन्दावन पैलेस, सवाई माधोपुर
17.ओम रुद्रप्रिया छुट्टी रिजॉर्ट, सवाई माधोपुर
18.राजपूताना रिजॉर्ट, सवाई माधोपुर
19.रणथंभौर कोठी, सवाई माधोपुर
20.रणथंभौर स्वर्ग, सवाई माधोपुर
21.रणथंभौर सिद्धीविनायक रिजॉर्ट, सवाई माधोपुर
22.शेर विलास रणथंभौर, सवाई माधोपुर

सवाईमाधोपुर के महत्वपूर्ण होटलः

1. ओबेराय वन्या विलास रिजॉर्टः

ओबेरॉय वन्यविलास एक पाँच सितारा होटल है, जहाँ पर्यटकों के लिए सभी प्रकार की लक्जरी सुविधाऐं उपलब्ध है।

आवासः

वन्य विलास द्वारा टेटों को आश्चर्यजनक तौर से सजाया गया है। यह होटल 25 लक्जरी टेंट प्रदान करता है, जिनमें लकड़ी के फर्श हैं। सभी टेंट वातानुकूलित हैं।

प्रत्येक टैण्ट में 24 घण्टे कक्ष सेवा, व्यक्तिगत बार, सेटेलाईट टी.वी., एलसीडी, टी.वी. कॉफी/चाय, वायर्ड और वायरलैस ब्रॉडबैण्ड सुविधा के साथ धूप स्नान और आउटडोर भोजन की व्यवस्था की गयी है।

कमरों में अन्य प्रथम श्रेणी की सुविधाऐं भी उपलब्ध ह

- दैनिक समाचार पत्र
- मिनीबार
- हैयर ड्रायर
- बाथ ट्यूब्स

- शेवर एडेप्टर
- दैनिक ताजा फलों की टोकरी

अन्य सुविधाऐं

- 24 घण्टे इंटरनेट
- सामान का गोदाम
- कार किराए पर लेना
- जंगल सफारी
- स्विमिंग पुल
- व्यायाम शाला
- करेंसी एक्सचैंज
- हाथी की सवारी

2. होटल नाहरगढ़ रणथम्भौर[40]:

नाहरगढ़ रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान पड़ोसी अरावली पर्वतमाला ''पहाड़ियों पर बसा एक विरासत होटल है।'' 16वीं सदी में बना ''चार बाग'' से घिरा पूरा एक पारम्परिक राजपूत शिकार महल की तरह बनाया गया है। यहाँ से आसपास के घास के मैदानों में अपने चंचल कृत्यों का प्रदर्शन, कई जानवरों और पक्षियों को देख सकते हैं। 68 अल्ट्रा आलीशान कमरे के साथ यह आवास और भोजन के लिए सर्वोत्तम सुविधा प्रदान करता है।

कमरे एवं सुविधाऐं:

होटल नाहरगढ़ रणथम्भौर में कमरों में सभी आधुनिक सुविधाऐं टेलीफोन, एसी, लॉन्ड्री सेवा, कॉल पर डॉक्टर, पैसा एक्सचैंजर, ट्रेवल्स डैस्क, निःशुल्क इंटरनेट, वाईफाई सुविधा, कार पार्किंग, मनोरंजन क्षेत्र, स्विमिंग पुल, पुस्तकालय हॉल आदि सुविधाऐं उपलब्ध हैं।

शुल्कः

दरें ए.पी. योजना (आई.एन.आर. में दर)

स्टैण्डर्ड सिंगल	रु. 11,500/
स्टैण्डर्ड डबल	रु. 14,000/
डीलक्स सिंगल	रु. 14,000/
डीलक्स डबल	रु. 16,600/
सुपर डीलक्स सिंगल	रु. 15,300/
सुपर डीलक्स डबल	रु. 18,000/
अतिरिक्त व्यक्ति	रु. 4,500/

टैक्स – 17.42ः

दरें सी.पी. योजना (आई.एन.आर. में दर)
(बिस्तर और नाश्ता)

स्टैण्डर्ड सिंगल	रु. 9,300/
स्टैण्डर्ड डबल	रु. 10,800/
डीलक्स सिंगल	रु. 11,700/
डीलक्स डबल	रु. 13,300/
सुपर डीलक्स सिंगल	रु. 13,300/
सुपर डीलक्स डबल	रु. 15,000/
अतिरिक्त व्यक्ति	रु. 3,300+ टैक्स

टैक्स 17.42ः

3. ट्री हाऊस अनुरागा रिजॉर्ट[41]:

ट्री हाऊस अनुरागा रिजॉर्ट, रणथंभौर रोड़ पर स्थित एक पाँच सितारा लक्जरी होटल है। होटल में प्राचीन सफेद स्थापत्य शैली में क्कवतपदह विवरण में उत्कीर्ण किया गया है। होटल अवकाश और व्यापार यात्रीयों के लिए अच्छी आवास सुविधा प्रदान करता है। होटल में स्विमिंग पुल की व्यवस्था की गयी है।

आवासः

ट्री हाऊस अनुरागा आवास की एक विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध कराता है। 40 विशाल डीलक्स और प्रीमियर कमरे और रणथंभौर में चार आलीशान सूईट्स हैं। सभी कमरों में बाथरुम संलग्न ह। सेटेलाईट टी.वी., सभी कमरे वनस्पति पैटर्न में सजे हुए हैं।

सुविधाऐंः

- व्यायाम शाला
- स्विमिंग पुल
- स्पा
- बच्चों की देखरेख और बच्चों की सेवाऐं
- बच्चों के लिए आउटडोर और इनडोर खेल क्षेत्र
- सम्मेलन कक्ष
- लिफ्ट की सुविधा
- कॉल पर योग
- वाई फाई सेवा, कपड़े धोने की सुविधा, विदेशी मुद्रा एक्सचेंज

ट्री हाऊस अनुरागा रिजॉर्ट टैरिफः

मान्य 1 अक्टूबर 2014 से 30 जून 2015 तक

कक्ष श्रेणी	भारतीय रूपये / प्रतिशत में दरें
डीलक्स कमरे एसजीएल / डबल	12,600
प्रीमियर कक्ष एसजीएल / डबल	14,400
सूट कक्ष एसजीएल / डबल	19,800

आरटीडीसी होटलः

सवाईमाधोपुर में आरटीडीसी द्वारा संचालित दो होटल हैः

1. होटल विनायकः

होटल विनायक आरटीडीसी द्वारा संचालित किया जा रहा है। जो रणथम्भौर रोड़ पर स्थित है। यह समूह तथा परिवार के रहने के लिए उचित

स्थान है। यहाँ एसी कमरे और आधुनिक सुविधाओं के साथ गैर एसी कमरे उपलब्ध ह।

सुविधाऐं:

समूह के लिए सांस्कृति कार्यक्रम

हरेभरे उद्यान

इंटरनेट, कैम्प और एसटीडी

हस्तशिल्प की दुकान

क्रेडिट कार्ड स्वीकार की व्यवस्था

टैरिफ: आरटीडीसी होटल विनायक में टैरिफ दरें

भारतीय रूपये में टैरिफ: एमएपी योजना पर सीजन टैरिफ ऑफअप्रेल सितम्बर अक्टूबर को छोड़कर के लिए 29 अक्टूबर 2014 और 24 के लिए 31 दिसम्बर 2014

कक्ष प्रकार	कक्ष	दो गुना	सिंगल
सूईट	1	4400 रु.	3400 रु.
एसी	11	2600 रु.	1600 रु.
एसी एक रूम 4 बड़े (परिवार)	2	4000 रु.	4000 रु.
स्विस तम्बू	0	2500 रु.	1700 रु.

मार्च–अक्टूबर के लिए सीजन टैरिफ

कक्ष प्रकार	कक्ष	दो गुना
सूईट्स	1	4900 रु.
एसी	11	2990 रु.
एसीएफ रूम	2	4700 रु.
स्विस तम्बू	10	2500 रु.

भारतीय रूपये में टैरिफः एपी योजना परः

31 दिसम्बर 2.14 को 29 अक्टूबर 2014 व 24 के लिए 22 अक्टूबर 2014

कक्ष प्रकार	कक्ष	दो गुना	सिंगल
सूईट	**1**	**6500 रु.**	**5200 रु.**
एसीएफ रूम	**2**	**6700 रु.**	**6700 रु.**
एसी	**11**	**4500 रु.**	**3600 रु.**
स्विस तम्बू	**10**	**3500 रु.**	**2500 रु.**

1. होटल कैसल झूमर बौरई[43]

होटल कैसल झूमर बौरइ द्वारा संचालित एक अर्थव्यवस्था विरासत होटल है जो रणथम्भौर रोड़ पर स्थित है।

सुविधाऐंः

- बार की सुविधा
- गरम एवं ठण्डे पानी की व्यवस्था
- कॉन्फ्रेंस हॉल
- वन्यजीव अभयारण्य पर्यटन
- कार रेंटल
- कार पार्किंग
- लॉड्री

टैरिफ:

कमरे का प्रकार	प्लान	सिंगल	डबल
एसी रूम सुइट अतिरिक्त बिस्तर	एसी एसी एसी	4600 रु. 6500 रु.	5600 रु. 7500 रु. 1800 रु.
22–29 अक्टूबर और 24–31 दिसम्बर			
एसी रूम सुइट अतिरिक्त बिस्तर	एसी एसी एसी	6400 रु. 8400 रु.	7400 रु. 9400 रु. 2300 रु.
अप्रैल – सितम्बर			
एसी रूम	एसी	3600 रु.	4600 रु.
सुइट अतिरिक्त बिस्तर	एसी एसी	5500 रु.	6500 रु. 1300 रु.

सवाईमाधोपुर में गेस्ट हाउस और धर्मशाला

1. अग्रवाल धर्मशाला
2. मीणा धर्मशाला
3. रघुनाथ मुंशी धर्मशाला
4. पंच आदित्य धर्मशाला

6.2.1.4 झालावाड़ में आवास सुविधा[44]:

झालावाड़ कोटा संभाग का एक महत्वपूर्ण जिला है। जिसकी कोटा से दूरी करीब 95 किमी है। जहाँ ठहरने की आवास सुविधा पर्याप्त रूप से उपलब्ध है। झालावाड़ में कुल 7 होटल ह। जो इस प्रकार ह:

1. द्वारिका होटल, एन एच 12, झालावाड़
2. चन्द्रावती होटल, पाटन रोड़, एच एच 12 झालावाड़
3. वर्षा बसेरा, कोटा रोड़, झालावाड़
4. गाँवड़ी तालाब होटल, डाक बंगला रोड़, झालावाड़
5. सूर्या होटल, झालावाड़ बस स्टैण्ड के पास, झालावाड़
6. देव गढ़ मोटल, राजसमंद, अजमेर रोड़, झालावाड़
7. पृथ्वी विलास पैलेस, बानी पार्क, झालावाड़

आरटीडीसी होटलः

आरटीडीसी द्वारा झालावाड़ शहर में दो होटल संचालित करता है।

1. गाँवड़ी तालाबः

आरटीडीसी द्वारा संचालित गाबड़ी तालाब पहाड़ियों से घिरा हुआ सुन्दर दृश्य प्रस्तुत करता है। होटल गाँवडो तालाब सभी आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित एसी कमरे उपलब्ध कराता है। इसके साथ ही भोजन की अच्छी व्यवस्था और बियरबार की व्यवस्था भी प्रदान करता है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए छोटा सा अखाड़ा भी होटल में मौजूद है। चंद्रभागा मेले के समय टेंट की व्यवस्था भी उपलब्ध कराता है।

कमरे और आवासः

होटल गाँवड़ी तालाब सभी आधुनिक सुविधाऐं उपलब्ध कराता है। होटल में 18 एसी कमरे उपलब्ध हैं। कमरे के प्रकारः सभी 18 कमरे एसी है।

सुविधाऐं और क्रियाऐंः

कक्ष सुविधाऐंः गरम और ठंडा पानी, टेलीफोन और रंगीन टेलीविजन

सुविधाऐंः

हरे भरे उद्यान, बार, कपड़े धोने और ड्राई क्लीनिंग, इंटरनेट, फेक्स और एसटीडी, पार्किंग सुविधा, कॉल पर डॉक्टर

स्थानः

होटल गाँवड़ी तालाब इंदौर हवाई अड्डे से 240 किमी. की दूरी पर स्थित है। कोटा रेल्वे स्टेशन से झालावाड़ 87 किमी. है।

आरटीडीसी होटल गाँवड़ी तालाब टैरिफ रेटः

अप्रैल 2013 से मार्च 2014 के लिए

आवास	ए.सी.
कमरा	1800 रु
दोगुना	1700 रु.
सिंगल	1500 रु

अतिरिक्त बिस्तर	400 रु

2. आरटीडीसी होटल चन्द्रावतीः

झालावाड़ स्थित चन्द्रावती होटल में सभी आधुनिक सुविधा उपलब्ध ह। होटल की दूरी जयपुर से 315 किमी0 और कोटा से 75 किमी. की दूरी पर स्थित है।

सुविधाऐंः

संलग्न स्नान घर, गर्म/ठण्डा पानी, दो ए.सी. डबल कमरे और चार गैर एसी डबल कमरे उपलब्ध हैं।

झालावाड़ में लॉज सेवाऐं

1. आशीर्वाद लॉज, झालावाड़
2. मुकुंद लॉज, झालावाड़
3. सवेरा लॉज, झालावाड़

6.2.1.5 बाराँ में आवास सुविधा[46]:

कोटा संभाग के बाराँ जिले में आवास सुविधाऐं बहुत ही कम है। बाराँ में कुछ ही होटल उपलब्ध है। जो इस प्रकार हैं

1. संस्कार होटल, चार मूर्ति चौराहा, कोटा रोड़
2. हिल व्यू होटल और रिसोर्ट, छबड़ा तहसील
3. श्री गणेश होटल, बस स्टैण्ड, अस्पताल रोड़
4. होटल ममता, चार मूर्ति चौराहा, कोटा रोड़
5. होटल प्रथम, राधा कृष्ण अस्पताल, बस स्टैण्ड

लॉजः

किरण लॉज, किरण मार्केट बाराँ

6.3 कोटा संभाग में पर्यटन की अन्य सुविधाऐं:

6.3.1. कोटाः

मनोरंजन के स्थान

1. लायन्स क्लब, झालावाड़ रोड़ कोटा

2. रोटरी क्लब, बसंत विहार, कोटा
3. उम्मेद क्लब

उद्यानः

1. छत्र विलास (सी.बी.) गार्डन नयापुरा
2. सेवन वंडर्स पार्क कोटड़ी
3. चम्बल गार्डन

खेलः

1. फुटबाल क्लब, 1541, सुभाष नगर द्वितीय, कोटा
2. तरणताल, बाल विद्यालय, बाराँ रोड़, कोटा

सिनेमाः

1- INOX KOTA
   PLOT NO. 11, एलन इंस्टीट्यूट के पास, इन्द्राविहार, कोटा
2. नटराज बिग सिनेमा, भीमगंजमण्डी, स्टेशन रोड़, कोटा
3. फन सिनेमा, प्लॉटः ए.47 सिटीमॉल, इन्द्रप्रस्थ इण्डस्ट्रीयल एरिया, झालावाड़ रोड़, कोटा।

शॉपिंग मॉल और स्टोरः

1. वी मार्ट, एवी एच 19 कॉम्प्लेक्स, दादाबाड़ी क पास, गुरूद्वारा
2. सिटी मॉल, ए 47 आईपीआईए रोड़ न. 3 झालावाड़ रोड़ कोटा
3. विशाल मेगा मार्ट, कोटड़ी, कोटा

कोचिंग संस्थानः

1. एलन कैरियर इंस्टीट्यूट
2. रेजोनेन्स, सीपी टॉवर, ए 46, ए 52 सिटी मॉल के पास
3. कैरियर पॉइन्ट
4. बंसल क्लासेज

हॉस्पीटलः

1. राजकीय हॉस्पीटल, कोटा
2. एमबीएस हॉस्पीटल, कोटा
3. सेटेलाइट हॉस्पीटल, रामपुरा, कोटा
4. जेकेलॉन हॉस्पीटल, कोटा
5. न्यू मेडिकल कॉलेज, कोटा

निजी अस्पतालः

1. सुधा हॉस्पीटल, कोटा
2. मैत्री हॉस्पीटल, कोटा
3. ग्लोबल मोदी हॉस्पीटल, कोटा
4. एक्यूपंचर रिसर्च सेन्टर, कोटा आदि

पोस्टल सेवाः

1. मुख्य डाकघर, नयापुरा, कोटा
2. रेल्वे डाकघर, कोटा जंक्शन

पर्यटन कार्यालयः

1. क्षेत्रीय पर्यटन कार्यालय, नयापुरा, कोटा

6.3.2 बूँदीः

मनोरंजन

1. बूँदी महोत्सव

क्लबः जिला सर्किट हाउस के पास

फोटो स्टूडियोः

1. कुमार स्टूडियो, बूँदी
2. रवि स्टूडियो, बूँदी
3. कृष्णा स्टूडियो, बूँदी
4. सरताज और अजन्ता, बूँदी

पर्यटन कार्यालय :

पर्यटन कार्यालय, कोटा रोड़, सर्किट हाउस, बूंदी

अस्पतालः

1. राजकीय अस्पताल, बूँदी
2. बूँदी होम्योपैथिक अस्पताल, नैंनवा रोड़, बूँदी

बूँदी हस्त शिल्पः

1. माँगीलाल हस्तशिल्प, सदर बाजार, बूँदी
2. विक्की गोटा और हस्तशिल्प स्टोर, बूँदी

6.3.3 सवाईमाधोपुरः

सिनेमा हॉलः

1. सूरज सिनेमा, सिनेमा गली, सवाई माधोपुर
2. प्रेम मंदिर, श्री6, सवाईमाधोपुर

क्लबः

1. क्लब महिन्द्रा, सवाईमाधोपुर

हॉस्पीटलः

1. जनरल अस्पताल, सवाईमाधोपुर
2. कमला अस्पताल, सवाईमाधोपुर
3. रणथम्भौर सेविका अस्पताल, सवाईमाधोपुर
4. वात्सल्य अस्पताल, सवाईमाधोपुर

पर्यटन कार्यालय :

1. पर्यटन कार्यालय, विनायक टूरिस्ट कॉम्प्लेक्स

6.3.4. झालावाड़ः

मनोरंजन सुविधाऐं

सिनेमा हॉलः

प्रेम मन्दिर सिनेमा

चिकित्सा सुविधाऐं

अस्पतालः

1. सरकारी अस्पताल, एन एच 12 झालावाड़
2. शीला अस्पताल, भवानीमण्डी, आदि

6.3.5. बाराँः

मनोरंजन सुविधाऐं

सिनेमा हॉलः

1. जनता टॉकीज
2. श्री कृष्णा टॉकीज

अस्पतालः

1. सरकारी अस्पताल आदि

इस प्रकार कोटा संभाग में निम्न विवरण से स्पष्ट है कि यहाँ पर्यटन सुविधाओं, परिवहन, होटल, मनोरंजन आदि सभी प्रकार की सुविधाऐं पर्याप्त तौर से उपलब्ध है जो पयटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं।

अतः यहाँ इन सुविधाओं में और विस्तार कर पर्यटन को अधिक प्रोत्साहित किया जा सकता है।

संन्दर्भ सूची

1. भाटिया, ए.के.इण्टरनेशनल ट्यूरिज्मः फण्डामेण्टल एण्ड प्रैक्टिस, एस.पी. पी.एल. नई दिल्ली, 1982, पृष्ठ 39
2. सिंह, रतनदीपडायनामिक्स ऑफ टूरिज्म, के.पी.डी., नई दिल्ली, 1996, पृष्ठ 113
3. चट्टोपाध्याय, कुनाल, इकोनोमिक्स इम्पेक्ट ऑफ टूरिज्म मैनेजमेंट, के. पी.डी., नई दिल्ली, 1995 पृष्ठ 23
4. नेगी, जगमोहन सिंह, पर्यटन एवं यात्रा सिद्धांत, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997 पृष्ठ 102–141
5. गिल, पुष्पेन्द्र एस, डायनामिक्स ऑफ टूरिज्म, अनमोल प्रकाशन, दिल्ली, 1994 पृष्ठ 162
6. सिंह, रतनदीप, इन्फ्रास्ट्रक्चर ऑफ टूरिज्म इन इण्डिया, के.पी.डी., नई दिल्ली, 1996 पृष्ठ 174
7. शर्मा, के.सी. टूरिज्म पॉलिसी एण्ड प्लानिंग स्ट्रेटेजी, पी.पी. जयपुर, 1996 पृष्ठ 35–'36
8. नेगी, जगमोहन सिंह, टूअरिज्म एण्ड ट्रेवल्स कन्सैप्ट एण्ड प्रेक्टिसेज, जी.पी.एच. नई दिल्ली, 1998 पृष्ठ 311
9. राव, कनकसिंह, धरोहर राजस्थान सामान्य ज्ञान, पिंकसिटी पब्लिशर्स, जयपुर 2014 पृष्ठ बी29
10- Tourist Information Booklet, A Govt. of India Tourist Dept. Publication, New Delhi.
11. राव, कनक सिंह, धरोहर, राजस्थान सामान्य ज्ञान, पिंकसिटी पब्लिशर्स 2014 पृष्ठ संख्या बी30
12. दशम पंचवर्षीय योजना 200207 यू.पी. टूरिज्म, लखनऊ।
13. Train at A Glance- Indian Railway, P. 294.
14. www.kotacityinfo.com/Transportation in Kota.
15. www.bundicityinfo.com/Transportation.
16. www.sawaimadhopur.nic.in.
17. www.jhalawar.nic.in

18. Annual Report-1992. Archeological Survey of India.
19. इग्नू –टीएस –1, पर्यटन सेवाएँ और संचालन 2013 पृष्ठ14
20. भल्ला, एल.आर.सामयिक राजस्थान, कुलदीप पब्लिकेशन, जयपुर, 2003 पृष्ठ 15
21. सक्सेना, जुगल बिहारी क्रोनोलॉजो राजस्थानः एक परिचय, पी.एम. सी. पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, भरतपुर, 2005 पृष्ठ 16
22. इग्नू–टी एस–1 पर्यटन सेवाएँ और संचालन, 2013 पृष्ठ सं. 2022
23. http://www.cleartrip.com/Hotels/India/Kota.
24. www.IndiaTravellist.com/Rajasthan/rtdc Hotel Kota.
25. www.ummedbhawanpalace.com
26. www.stayzilla.com
27. www.welcomeheritagehotels.in/Hotel Facilites.
28. www.goibibo.com/Hotels/Detail/Kota/Sukhdham
29. www.hotelsbundi.com
30. www.hotelbundihaveli.com
31. www.hotelbundivilas.com
32. www.hoteldevniwas.com
33. www.hotelhavelibrajbhushan.com
34. www.ishwariniwas.com
35. www.naihaveli.com
36. www.nawalsagarpalace.com
37. www.tripadvisor.in
38. www.oberaivanyavilasresort.com
39. www.nahargarhranthambhore.com
40. www.travelanurag.com
41. www.rtdc.rajasthanhotelvinayak.gov.in
42. www.rtdc.rajasthan/jhoomabavari.gov.in
43. www.stayzila/jhalawar.com
44. www.indiatravelist.com/rajasthan/rtdc/gavditalabjhalawar.html
45. http//www.holidayiq.com/hotels/Baran

अध्याय सप्तम

कोटा संभाग में पर्यटन विकास का आर्थिक एवं सामाजिक प्रभाव

7.1 पर्यटन विकास में सरकारी क्षेत्र की भूमिका

7.2 राजस्थान राज्य सरकार की पर्यटन में भूमिका

7.3 कोटा संभाग में पर्यटन की स्थिति

7.4 कोटा संभाग की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति

7.5 कोटा संभाग में पर्यटन का आर्थिक एवं सामाजिक प्रभाव

7.6 कोटा संभाग में शहरी विकास एवं जीवन स्तर

7.7 कोटा संभाग में पर्यटन का सामाजिक प्रभाव

अध्याय–सप्तम

कोटा सम्भाग में पर्यटन विकास का आर्थिक एवं सामाजिक प्रभाव

राजस्थान एक ऐसी भूमि है जहाँ उपमाऐं एवं रूपक एक साथ आते हुए प्रतीत होते हैं। बालू रेत क टीले, छोटी छोटी पहाड़ियाँ एव आश्चर्यजनक झीलें, महल एवं किले, रंगबिरंगे साफों एवं लहंगों में स्त्रीपुरूष, शान्त ग्राम, ऊँट, हाथी एवं चीते, तीखी धूप एवं शीतल पवन सभी यहाँ बहुतायात से पाई जाती हैं। पर ये सब जटिल पर्दे का भाग ही निर्मित करते हैं। राजस्थान में सभी जगह चाहे यहाँ स्थानीय मेला हो या चकित करने वाला कोई दृश्य हो, अप्रत्याशित चीजों क सम्पर्क में आता है। देहात का मिजाज प्रत्येक क्षेत्र एंव ऋतु में परिवर्तित होता पाया जाता है। यह अचम्भों की भूमि है। यह आश्चर्यजनक प्राकृतिक सौन्दर्य की भूमि है जो सर्वाधिक अनुभवी पर्यटक को मोह लेती है।

पर्यटन विकास हेतु राजस्थान को निम्न क्षेत्रों (सक्रिट) में बाँटा गया है[1]

1. ढूँढाड़ सक्रिटः

जयपुर, दौसा, आभानेरी, सामोद, सांगानेर एंव रामगढ़।

2. बृजमेवात खण्डः

अलवर, भरतपुर, सरिस्का, करौली, सिलीसेढ़, रणथम्भौर, डीग, धौलपुर, सवाईमाधोपुर एवं टोंक।

3. हाड़ौती खण्डः

बूँदी, कोटा, बाराँ, झलावाड़।

4. मवाड़ खण्डः

उदयपुर, कुम्भलगढ़, कांकरौली, चित्तौड़गढ़, नाथद्वारा, चारभुजा एवं जयसमन्द।

5. बांगड़ खण्डः

डूंगरपुर एवं बांसवाड़ा।

6. गोड़वाड़ खण्डः

आबू पर्वत, जालौर एवं रणकपुर।

7. मरूखण्डः

जोधपुर, बीकानेर, बाड़मेर, देशनोक, एवं जैसलमेर।

8.मेरवाढ़ा–मवाड़ खण्डः

अजमेर, मेड़ता, पुष्कर, नागौर एवं किशनगढ़।

9. शेखावाटी खण्डः

सीकर, फतेहपुर, नवलगढ़, लक्ष्मणगढ़, डूण्डलोद, मुकन्दगढ़, मण्डावा, चिड़ावा, झुँझुनू, पिलानी, बिसाऊ, चूरू, सालासर जी एवं खाटूश्याम जी।

7.1 पर्यटन विकास में सरकारी क्षेत्र की भूमिका[2]:

सरकार एवं उद्योग परस्पर सम्बंधित हैं। किसी भी उद्योग का विकास सरकारी सहायता के बिना संभव नहीं तो कठिन अवश्य है। विश्व में ऐसा कोई भी देश देखने को नहीं मिलता है। जहाँ पर वहाँ की सरकार ने उद्योगों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग नहीं किया हो। प्रत्येक राष्ट्र की सरकार को अपने देश के उद्योगों के समुचित विकास हेतु सहयोग ही नहीं अपितु सक्रिय भूमिका निभानी पड़ती है।

देश में पर्यटन विकास के उद्देश्यों तथा पर्यटन क्षेत्र की महत्ता को रेखांकित करते हुए राष्ट्रीय पर्यटन नीति संसद में वर्ष 1982 को प्रस्तुत की गई थी। यह नीति जटिल लाइसेंसिग प्रक्रिया तथा मंद अर्थव्यवस्था के माहौल में तैयार गयी थी। इस नीति में निजी क्षेत्र की भूमिका पर तथा विदेशी निवेश पर भी पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया।

दिनांक 30 अक्टूबर, 2001 को आयोजित मुख्य मंत्रियों के सम्मेलन के दौरान भारत के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था

''विश्व के अधिकांश भाग में पर्यटन आर्थिक विकास का प्रमुख साधन है। कुछ देशों ने पर्यटन संभावनाओं का पूर्ण दोहन कर अपनी अर्थव्यवस्था को ही बदल डाला है। पर्यटन में विभिन्न तरह के व्यापक रोजगार सृजित करने की अपार क्षमता है और हम सब जानते हैं कि भारत की समय की जरूरत अधिक अवसर पैदा करने की है।''

पर्यटन विकास में सरकार की भूमिका को पुनः परिभाषित किया गया है पर्यटन को नियमित रूप से बढ़ावा देने के लिए सरकार की भूमिका में परिवर्तन किया गया। पर्यटन को प्रोत्साहन देने के लिए तथा प्रचार के साथ आधारभूत सुविधाओं को विकसित करना सरकार की प्रमुख जिम्मेदारी स्वीकार की गयी। भारत में पर्यटन विकास कई रूपों से होकर गुजरा है। पर्यटन सुविधाओं के विकास के लिए 1956 ई. में द्वितीय पंचवर्षीय योजना में कदम उठाया गया। पर्यटन विकास हेतु द्वितीय व तृतीय पंचवर्षीय योजना में अलग से एकल ईकाई के रूप में योजना तैयार की गयी। छठवी पंचवर्षीय योजना में पर्यटन की सामाजिक एकीकरण और आर्थिक विकास में भूमिका पर सावधानी से विचार किया गया और एक सामाजिक व आर्थिक एकीकरण के मुख्य यंत्र के रूप में माना गया।

इसलिए 1982 में राष्ट्रीय पर्यटन नीति की घोषणा की गयी। 1992 में ''राष्ट्रीय एक्शन प्लान'' तैयार किया गया तथा 1996 में पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए राष्ट्रीय रणनीति तैयार की गयी। 1997 में नई पर्यटन नीति का ड्राफ्ट तैयार किया गया। प्रस्तुत नीति के अन्तर्गत केन्द्र और राज्य सरकारों तथा लोक क्षेत्र तथा निजी क्षेत्र की पर्यटन विकास में भूमिका को पुनः निर्धारित किया गया। पर्यटन सुविधाओं को विकसित करने के लिए पंचायती राज संस्थाओं, स्थानीय निकायों, गैरसरकारी संगठनों और स्थानीय युवाओं की भूमिका को पुनः निर्धारित किया गया। 12वीं पंचवर्षीय योजना में पर्यटन

की कार्यकारी योजना को पर्यटन मंत्रालय द्वारा स्वीकृति दी गयी। गरीबी घटाने के लिए 'Pro-Poor Tourism' अवधारणा को स्वीकार कर गरीबी घटाने का प्रयास किया जा सके, इसके लिए पर्यटन मंत्रालय ने गन्तव्यों, परिक्षेत्रों, मैगा प्रोजेक्टों तथा ग्रामीण पर्यटन की आधारभूत सुविधाओं के लिए बजट फण्ड निर्धारित किया। इसके अतिरिक्त पर्यटन विकास के लिए भारतीय पर्यटन विकास निगम की स्थापना 1966 में और पर्यटन प्रोजेक्टों के लिए वित्त उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 1989 में टूअरिज्म फायनेन्स कॉरपोरेशन की स्थापना की गयी। इसके साथ ही सरकारी होटल मैनेजमेंट एण्ड कैटरिंग टैक्नोलोजी इन्स्ट्रीयूट और 14 फूड क्राफ्ट इन्स्ट्रीयूट की स्थापना की, जो हॉटलाइरिंग और कैटरिंग का प्रशिक्षण देते हैं।

7.1.1 राष्ट्रीय पर्यटन नीति[3]:

2002 का प्रारूप पर्यटन मंत्रालय द्वारा तैयार किया गया, जिसका उद्देश्य पर्यटन को आर्थिक विकास के एक तंत्र के रूप में प्रतिष्ठित करना तथा रोजगार सृजन तथा निर्धनता उन्मूलन के लिए इसके बहुआयामी प्रभाव को दोहन करना है।

नीति विषयक इस प्रपत्र में पर्यटन क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं में वृद्धि तथा अन्य क्षेत्रों के साथ विकासात्मक सम्पर्क के माध्यम में आर्थिक एकीकरण में तेजी लाने जैसे मुद्दों का समावेश है। इस नीतिगत प्रपत्र में जिन उपायों का उल्लेख है वे इस प्रकार हः

1. पर्यटन को आर्थिक विकास के एक तंत्र के रूप में प्रतिष्ठित करना।
2. रोजगार सृजन, आर्थिक विकास तथा ग्राम्य पर्यटन को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए पर्यटन के प्रत्यक्ष तथा बहुआयामी प्रभाव का दोहन।
3. पर्यटन विकास के प्रमुख संचालन के रूप में घरेलू पर्यटन पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

4. विश्व की फलती फूलती अर्थव्यवस्था तथा भारत की अपार पर्यटन संभावना का लाभ उठाने के लिए भारत को विश्व मार्का के रूप में प्रतिष्ठित करना।
5. निजी क्षेत्र सरकार के साथ मिलकर कार्य करने के उत्प्रेरक की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल।
6. भारत की निराली सभ्यता, हैरीटेज तथा संस्कृति पर आधारित एकीकृत पर्यटन परिपथ का राज्यों, निजी क्षेत्र तथा अन्य एजेंसियों के साथ मिलकर सृजन तथा विकास।
7. यह सुनिश्चित करना की भारत आने वाले पर्यटक भौतिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक रूप से संतुष्ट हो तथा भारत को भलीभांति परख सक।

7.1.2 राष्ट्रीय पर्यटन नीति 2002 के मुख्य नीतिगत उद्देश्य हैं[4]:

1. राष्ट्रीय प्राथमिकता कार्यकलाप के रूप में पर्यटन विकास की अवस्थिति तथा रखरखाव करना।
2. पर्यटन गन्तव्य स्थल के रूप में भारत को प्रतिस्पर्धी बनाने में बढ़ोतरी तथा रखरखाव करना।
3. भारत में मौजूदा पर्यटन उत्पादों में सुधार करना तथा नई मार्केट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इनका विस्तार करना।
4. विश्व स्तर की अवसरचना का सृजन।
5. निरंतर और प्रभावशाली विपणन योजनाओं और कार्यक्रमों का विकास करना।

7.1.3. पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा की गई पहल[5]:

1. हुनर से रोजगार' कार्यक्रमः

यह कार्यक्रम केन्द्र सरकार द्वारा विशेष तौर से 200910 में आर्थिक तौर से कमजोर तबके के 1825 वर्ष के युवाओं को कुशल रोजगार प्रदान करने के उद्दश्य से जारी की गयी है। पर्यटन क्षेत्र के आर्थिक लाभों को गरीब लोगों

तक पहुँचाने के उद्दश्य से भी यह कार्यक्रम लाभदायक सिद्ध होगा। इस कार्यक्रम के तहत अल्पावधि पाठ्यक्रम जिन की अवधि 6 से 8 सप्ताह है, को प्रारम्भ किया गया है जो पूरी तरह से केन्द्र सरकार द्वारा वित्त पोषित किये जा रहे हैं। इसके अन्तर्गत दो कोर्स संचालित किये जा रहे हैं। (I) फूड एंड बेवरिज (Beverage) सेवा (II) फूड प्रोडक्शन, हाउस कीपिंग कोर्स, यूटिलिटि, बेकरी (Bakery) इन के अतिरिक्त ड्राइवर, गोल्फ कैड्डीज, स्टोनमैसन, सिक्योरिटी गार्ड और टूरिस्ट फेसिलेटर्स (Facilator) आदि। इसके तहत वर्ष 2012–13 में 21,175 व्यक्तियों को प्रत्याक्षित किया जा चुका है।

2. वीजा ऑन अरायवल्स (**Visa on Arrival**):

पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा वोजा ऑन अरायवल्स सुविधा प्रारम्भ की गयी है। सुविधा के अन्तर्गत 'लॉग टर्म टूरीस्ट वीजा' पाँच वर्षों की अवधि के लिए बहुविकल्पीय प्रवेश के लिए आवश्यक शर्त यह है कि प्रत्येक यात्रा 90 दिनों के लिए होनी आवश्यक है। पर्यटक चुनिन्दा 18 देशों को जान सकता है। इस सुविधा से पर्यटक किसी भी देश की यात्रा की योजना बना सकता है। वर्ष 2012 के दौरान कुल 16,084 ट्वी जारी किए गए जो वर्ष 2011 की तुलना में 26: अधिक थे।

3. अच्छे पर्यटन उत्पाद (**Nice Tourism Product**):

पर्यटन मंत्रालय द्वारा पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कुछ पर्यटन उत्पादों को चिन्हित किया गया है। पर्यटको को एक सत्र विशेष के अलावा वर्ष भर आकर्षित किया जा सके। पर्यटन मंत्रालय द्वारा पर्यटन को विकसित व प्रोत्साहित करने के लिए पर्यटका की रूची के अनुसार निम्न उत्पादों को चिन्हित किया है

1. क्रूज (Cruise)
2. एडवेंचर (Adventure)
3. मेडिकल (Medical)
4. वैलनेस (Wellness)

5. गोल्फ (Golf)
6. पोलो (Polo)
7. मीटींग इन्सेटिव कॉफ्रेंस एण्ड एक्जीविसंस (Meetings Incentives Conferences and Exhibitings) (Mice)
8. इको टूरिज्म (Eco-Tourism)
9. फिल्म (Tourism)

7.2. राजस्थान राज्य सरकार की पर्यटन में भूमिका[6]:

राजस्थान राज्य में नई पर्यटन नीति 27/09/2001 को जारी की गयी थी। पर्यटन नीति के मिशन के तौर पर विभिन्न जैव संरक्षित करने के लिए समृद्ध और विविध हस्त शिल्प के लिए एक तैयार बाजार को विकसित करने के लिए, ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए राज्य का समृद्ध पर्यटन संसाधनों का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करने के लिए बनाया गया एक व्यवहारिक नीति विकसित करने के लिए है। विविधता, वैज्ञानिक विधियों द्वारा राज्य के प्राकृतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक में पर्यटन उद्योग के योगदान को तेज करने के लिए राजस्थान में एक सही मापने में पीपुल्स उद्योग पर्यटन बनाकर राज्य के आर्थिक विकास पर्यटन, पर्यटन उद्योग को लाभ देने के लिए अलगअलग अधिसूचना जारी करने की शर्त हटा दी गयी है। 1989 में और 11/07/2002 को अधिसूचना जारी होने के साथ एक उद्योग के रूप में घोषित किया गया था और पर्यटन को लाभ, अन्य उद्योगों के साथ सम मूल्य पर उपलब्ध होगा।

7.2.1 राजस्थान पर्यटन इकाई नीति 2007[7]:

वर्ष 2006 में, पर्यटन विभाग राजस्थान के द्वारा एक नई होटल नीति की घोषणा की गई थी। इस नीति को राजस्थान पर्यटन यूनिट पॉलिसो 2007 में पुनः प्रतिस्थापित किया जाना प्रस्तावित है। इस नीति के अन्तर्गत होटलों के लिए भूमि आवंटन प्रक्रिया को सरल बनाया गया है। जिसके मुख्य बिन्दुओं को इस प्रकार देखा जा सकता है।

7.2.2 होटल और अन्य पर्यटन ईकाइयों के लिए भूमि आवंटनः

जयपुर विकास प्राधिरकण UIT म्यूनिसिपल बोर्ड, ग्राम पंचायत और जिला अधिकारी पर्यटन ईकाइयों और होटलों को स्थापित करने के लिए उपयुक्त भूमि की पहचान करने का अधिकार दिया गया है। जैसे सभी प्रकार के होटलों व पर्यटन इकाईयों के लिए आरक्षित स्थान के लिए भूमि बैंक की स्थापना की जाएगी, जैसेः

1. बजट होटल (1, 2, 3 स्टार)
2. फोर स्टार होटल्स
3. 5 स्टार और 5 स्टार डीलक्स होटल
4. अन्य पर्यटन ईकाइया
5. लैंड बैंक इस प्रकार की सूचना पर्यटन विभाग की वेबसाइट पर और सम्बन्धित स्थानीय विकास और जिला कार्यलय पर उपलब्ध होगी।
6. विभिन्न होटल्स और अन्य पर्यटन ईकाइयों के लिए अधिकतम व न्यूनतम भूमि आरक्षित की जाएगी।

राजस्थान में वर्तमान में कुछ हवेली, किले और धरोंहरों को होटलों के रूप में विकसित किए जा रहे हैं, जो पर्यटको को मुख्य रूप से आकर्षित करते हैं इस से केवल पर्यटकों की संख्या ही नहीं बढ़ेगो साथ ही राजस्थान की संस्कृति को भी बढ़ावा मिलेगा। इस के लिए नियम 12 (1) के अन्तर्गत निम्न प्रावधान किये गये ह।

1. कोई भी धरोहर जैसे हवेली, किला अन्य स्थान, हंटींग लोज आदि जो 1950 से पहले निर्मित किये गये ह उनका पुनः जीर्णोधार कर होटल के रूप में जिस में कम से कम 10 कमरे हो को विकसित किया जायगा। जो किसी भी प्रकार के शुल्क से मुक्त रहेंगे।

2. किसी भी आवासीय भूमि और आवासीय इमारत जो होटल और अन्य पर्यटन ईकाई के प्रयोग के लिए प्रस्तावित हैं, जिसमें न्यूनतम 10 कमरे हो किसी भी प्रकार के शुल्क से छूट प्राप्त होगी।

7.2.3 राजस्थान में पर्यटन विकास के लिए मुख्य योजनाएँ[8]:

राजस्थान में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए राजस्थान सरकार द्वारा अनेक योजनाएँ चलायी गयी हैं

1.राजीव गाँधी पर्यटन विकास मिशनः

राज्य में पर्यटन विकास की विभिन्न योजनाओं, कार्यक्रमों व नीतियों को अधिक प्रभावी ढंग से समयबद्ध रूप से क्रियान्वित करने के हेतु 5 जुलाई, 2001 को मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में इस मिशन की स्थापना की गई है।

2. हैरीटेज वॉक प्रोजेक्ट एवं विरासत संरक्षण योजनाः

राज्य सरकार द्वारा प्रोजेक्ट के तहत विरासत संरक्षण एवं पुरातत्विक महत्व के 28 शहरों में विरासत भवनों, स्थलों एवं स्थापत्य के लिए प्रसिद्ध स्थलों का चयन उनका संरक्षण एवं परिवर्द्धन किया जाएगा।

3. अपना–धाम अपना–काम अपना–नाम योजनाः

अध्यात्मिक पर्यटन के विकास हेतु प्रारम्भ की गई।

4. पर्यटक सहायता बल या पर्यटन पुलिसः

राज्य में पर्यटको की सुरक्षा, सहयोग व सहायता हेतु पर्यटन पुलिस योजना सन् 2000 से जयपुर में प्रारम्भ की गई। राजस्थान देश का पहला राज्य है, जहाँ पर्यटन पुलिस तैनात की गई है। इस के माध्यम से पर्यटको द्वारा अनुभव की जाने वाली कठिनाइयों का निस्तारण असामाजिक तत्वों से उन्हे सुरक्षा प्रदान करते हुए राज्य में उनके प्रवास को सुखमय बनाने के प्रयास किये जा रहे है। जयपुर के अलावा उदयपुर, जोधपुर, जैसलमेर, पुष्कर, सवाईमाधोपुर और माउन्ट आबू में पर्यटन पुलिस प्रारम्भ की गई है।

5. रोपवेः

जालौर के सुन्दामाता मन्दिर से जोड़ा गया रापवे राजस्थान में सर्वप्रथम बनकर तैयार हुआ।

6. जलमहल योजनाः

जयपुर में जलमहल व उसके आसपास के क्षेत्र में जलमहल पर्यटन परियोजना को मंजूरी दी गई।

7. मेवाड़ कॉम्प्लेक्स योजनाः

18 जनवरी 1997 को महाराणा प्रताप की 400 वीं पुण्य तिथि के अवसर पर उनके जीवन सम्बन्धित स्थानों गोगुन्दा, चावंड, हल्दीघाटी आदि की पर्यटन की दृष्टि से विकास हेतु प्रारम्भ योजना।

8. हाड़ौती कॉम्प्लेक्स योजनाः

यह दक्षिणी–पूर्वी राजस्थान के झालवाड़,कोटा,बूँदी,सवाईमधोपुर जिलों की ऐतिहासिकपुरातात्विक धरोहरों व स्मारकों का पुनरूद्धार हेतु पर्यटन विकास की महत्वकांक्षी योजना है।

9. सांस्कृतिक धरोहर सेवावाहिनीः

विद्यार्थियों को राजस्थान की गौरवमयी सांस्कृतिक धरोहर का अध्ययन करवाकर ऐतिहासिक स्थलों व स्मारको का पुनरुद्धार में योगदान देने हेतु यह योजना शुरू की गई है। इस हेतु राज्य के 36 विद्यालयों का चयन किया गया है। ऐसी योजना शुरु करने वाला राजस्थान देश का पहला राज्य ळें

10. रमणीक झील योजनाः

राज्य की पाँच बड़ी झीलों जैसे फतेहसागर झील (उदयपुर), पिछोला झील (उदयपुर), आना सागर झील (अजमेर), नरूका झील (माउन्ट आबू) व सरोवर झील के विकास हेतु प्रारम्भ की गई।

11. चम्बल उत्सवः

कोटा में 9 से 11 फरवरी 2007 से चम्बल उत्सव का आयोजन।

ग्रामीण सहकार पर्यटनः

राज्य के 15 जिलों के 26 गाँवों को सहकारीता पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित करने की सहकारीता विभाग को योजना जिसके तहत पर्यटका को गाँवों में ले जाया जाएगा, जहाँ इन्हें ग्राम सेवा सहकारी समिति तथा क्रयविक्रय सहकारी केन्द्रों के माध्यम से ग्रामीण कला, संस्कृति व रहनसहन की परम्पराओं से अवगत कराया जाएगा।

कोटा में राज्य सरकार ने पुरातत्व एवं ऐतिहासिक धरोहरों के जीर्णोद्वार एवं विकास के लिए ''मिशन अद्भूत हैरिटेज आर्ट कोटा महक'' योजना शुरू की।

हाल ही में अभेड़ा महल कोटा व जगमंदिर कोटा का जीर्णोद्धार किया गया।
केन्द्रीय प्रवतित योजनान्तर्गतशेरगढ़ कस्बा (बाराँ), भैरू मंदिर (सवाईमधोपुर) में संरक्षण जीर्णोद्धार कार्य करवाए जा रहे ह।

7.2.4 कोटा सम्भाग म केन्द व राज्य सरकार का योगदान[9]:

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा केन्द्र प्रवर्तित योजनान्तर्गत वर्ष 201314 में विभिन्न परियोजनाओं को प्राथमिकता दी गयी। जिसमें कोटा संभाग के झालावाड़ में गागरोन किले का संरक्षण, पुनरूद्धार एवं विकास कार्य (फेज II) के अन्तर्गत परियोजना की राशि 500 लाख रूपये स्वीकृत की गयी। गढ़ पैलेस, झालावाड़ का संरक्षण, पुनरूद्धार एवं विकास के लिए भी 500 लाख रू. की राशि स्वीकृत की गयी। राज्य के अन्तर्गत वर्ष 201314 में स्वीकृत पर्यटन विकास कार्यो का विवरण व उन के लिए प्रदत्त राशि इस प्रकार है:

कार्य	धनराशि
1. शिव मंदिर चन्द्रसेलकोटा का विकास	12 लाख
2. शिव मंदिर कवाल जी बूँदी का विकास	46.10 लाख
3. सवाईमाधोपुर में रामेश्वर घाट	50.00 लाख
4. शेरगढ़ बारां	9.00 लाख
कुल	**117.10 लाख**

कोटा सम्भाग में पर्यटन की स्थितिः

पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान समृद्ध प्रदश है। यहाँ पर्यटक प्रतिवर्ष काफी संख्या में आते हैं। राजस्थान के पर्यटन विभाग द्वारा प्रतिवर्ष पर्यटको के आगमन की सांख्यिकी प्रस्तुत की जाती है गत 10 वर्ष में राज्य में पर्यटन आगमन की स्थिति को निम्न तालिका द्वारा देखा जा सकता है:

राज्य में गत दस वर्षो में आय पर्यटक

तालिका संख्या 1

वर्ष	पर्यटकों की संख्या			गतवर्षो की तुलना प्रतिशत में		
	स्वदेशी	विदेशी	योग	स्वदेशी	विदेशी	योग
2004	1,60,33,896	9,71,772	1,70,05,668	27.81	54.60	29.09
2005	1,87,87,298	11,31,164	1,99,18,462	17.17	16.40	17.13
2006	2,34,83,287	12,20,164	2,47,03,451	25.00	7.87	24.02

2007	2,59,20,529	14,01,042	2,73,21,571	10.38	14.82	10.60
2008	2,83,58,918	14,77,646	2,98,36,564	9.41	5.47	9.21
2009	2,55,58,691	10,73,414	2,66,32,105	9.87	27.36	10.74
2010	2,55,43,877	12,78,523	2,68,22,400	0.06	19.11	0.71
2011	2,71,37,323	13,51,974	2,84,89,297	6.24	5.74	6.21
2012	2,86,11,831	14,51,370	3,00,63,201	5.43	7.35	5.52
2013	3,02,91,850	14,37,162	3,17,35,312	5.89	0.98	5.56

स्त्रोतः राजस्थान पर्यटन सांख्यकी वार्षिक प्रतिवेदन–2013

तालिका में वर्ष 2004 से 2013 तक आये देशी व विदेशी पर्यटको की संख्या को दिया गया है तथा गत वर्ष की तुलना प्रतिशत रूप में की गयी है से पता चलता है कि राज्य में पर्यटको की संख्या में कमी आयी है। वर्ष 2009 में पर्यटको की संख्या ऋणात्मक हो गयी गत वर्षो में सुधार देखा गया है जहाँ वष 2010 में 2009 की तुलना में 0.71 प्रतिशत की वृद्धि देखी गयी, वहीं 2011 में 6.21 प्रतिशत की वृद्धि हो गयी लेकिन 2012 में फिर गिरावट देखी गयी और पर्यटको का आगमन राजस्थान में 5.52 प्रतिशत व 2013 में 5.56 प्रतिशत ही रहा है जो सन्तोष जनक नहीं कहा जा सकता ह।

गत चार वर्षो में राजस्थान राज्य में आये पर्यटको का कोटा संभाग में पर्यटकों का प्रतिशत रुप में तुलनात्मक अध्ययन निम्न तालिका द्वारा किया जा सकता है।

तालिका संख्या 2

वर्ष	राजस्थान में आये पर्यटको की संख्या	कोटा संभाग में आये पर्यटको की संख्या	प्रतिशत
2010	26822400	368,803	1.37
2011	28489297	350,303,	1.23
2012	30063201	331,496	1.10
2013	31735312	341,259	1.07

स्त्रोतः पर्यटन सांख्यिकी 2013

स्पष्ट है कि वर्ष 2010 में राजस्थान में आये पर्यटको की तुलना में कोटा व सवाईमाधोपुर में 1.37 प्रतिशत पर्यटक आये लेकिन 2013 तक इन की संख्या का प्रतिशत लगातार घटता गया है अतः पर्यटको का कोटा संभाग की तरफ रूझान कम ही रहा है।

इसी प्रकार कोटा सम्भाग में विभिन्न स्थलों व सवाईमाधोपुर में गत चार वर्षो में आये पर्यटको की संख्या को इस प्रकार से देखा जा सकता है व प्रतिशत रूप में तुलनात्मक रूप से देखा जा सकता है।

कोटा सम्भाग व सवाईमाधोपुर में गत चार वर्षो में आये पर्यटक

तालिका संख्या 3

वर्ष→	2010				2011				2012				2013			
स्थल↓	देशी	प्रति.	विदेशी	प्रति.	देशी	प्रति.	विदेशी	प्रति.	देशी	प्रति.	विदेशी	प्रति.	देशी	प्रति.	विदेशी	प्रति.
कोटा	97971	31.55	3450	5.63	69640	24.84	2441	3.48	62029	23.43	1881	2.81	63015	23.32	2889	4.06
सवाईमाधोपुर	59700	17.51	41400	67.58	63800	20.69	50255	71.73	65800	19.19	48335	72.29	68800	18.29	52328	73.66
बूंदी	53867	19.14	16188	26.42	58001	22.76	17148	24.47	50788	24.86	16523	24.71	49434	25.46	15739	22.15
झालावाड़	96012	31.21	215	0.35	88805	31.68	213	0.30	86019	32.50	121	0.18	88974	32.92	80	0.11
कुल	3,07,550	100	61,253	100	2,80,246	100	70,057	100	2,64,636	100	66,860	100	2,70,223	100	71,036	100

स्त्रोतः राजस्थान पर्यटन सांख्यिकी वार्षिक प्रतिवेदन2013

तालिका को यदि देखा जाए तो पता चलता है कि कोटा में 2010 से 2013 तक जहां देशी पर्यटको को आगमन क्रमशः 31.55, 24.84, 23.43, 23.32 प्रतिशत रहा है जो घटता हुआ दिखाई दे रहा है, वहीं विदशी पर्यटका की स्थिति भी अच्छी नही है। पर्यटको का भी प्रतिशत लगातार घटता रहा है, वर्ष 2013 में कुछ सुधार 4.06 प्रतिशत के साथ दिखाई देता है।

जबकि बूँदी में विदेशी पर्यटको का आगमन अच्छा रहा है लेकिन यहाँ भी विदेशी पर्यटको के आगमन में लगातार कमी दिखाई देती है और देशी पर्यटका का आगमन वर्ष 2013 में घटकर 18.29 प्रतिशत हो गया। वहीं सवाईमाधोपुर में पर्यटका का आगमन अच्छा रहा है और वर्ष 2010 से 2013 तक विदेशी व देशी पर्यटको की संख्या में काफी अच्छी वृद्धि हुई है।

झालावाड़ में देशी पर्यटको का आगमन तो ठीक है, परन्तु विदेशी पर्यटका का आगमन कम रहा है जो पिछले वर्षो की तुलना में 2013 में 0.11 रह गया।

इस तालिका को देखने पर स्पष्ट होता है कि कोटा सम्भाग में देशी व विदेशी पर्यटका के आगमन का रूख सवाईमाधोपुर व बूँदी में अधिक रहा और तीसरे स्थान पर कोटा में पर्यटका का आगमन सर्वाधिक रहा है जबकि झालावाड़ में पर्यटकों का रूख काफी कम रहा है।

7.4 कोटा संभाग की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति[10]:

किसी भी देश, राज्य या क्षेत्र की सामाजिक एव आर्थिक स्थिति वहाँ के विकास की स्थिति को प्रदर्शित करती है। वहाँ के लोगों की साक्षरता, लिंग अनुपात, श्रम शक्ति, मुख्य व्यवसाय आदि का प्रभाव पर्यटन पर पड़ता है। कोटा संभाग में यहाँ की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को इस प्रकार देख सकते हैं:

7.4.1 कोटाः

कोटा की पहचान शैक्षणिक नगरी के तौर पर होती है। यहा देश के विभिन्न हिस्सों से छात्र छात्राऐं मेडिकल व इंजीनियरिंग की कोचिंग लेने पहुँचते हैं। कोटा की जनसंख्या वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 19,51,014 है, जिसमें ग्रामीण जनसंख्या 39.69 प्रतिशत और शहरी जनसंख्या 60.31 प्रतिशत है जो यहाँ की बेहतर स्थिति प्रकट करती है। वहीं कोटा में लिंगानुपात 911 प्रति हजार पुरूष है। कोटा में साक्षरता की दर 76.56 प्रतिशत है, जो राजस्थान के अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा सर्वाधिक है, जहाँ पुरूष साक्षरता 86.31 और महिला साक्षरता 65.87 प्रतिशत है। कोटा की बेहतर स्थिति को प्रकट करती है। अनसुचित जाति की जनसंख्या 20.78 प्रतिशत तथा अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 9.42 प्रतिशत है।

कुल श्रमशक्ति 7,48,811 है, जो कुल जनसंख्या का 38.38 प्रतिशत है जहाँ पुरूष श्रमशक्ति 52.36 प्रतिशत तथा महिला श्रमशक्ति 23.03 प्रतिशत है, जहाँ कुल कृषि श्रमिको की संख्या 18.03 प्रतिशत है।

कोटा की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। कोटा कॉटन, गेहूँ, ऑयल सीड्स के व्यापार का केन्द्र है। इसके अतिरिक्त दुग्ध डेयरी, मेटल हैण्डीक्राफ्ट का उत्पादन, टैक्सटाइल और स्टोन पॉलिस उद्योग, कोटा स्टोन जो पूरे देश में जाना जाता है। इसके अलावा कोटा डोरिया साड़ी के लिए भी कोटा जाना जाता है। कोटा में तीन प्रकार के एनर्जी स्टेशन स्थापित हः थर्मल हाइड्रो गैस जिनसे विद्युत का उत्पादन निरन्तर किया जा रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में कोटा काफी आगे है। यहाँ उच्च शिक्षा की दृष्टि से देखा जाए तो पाँच बड़े विश्वविद्यालय स्थापित हैं, जिनमें कोटा विश्वविद्यालय, वर्धमान महावीर (खुला) विश्वविद्यालय, कृषि विश्वविद्यालय, कोटा तकनीकी विश्वविद्यालय स्थापित हैं। वहीं निजी क्षेत्र में कैरियर पॉइन्ट विश्वविद्यालय

स्थापित किया गया ह। इस प्रकार कोटा की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति बेहतर प्रदर्शित होती है।

7.4.2. बूँदीः

बूँदी कोटा संभाग का प्रमुख पर्यटन स्थल के तौर पर जाना जाता है। बूँदी की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 2,22,701 है जिसमें ग्रामीण जनसंख्या 79.95 प्रतिशत तथा शहरी जनसंख्या 20.05 प्रतिशत है, तथा लिंगानुपात 925 प्रति हजार पुरूष है।

बूँदी मं साक्षरता की दर 61.52 प्रतिशत है । पुरूष साक्षरता 75.44 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 46.55 प्रतिशत है, जो महिलाओं की स्थिति साक्षरता की दृष्टि से काफी पिछड़ी हुई है। अनुसूचित जाति की जनसंख्या 18.97 प्रतिशत तथा अनुसूचित जनजाति 20.53 प्रतिशत है।

बूँदी की अर्थव्यवस्था कृषि आधारित है। बूँदी में लगे ज्यादातर उद्योग कृषि आधारित हैं। यहाँ बसवाड़ीगोविन्दपुर को औद्योगिक क्षेत्र के रूप में विकसित किया गया है। यहाँ तेल मिल, तेल रिफायनरी, पेपर, पोहा, पोर्टलैण्ड सीमेण्ट, चावल मिल, पत्थर कटिंग, पत्थर पॉलिसिंग और सुगर मिल स्थापित की गयी है। बूँदी से मुख्यतः सीमेंट और चावल का निर्यात किया जाता है।

कृषि उद्देश्य से भूमि का 80 प्रतिशत भाग प्रयोग में लाया जाता है। यहाँ की मुख्य फसल चावल, गेहूँ, दालें व गन्ने हैं।

7.4.3. झालावाड़ः

झालावाड़ जो घण्टियों के शहर के रुप में जाना जाता है कि सामाजिक व आर्थिक स्थिति को इस प्रकार देखा जा सकता है।

झालावाड़ की कुल जनसंख्या 2011 की जनगणना अनुसार 14,11,129 है, जिसमें ग्रामीण जनसंख्या 83.75 प्रतिशत और शहरी जनसंख्या 16.25 प्रतिशत है। अतः यहाँ अभी शहरी तौर से पूरी तरह नगर विकसित नहीं है। झालावाड़ में साक्षरता दर काफी निम्न है, जो 61.50 प्रतिशत है। पुरूष साक्षरता 75.25 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 46.53 प्रतिशत है। लिंगानुपात 946 प्रति हजार पुरूष है। अनुसूचित जाति का प्रतिशत 17.26 व अनुसूचित जनजाति का प्रतिशत 12.91 ह।

झालावाड़ की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि ही है। कृषि की दृष्टि से झालावाड़ समृद्ध है। यहाँ मुख्य फसल सोयाबीन, संतरा, गेहूँ और धनिया हैं। यहाँ कुछ छोटेपैमाने के उद्योग भी संचालित किए जा रहे हैं, जो पूरी तरह से कृषि पर केन्द्रित हैं। झालावाड़ से विभिन्न उत्पादों का बाहर निर्यात भी किया जा रहा है जैसेः संतरा, कोटा स्टोन, सिंथेटिक धागा, फाईबर धागा आदि।

7.4.4 सवाईमाधोपुरः

सवाईमाधोपुर राजस्थान में टाइगर रिजर्व और अमरूद के लिए जाना जाता है। सवाईमाधोपुर की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 13,38,114 है। सवाईमाधोपुर का लिंगानुपात 897 प्रति हजार पुरूष है और महिलाओं की जनसंख्या 47.20 प्रतिशत है। सवाईमाधोपुर में कुल साक्षरता 65.4 प्रतिशत है, जिसमें पुरूष साक्षरता 81.15 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 47.5 प्रतिशत है। महिलाओं की स्थिति काफी खराब है। आर्थिक दृष्टि से सवाईमाधोपुर में व्यक्तियों की स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। यहाँ 28 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन कर रही है।

सवाईमाधोपुर की अर्थव्यवस्था कृषि एवं पशुपालन पर निर्भर करती है। यहाँ अनेक सीमेंट फैक्ट्रीयाँ बंद पड़ी हैं और ईकोलोजी और फोरेस्ट क्षेत्र के कारण यहाँ कभी बड़े पैमाने के उद्योग की स्थापना नहीं हो सकती इसलिए

औद्योगिक क्षेत्र केवल 16 प्रतिशत लोगों को ही रोजगार प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त 23 प्रतिशत लोग सेवा क्षेत्र में कार्यरत हैं।

सवाईमाधोपुर में 60 प्रतिशत भूमि पर कृषि की जातो है। जिसमें दालें, ऑयल सीड्स, फलसब्जी, गेहूँचावल का उत्पादन किया जाता है। सवाईमाधोपुर का अमरूद पूरे राजस्थान में व अन्य आसपास के प्रदेशों में प्रसिद्ध है। अमरूद का उत्पादन सवाईमाधोपुर के करीब 15 गाँवों में किया जाता है।

अमरूद का उत्पादन सवाईमाधोपुर में लगभग 3,500 हैक्टेयर में 40,000 MT प्रतिवर्ष किया जाता है। इस तरह सवाईमाधोपुर सब प्रकार से समृद्ध होते हुए भी पिछड़ा हुआ जिला है।

7.4.5. बाराँ:

बाराँ कोटा संभाग में पिछड़ा हुआ जिला है जहाँ विकास की अति आवश्यकता है। यहा की कुल जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 12,22,755 है, बाराँ का लिंगानुपात 929 प्रति हजार पुरूष है। बाराँ में कुल साक्षरता 66.66 प्रतिशत है, जिसमें पुरूष साक्षरता 80.35 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 51.96 प्रतिशत है। अनुसूचित जाति का प्रतिशत 18.09 व अनुसूचित जनजाति का प्रतिशत 22.64 है।

यहाँ की अर्थव्यवस्था पूरी तरह से कृषि पर आधारित है। यहाँ मुख्य कृषि गेहूँ, सोयाबीन, मक्का, चावल है।

7.5 कोटा संभाग में पर्यटन का आर्थिक एवं सामाजिक प्रभाव:

पर्यटन किसी भी देश व क्षेत्र के लिए विकास का प्रमुख मार्ग हो सकता है। पर्यटन के विकास से अनेक आर्थिक एवं सामाजिक प्रभाव उत्पन्न होते हैं। यह प्रभाव सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार के हो सकते हैं। यहाँ शोध

क्षेत्र (कोटा संभाग जिसमें सवाईमाधोपुर को भी शामिल किया गया है) में पर्यटन के सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव को जानने का प्रयास किया गया है।

राजस्थान के पर्यटन विभाग द्वारा पर्यटन से संबंधित जो पर्यटन साँख्यिकी सामग्री एकत्रित की जाती है वह केवल पर्यटको के आगमन की संख्या ही प्रस्तुत करती है। पर्यटन से प्राप्त रोजगार, आय एवं अन्य प्रकार की सामाग्री का एकत्रिकरण नहीं किया जाता है, जिससे संबंधित शोध की परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु शोधकर्ता द्वारा चयनित उत्तरदाताओं से सीधे तौर से जाकर उनका मत व विचार व अन्य संबंधित प्रकाशित प्रतिवेदनों व प्रोजेक्ट रिपोर्ट आदि के आधार पर परीक्षण किया गया है। क्योंकि पर्यटन से संबन्धित रोजगार एंव आय संबंधी सूचनाऐं एकत्रित करना बहुत ही कठिन कार्य है।

यहाँ शोध से संबंधित संपूर्ण क्षेत्र से 80 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है, जिसमें प्रत्येक क्षेत्र से 20–20 उत्तरदाता चयनित किये गये हैं, जिसमें होटल कर्मचारी, टैक्सी ऑपरेटर, ट्रेवल्स ऐजेंसी/ ट्रेवल्स गाईड, पर्यटन विभाग के कर्मचारी शामिल हैं।

7.5.1. आर्थिक प्रभावः

पर्यटन के आर्थिक प्रभावों को कोटा संभाग में इस प्रकार देखा जा सकता है।

(1) रोजगारः

पर्यटन एक ऐसा क्षेत्र है, जो कुशल, अकुशल सभी प्रकार के रोजगार अवसर उपलब्ध कराता है। क्यूकर (Cukier)[11] 2002 ने बताया कि पर्यटन तीन तरह से रोजगार अवसर उपलब्ध कराता है प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष और लाभ के आधार पर। विकासशील देशों में यह मजबूत तर्क है कि इन देशों में स्थानीय लोगों को स्थानीय स्तर पर पर्यटन रोजगार के अवसर उपलब्ध कराता है। यू.एन. डब्ल्यू.टी. ओ. (UNWTO) 2002 के अनुसार ''आर्थिक विकास के लिए पर्यटन एक अच्छे

परिवहन का साधन है'' कोटा सम्भाग में पर्यटन से रोजगार वृद्धि के संदर्भ में चयनित उत्तरदाताओं से उनका मत व उनका विचार जाना गया। जिसे निम्न तालिका द्वारा देखा जा सकता है:

अध्ययन क्षेत्र
तालिका संख्या 5

पश्न	कोटा		बूँदी	सवाईमाधोपुर	झालावाड़	योग	प्रतिशत
	उत्तरदाताओं की संख्या		उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं की संख्या		
क्या पर्यटन से रोजगार में वृद्धि हुई है	हॉ	12	14	16	06	48	60
	नहीं	08	06	04	14	32	40
योग	80						100

स्त्रातःशोधकर्ता द्वारा स्वयं

निम्न तालिका से स्पष्ट होता है कि कोटा संभाग में 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मत है कि यहाँ पर्यटन से रोजगार में वृद्धि हुई है जबकि 40 प्रतिशत का मानना है कि यहाँ पर्यटन से रोजगार में वृद्धि नहीं हुई है।

हाड़ौती ट्रेवल्स, कोटा का कहना है कि यहाँ देश के विभिन्न राज्यों से युवा कोचिंग लेने आते हैं। जिससे विभिन्न प्रकार के रोजगार अवसर उत्पन्न होते हैं। इसके अलावा पर्यटक बून्दी के लिए अच्छी खासी संख्या में पर्यटकों का आगमन होने से यहाँ रोजगार में स्थानीय स्तर पर अच्छी खासी वृद्धि हुई है।

जबकि कुछ स्थानीय लोगों का मानना है कि जिस प्रकार से रोजगार के अवसरों में वृद्धि होनी चाहिए उस तरह से यहाँ रोजगार में वृद्धि नहीं हुई है। पर्यटन यहाँ युवाओं को रोजगार के कम ही अवसर उपलब्ध कराता है।

जबकि झालावाड़ में स्थानीय होटल मालिक जयवीर का मानना है कि यहाँ पयर्टन से कम ही वृद्धि हुई है केवल यहाँ मेले के समय ही लोगों को मौसमी

रोजगार उपलब्ध हो पाता है। तालिका से स्पष्ट होता है कि कोटा संभाग में 60 प्रतिशत का मानना है कि यहाँ रोजगार में वृद्धि हुई है। कुल मिलाकर हमारी परिकल्पना ''कोटा संभाग के पर्यटन उद्योग से रोजगार में वृद्धि हुई है।''सत्य प्रतीत होती है ।

(2) कोटा संभाग में रोजगार की संभावनाऐं:

पर्यटन ऐसा क्षेत्र है, जो कुशल, अकुशल सभी प्रकार के रोजगार अवसर उपलब्ध कराता है। कोटा संभाग में रोजगार की संभावनाओं के संबंध में चयनित उत्तरदाताओं से जानने का प्रयास किया गया उन्होने इस सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किए नैचर प्रमोटर ए.एच. जैदी जो कोटा संभाग में पर्यटन से जुड़े हैं, का मामना है कि ''यहाँ पर्यटन में रोजगार की संभावनाऐं मौजूद हैं। उन्होंने बताया कि यहाँ फोटोग्राफर के तौर पर अच्छी संभावनाऐं हो सकती हैं। यहाँ कि खूबसूरत चम्बल हिल्स, वन्यजीव प्राणी, घड़ीयाल सेंचुरी अनेक आकर्षक स्थल हैं। जहाँ खूबसूरत साईट्स को कैमरे में कैद किया जा सकता है और एक फोटोग्राफर के तौर पर अच्छा रोजगार उत्पन्न हो सकता है''

चन्द्रशेखर जी जो यहाँ पर्यटन से सीधे जुड़े हुए हैं और एक टूरिस्ट गाईड हैं उनसे बात करने पर पता चला की ''यहाँ रोजगार की संभावनाऐं मौजूद हैं। सवाईमाधोपुर अच्छी टूरिस्ट साइट्स है, जहाँ प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में देशी व विदेशी पर्यटक आते हैं, इसलिये युवा होटल्स, टूरिस्ट गाइड, ट्रेवल्स ऑपरेटर आदि के रूप में रोजगार प्राप्त कर अच्छी आय प्राप्त कर सकता है।

इस प्रकार कोटा संभाग के क्षेत्रीय कार्यालय के उपनिदेशक एन.एल. अलावदा का कहना है कि ''सरकार द्वारा पर्यटन क्षेत्र में रोजगार उत्पन्न कराने हेतु अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाऐ जा रहे हैं, जो कम शिक्षित व उच्च शिक्षित

सभी प्रकार के युवाओं के लिए उपलब्ध हैं, जो रोजगार उत्पन्न करते हैं। अतः कोटा संभाग के युवाओं के लिए इस क्षेत्र में अच्छी संभावनाऐं उपलब्ध हैं।

अतः कोटा सम्भाग में रोजगार की संभावनाऐं पर्याप्त रूप से मौजूद हैं, जिनका लाभ युवाओं द्वारा उठाया जा सकता है।

(3) आयः

कोटा संभाग में अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है लेकिन पर्यटन भी आय उत्पन्न करने में प्रमुख सहायक के रूप में यहाँ उभरकर सामने आया है। यहाँ पर्यटन की दृष्टि से बूँदी और सवाईमाधोपुर जो प्रमुख पर्यटन स्थल हैं, इस के अतिरिक्त कोटा जो शैक्षणिक नगरी के नाम से जाना जाता है। यहाँ अच्छी संख्या में पर्यटक आते हैं जो अपनी आय को परिवहन, होटल, मनोरंजन व हैरिटेज साईट्स, वन्यजीव साईट्स को देखने पर खर्च करते हैं, जिसमें स्थानीय लोगों को आय का एक अतिरिक्त साधन प्राप्त होता है। आय संबंधित आँकड़ों का प्रकाशन पर्यटन विभाग द्वारा नहीं किया जाता है। इसलिए उक्त क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों से आय के संबंध में जाना गया, जिसके संबंध में उन्होंने अपने मत व विचार व्यक्त किये उनके मत को इस प्रकार तालिका द्वारा देखा जा सकता हैः

अध्ययन क्षेत्र

तालिका संख्या 6

प्रश्न	कोटा		बूँदी	सवाईमाधोपुर	झालावाड़	योग	प्रतिशत
	उत्तरदाताओं की संख्या		उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं की संख्या		
क्या पर्यटन	हॉ	10	13	18	05	46	57.5

से आय में वृद्धि हुई है	नहीं	10	7	2	15	34	42.5
योग	80						100

स्त्रोतः शोधकर्ता द्वारा स्वयं

अतः इस तालिका से स्पष्ट है कि कुल 80 उत्तरदाताओं में से कुल 46 उत्तरदाताओं यानी 57.5 प्रतिशत का मानना है कि उनकी आय में वृद्धि हुई है। सबसे अधिक सवाईमाधोपुर में 18 उत्तरदाताओं का मानना ह कि यहाँ पर्यटन से उनकी आय में वृद्धि हुई है। जबकि बूँदी में 13 उत्तरदाताओं का मानना है कि यहाँ पर्यटन से उनकी आय में वृद्धि हुई है तथा कोटा व झालावाड़ में क्रमशः 10 और 05 उत्तरदाताओं का मानना हैं कि यहाँ पर्यटन से उनकी आय में वृद्धि हुई है। जबकि 42.5 पतिशत का ही मानना है कि यहॉ पर्यटन से आय में वृद्धि नहीं हुई है ।

अधिकतर उत्तरदाता बताते हैं, कि पर्यटन मौजूद नवम्बर माह से फरवरी तक पर्यटकों का आगमन अधिक होता है जिससे इन दिनों में उन्हें पर्यटन से अच्छी आय प्राप्त हो जाती है। लेकिन गर्मीयों के मौसम में पर्यटकों का आगमन कम होने से उनकी आय कम हो जाती है। सवाईमाधोपुर में हस्तशिल्प दुकान के मालिक गफ्फार का मानना है कि यहां पर्यटन से अच्छी आय प्राप्त हो जाती है। जबकि कोटा में 50 प्रतिशत उत्तरदाता हॉ में और 50 प्रतिशत उत्तरदाता नहीं में उत्तर देते है। कुछ का कहना है कि यहॉ पर्यटन से तो कम लेकिन कोंचिग संस्थानों में आने वाले छात्रों से अधिक आय प्राप्त होती है। जबकि बून्दी में जहाँ देशी व विदेशी पर्यटकों का आगमन होने के कारण पर्यटन से स्थानीय लोगों को अच्छी आय प्राप्त हो जाती है। अतः सम्पूर्ण रूप से देखा जाये तो पर्यटन से लोगों की आय में वृद्धि हुई है। जिससे हमारी परिकल्पना ‘‘कोटा संभाग में पर्यटन से आय में वृद्धि हुई है। सत्य प्रतीत होती है।’’

7.5.2. पर्यटन विकास के नकारात्मक प्रभावः

पर्यटन विकास से कुछ नकारात्मक प्रभाव भी उत्पन्न होते हैं। उत्तरदाताओं द्वारा पर्यटन के नकारात्मक प्रभााव के बारे में चर्चा की गयी, जिससे पर्यटन के निम्न प्रभाव संबंधित क्षेत्र में पाये गये।

1. किराया और भूमि की कीमतों में वृद्धिः

पर्यटन के नकारात्मक प्रभाव में से एक मकानों का किराया भूमि की कीमतो में वृद्धि के रूप में सामने आया है। कोटा संभाग में मुख्यतः कोटा में शैक्षणिक नगरी होने के कारण यहाँ छात्रावासों का निर्माण होने व शहरीकरण बढ़ने से भूमि की कीमतो में वृद्धि हुई है। इसके अलावा मकानों के किराये भी बढ़े हैं। इसी प्रकार बूँदी जैसे पर्यटन स्थलों पर भी पयटकों को ऊँची कीमतों पर कमरे उपलब्ध हो पाते हैं।

2. मौसमी प्रभावः

पर्यटन के लिए पर्यटक एक मौसम विशेष में अधिक आते हैं। कोटा संभाग में पर्यटको का आगमन अधिकतर नवम्बर से फरवरी तक रहता है। अधिकतर पर्यटक बूँदी में, बूँदी महोत्सव के दौरान, कोटा म, दशहरे मेले के दौरान आते हैं, जिससे इस समय वस्तुओं की कीमतों में दुगुनी, तिगुनी वृद्धि हो जाती है। इसी प्रकार झालावाड़ में चन्द्रभागा मेले के दौरान यहाँ घरेलू पर्यटका का आगमन अधिक होने से स्थानीय लोगों को अच्छी आय प्राप्त हो जाती है। लेकिन पर्यटका को बढ़ी हुई कीमतो का सामना करना पड़ता है।

7.6 कोटा सम्भाग में शहरी विकास एवं जीवन स्तरः

शहरीकरण किसी देश व प्रदेश या क्षेत्र विशेष के सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति को प्रदर्शित करता है। शहरीकरण के विकास से लोगों के रहनसहन के स्तर में वृद्धि होती है।

रोजगार, आय के अनेक अवसर उपलब्ध होते हैं। साथ ही शहरीकरण में भी वृद्धि पर्यटन को किसी ना किसी रूप में बढ़ावा देता है। कोटा संभाग में शहरीकरण के विकास के लिए राजस्थान सरकार द्वारा स्थानीय निकायों के सहयोग से सर्वेक्षण कराये गये हैं। राजस्थान सरकार द्वारा शहरी विकास के लिए राजस्थान शहरी विकास निवेश कार्यक्रम (RUSDIP) का प्रारम्भ किया गया है, जहाँ वर्तमान सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति संबंधी रिपोर्ट सरकार को सौंपी गयी है। जिससे उनका शहरी विकास संभव हो सके।

7.6.1. शहरी विकासः

कोटा संभाग के काटा, झालावाड़, बूँदी व सवाईमाधोपुर में शहरी विकास को निम्न प्रकार से देखा जा सकता है[12]:

(1) बूँदीः

पानी की आपूर्तिः

बूँदी में 60 प्रतिशत जनसंख्या को पानी की आपूर्ति पाइप लाईन द्वारा की जाती है। जबकी अन्य जनता अपने लिए पानी के स्वयं के साधनों जैसे हैण्डपम्प का प्रयोग करते हैं। वर्तमान में बूँदी में प्रत्येक व्यक्ति को 135 लीटर पानी की उपलब्धता है।

सीवरेज और सेनिटेशनः

बूँदी में भूमिगत सीवरेज सिस्टम नहीं है। केवल 50 से 60 प्रतिशत गृह स्वामियों द्वारा बताया गया कि उनके यहाँ सैप्टिक टैंक बने हुए हैं। ज्यादातर अपशिष्ट बहाने की व्यवस्था खुले में है।

पानी की निकासी प्रणाली (DRAINAGE):

बूँदी में जल निकासी पूरी तरह विकसित नहीं है। जल निकासी न होने के कारण वर्षा का गन्दा पानी पूरी तरह से शहर से बाहर नहीं जा पाता है।

स्वास्थ्य और शैक्षणिक व्यवस्थाः

बूँदी में अच्छो स्वास्थ्य एवं शैक्षणिक व्यवस्था है। यहाँ 933 प्राथमिक विद्यालय और 89 सैकण्ड्री स्कूल और हायर सैकण्ड्री स्कूल व दो महाविद्यालय और तीन आई.टी.आई स्थापित ह। यहाँ एक जनरल हॉस्पीटल तथा एक क्षय रोग हॉस्पीटल की सुविधा उपलब्ध है।

(2) झालावाड़ः

जल आपूर्तिः

झालावाड़ में जल आपूर्ति पी.एच.ई.डी. द्वारा की जाती है। काली सिंध पर दो पृथक टैंक बने हुए हैं, जो झालावाड़ व झालरापाटन के लिए जल आपूर्ति करते हैं। मानपुरा और भंवरांसा में मानव निर्मित जल ट्रीटमेंट प्लान्ट स्थापित किये गये हैं, जो झालावाड़ को शुद्ध जल आपूर्ति करता है।

सीवरेज और सेनिटेशनः

झालावाड़ व झालरापाटन में कोई भी सीवरेज और सेनिटेशन सिस्टम नहीं है। केवल एक तिहाई घरों में ही व्यक्तिगत रूप से सेनिटेशन सुविधा उपलब्ध है। म्यूनिसिपल बोर्ड द्वारा सामुदायिक टॉयलेट की सुविधा वहाँ उपलब्ध करायी गयी ह।

अपशिष्टः

कस्बे में किसी प्रकार के अपशिष्ट की निकासी के लिए प्रबंधन तंत्र स्थापित नहीं है। ज्यादातर अपशिष्ट खाली पड़े प्लॉट में ही फैंके जाते हैं।

स्वास्थ्य और शिक्षा सुविधाः

झालावाड़ चिकित्सा सुविधा का मुख्य केन्द्र है। झालावाड़ में चार हॉस्पिटल बने हुए हैं, जहाँ 300 बैड की सुविधा है। इसके साथ ही विशेष रूप से टी.बी. हॉस्पिटल यहाँ स्थापित किया गया है। झालावाड़ में शिक्षा के क्षेत्र में 31 प्राथमिक विद्यालय और 52 सैकण्ड्री स्कूल और 18 हायर सैकण्ड्री स्कूल स्थापित हैं। इसके अलावा एक व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थान भी यहाँ है।

(3) सवाईमाधोपुर[13]:

जल आपूर्तिः

सवाईमाधोपुर में भूमिगत जल और सतही जल दोनों का ही प्रयोग किया जा रहा है। यहाँ 63 ट्यूबवैल और 10 खुले कुएँ हैं। जल की आपूर्ति बनास नदी से भी की जाती है। इन सब से करीब 8 डस्क जल का उत्पादन हो रहा है। वर्तमान में पाइप लाईन और जल आपूर्ति लगभग 67.79 स्च्ब्क किया जा रहा है।

सीवरेज और सेनिटेशन सिस्टम[14]:

सवाईमाधोपुर में भूमिगत सीवरेज सिस्टम का प्रयोग नहीं किया जा रहा है। केवल 50 प्रतिशत गृह स्वामियों ने सेप्टिक टैंक होना बताया है। बाकि अपशिष्ट खुले में ही बहते हैं, जो संतोषजनक नहीं है।

अपशिष्टः

सवाईमाधोपुर में अपशिष्ट जो गन्दी बस्तियों, व्यवसायिक क्षेत्र आदि द्वारा उत्पन्न किये जाते हैं, का निश्चित समाधान नहीं हैं।

शैक्षणिक एवं स्वास्थ्य सुविधाऐंः

सवाईमाधोपुर में शिक्षा की सुविधा की दृष्टि स यहाँ निजी एवं सरकारी दोनों प्रकार के शैक्षणिक संस्थाऐं उपलब्ध हैं। करीब 179 सैकण्ड्री और सीनियर

सैकण्ड्री स्कूल और 6 सामान्य डिग्री कॉलेज जिसमें एक इंजीनियरिंग कॉलेज और एक आई.टी.आई है।

आसपास के क्षेत्र में सवाईमाधोपुर स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं का केन्द्र है। यहाँ जिला अस्पताल, 4 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र और 22 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र हैं, जो यहाँ के व्यक्तियों को स्वास्थ्य संबंधी सुविधा उपलब्ध कराते हैं।

मानव विकास सूचकांक की दृष्टि से सवाईमाधोपुर कोटा सम्भाग में सबसे पिछड़ा क्षेत्र है, जहाँ विकास की आवश्यकता है। इसी प्रकार बूँदी, झालावाड़, बाराँ की स्थिति ज्यादा सन्तोषजनक नहीं है। राजस्थान राज्य के अर्थ एवं सांख्यिकी विभाग द्वारा वर्ष 2012 के अनुसार कोटा संभाग में नागरिक सुविधाओं की उपलब्धता को इस प्रकार देखा जा सकता है।

कोटा सम्भाग में नागरिक सुविधाओं की उपलब्धता (प्रतिशत)

तालिका संख्या 7

सुविधाऐं	कोटा	बूँदी	झालावाड़	सवाईमाधोपुर	बाराँ
विद्युत	89.5	62.2	78.1	55.5	67
साफ पीने योग्य जल	98.9	97.6	98.5	97.8	98.5
टॉयलेट	51.40	19.10	16.60	20.70	17.60

निम्न तालिका से स्पष्ट है कि कोटा संभाग में शहरी सुविधाओं को देखा जाये तो कोटा की स्थिति ही बेहतर है जबकी अन्य जिलों की स्थिति सन्तोषजनक नजर नहीं आती है और पर्यटन विकास के लिए यह आवश्यक है कि शहरी सुविधाओं का विकास किया जाये।

जहाँ कोटा में विद्युत, पेयजल व टॉयलेट की सुविधा क्रमशः 89.5, 98.9 और 51.40 प्रतिशत है, वहीं बूँदी और सवाईमाधोपुर पूरे देश व विदेश में मुख्य पर्यटन स्थलों के रूप में पहचाने जाते हैं। वहाँ इन सुविधाओं की स्थिति काफी असन्तोषजनक है। जहाँ बूँदी में विद्युत उपलब्धता 62.2 प्रतिशत है और सवाईमाधोपुर में 55.5 है, वहीं टॉयलेट की सुविधा बूँदी और सवाईमाधोपुर में क्रमशः 19.10 व 20.70 प्रतिशत है, संतोषजनक नहीं कही जा सकती है। अतः इन सुविधाओं का विकास अति आवश्यक है।

7.6.2 जीवन स्तर[15]:

जीवन स्तर का मापन करना क्षेत्र विशेष में काफी कठिन कार्य है। इसलिए उपलब्ध तथ्यों व विभिन्न सरकारी रिपोर्टों के आधार पर क्षेत्र विशेष में जीवन स्तर को जानने का प्रयास किया गया। UNDP (2001) के अनुसार जीवन स्तर का अर्थ है ''मानव कल्याण की धारणा सामाजिक संकेतों द्वारा मापने के बजाय आय और उत्पादन के द्वारा मात्रात्मक रूप में ज्ञात की जाती है। यहाँ व्यक्तिगत स्तर पर जीवन स्तर का मापन लोगों द्वारा विशेष क्षेत्र में जैसेः घर, खाद्य पदार्थो की उपलब्धता, कपड़े, परिवहन और रोजगार की संभावनाओं के आधार पर जीवन का मापन किया जा सकता है।''

राजस्थान के अर्थ एवं सांख्यिकी विभाग द्वारा राजस्थान के 33 जिलों के लिए मानव विकास सूचकांक (HDI) तैयार किया जाता है। HDI रिपोर्ट 2007 के अनुसार लोगों के रहनसहन के स्तर की स्थिति को शोध क्षेत्र में इस प्रकार देखा जा सकता है।

तालिका संख्या 8

कोटा सम्भाग	HDI	रैंक
कोटा	0.787	02
बूँदी	0.649	13

झालावाड़	0.614	16
सवाईमाधोपुर	0.561	26
बाराँ	0.653	12

कोटा का HDI रैंक 0.787 है कोटा का राजस्थान में रैंक 02 है जो बेहतर स्थिति को प्रदर्शित करता है। जबकि बूँदी का HDI रैंकिंग रेट 0.649 के साथ 13 वें स्थान पर है, बाराँ, झालावाड़ का क्रमशः 12 और 16 और सबसे खराब स्थिति सवाईमाधोपुर की है, जहाँ रैंक मात्र 26 है। जो बेहद असन्तोषजनक स्थिति को दिखाती है।

शोध क्षेत्र में चयनित उत्तरदाताओं से जो पर्यटन से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष तौर से जुड़े हैं। जीवन स्तर संबंधी जानकारी प्राप्त की गई है। जिसे यहाँ इस प्रकार देखा जा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र
तालिका संख्या 9

कोटा संभाग	कोटा		बूँदी	सवाईमाधोपुर	झालावाड	योग	प्रतिशत
प्रश्न	उत्तरदाताओं की संख्या		उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं की संख्या		
क्या पर्यटन से आपके जीवन स्तर में वृद्धि हुई है	हॉ	12	14	16	06	48	60
	नहीं	08	06	04	14	32	40
क्या पर्यटन से शहरी विकास हुआ	हॉ	10	08	12	05	35	43.75
	नहीं	10	12	08	15	45	56.25
कुल		80					100

स्त्रोतः शोधकर्ता द्वारा स्वयं

निम्न से स्पष्ट है कि जीवन स्तर संबधी प्रश्नों के उत्तर में कुल 80 उत्तरदाताओं में से 48 यानि कि 60 प्रतिशत का मानना है कि यहाँ पर्यटन से उनके जीवन स्तर में वृद्धि हुई है।

जबकि शहरी विकास से संबन्धित प्रश्न के संबध में सिर्फ 43.75 प्रतिशत उत्तरदाता ही सहमत है कि यहां शहरी विकास पर्यटन के कारण हुआ है जबकि 56.25 प्रतिशत का मानना है कि यहां पर्यटन के विकास से यहॉ कोई शहरी विकास नहीं हो पाया है।

इस सम्बन्ध में स्थानीय लोगों से चर्चा की गई उन्होंने बताया कि प्रतिवर्ष यहां काफी संख्या में पर्यटक आते है लेकिन यहां पर्यटन के लिहाज से सड़क, पीने के पानी, अपशिष्ट निवारण, विद्युत आपूर्ति पर्याप्त नहीं है। इन सुविधाओं का बढाया जाना आवश्यक है। अतः हमारी परिकल्पना पर्यटन के फलस्वरूप शहरी संस्थागत विकास में वृद्धि हुई है। सही साबित नहीं होती।

लेकिन पर्यटन से जुड़ने के कारण लोगों को स्थानीय स्तर पर रोजगार व आय के साधन उपलब्ध होने के कारण उनके जीवन स्तर में अवश्य वृद्धि हुई है। बूॅंदी में एक टूरिस्ट गाइड से बात करने पर पता चला कि उन्हें पर्यटन से अच्छी आय प्राप्त हो जाती है। जिससे वे जीवन सम्बन्धी आवश्यकताओं को आसानी पूरा ही नहीं कर रहे बल्कि अच्छा जीवन व्यतीत कर रहे है। अतः जीवन स्तर के सम्बन्ध में पर्यटन से लोगों के जीवन स्तर में अच्छी वृद्धि हुई है।

7.7 कोटा सम्भाग में पर्यटन का सामाजिक प्रभावः

कोटा सम्भाग में पर्यटन विकास का स्थानीय समुदाय पर सामाजिक प्रभाव जाना गया है।

Affeld (एफैल्ड) 1975 के अनुसार[16]:

सामाजिक प्रभाव को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

1. पर्यटका को ध्यान में रखते हुए इसके अन्तर्गत शोधकर्ता पर्यटकों द्वारा स्थानीय व्यक्तियों का वस्तुओं को खरीदते समय किया गया व्यवहार, उनको स्थानीय लोगों का उनके प्रति नजरीया जानने का प्रयास करता है।
2. स्थानीय लोगों को ध्यान में रखते हुए इसके अन्तर्गत पर्यटन स्थलों पर पर्यटको के प्रति स्थानीय लोगों का व्यवहार।
3. पर्यटकों और स्थानीय लोगों में आपस में सामाजिक व सांस्कृतिक तौर से घुलमिल जाना।

यहाँ पर्यटन के सामाजिक प्रभाव के दो पहलुओं सकारात्मक और नकारात्मक दोनों को जानना आवश्यक है।

7.7.1. सकारात्मक प्रभावः

कोटा संभाग में पर्यटन के सकारात्मक प्रभाव के अन्तर्गत चयनित उत्तरदाताओं में टूअर ऑपरेटर, सरकारी विभाग के कर्मचारी, होटल मालिक टूरिस्ट गाईड आदि शामिल हैं, के द्वारा शोध क्षेत्र में पर्यटन के सकारात्मक प्रभाव को जानने के लिए प्रश्न पूछे गये।

कोटा सम्भाग में पर्यटन के सामाजिक प्रभाव
अध्ययन क्षेत्र
तालिका संख्या 10

कोटा संभाग	कोटा		बूँदी	झालावाड़	सवाईमाधोपुर	योग	प्रतिशत
प्रश्न	उत्तरदाताओं की संख्या		उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं की संख्या		
क्या पर्यटन विकास का समाजिक प्रभाव	हॉ	12	15	10	17	54	67.5

सकारात्मक रहा है	नहीं	08	05	03	10	26	32.5
कुल	80						100

स्त्रोतः शोधार्थी द्वारा स्वयं

निम्न तालिका से स्पष्ट है कि कोटा संभाग में पर्यटन का सामाजिक प्रभाव सकारात्मक रहा है अर्थात 54 उत्तरदाता यानि 67.5 प्रतिशत मानते हैं कि पर्यटन से यहाँ सामाजिक प्रभाव सकारात्मक रहा है। यहाँ लोगों का व्यवहार पर्यटकों के प्रति अच्छा रहता है। उसे यहाँ कम ही परेशानियों लूटपाट, चोरी की घटनाऐं या अभद्रता का शिकार नहीं होना पड़ता है। केवल 32.5 प्रतिशत उत्तरदाता ही मानते है कि पर्यटक का सामाजिक प्रभाव सकारात्मक नहों रहा है। अतः कुल मिलाकर पर्यटन का प्रभाव सकारात्मक ही रहा है।

7.7.2. कोटा संभाग में पर्यटन के नकारात्मक सामाजिक प्रभावः

पर्यटन विकास से कुछ नकारात्मक सामाजिक प्रभाव भी उत्पन्न होते हैं। जैसेः पर्यटकों के साथ लूटपाट, छेड़छाड़, पर्यटक स्थलों पर गंदगी करना, पर्यटन धरोहरों के साथ छेड़छाड़ आदि ऐसी घटनाऐं हैं जो पर्यटन के नकारात्मक सामाजिक प्रभाव को प्रदर्शित करती है।

कोटा संभाग में उत्तरदाताओं द्वारा पर्यटन विकास के द्वारा सामाजिक आर्थिक लाभ तो स्थानीय व्यक्तियों को प्राप्त होते हैं। परन्तु साथ ही कुछ चीजें ऐसी देखने को मिलती हैं, जो सामाजिक वैमनस्य पैदा कर देती हैं। क्योंकि जो बाहर से पर्यटक आता है, वह अपनी आय का एक बड़ा भाग आरामदायक वस्तुओं और सेवाओं पर व्यय करता है। जिससे स्थानीय लोगों में एक सामाजिक गैप की भावना उत्पन्न होती है, क्योंकि वह इतना पैसा खर्च करने में समर्थ नहीं हो पाते हैं।

असामाजिक तत्वः

कुछ असामाजिक तत्व ऐसे होते हैं, जो पर्यटन स्थल की छवि को खराब करते हैं। पर्यटको के साथ छेड़छाड़, अभद्रता या लूटपाट करके परेशान करते हैं या पर्यटन स्थलों के साथ छेड़छाड़ करके उनकी सुन्दरता को खराब करने का प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार की खबरें कभीकभी समाचार पत्रों में आती ह तो पर्यटन स्थल की गलत छवि निर्मित होती है। ऐसा ही कुछ कोटा संभाग के पर्यटन स्थलों के संदर्भ में हाल ही में समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ।

दैनिक भास्कर[17] समाचार पत्र (27 सितम्बर, 2013) में कोटा गढ़ पैलेस में रावमाधो सिंह म्यूजियम में दीवार पर 18वीं सदी के कई चित्र बनें हैं, जिसे किसी असामाजिक तत्व द्वारा खुरच कर खराब कर दिया गया। इससे यहाँ के लोगों की एक नकारात्मक छवि बनती है, जो ठीक नहीं है।

असुरक्षा की भावना के सम्बन्ध में चयनित उत्तरदाताओं से पूछने पर उन्होने बताया कि कोटा संभाग में इस प्रकार की घटनाऐं पर्यटको के साथ कम ही होती है, क्योंकि सवाईमाधोपुर जहाँ पर्यटक अच्छी संख्या में आते हैं। वहाँ पर्यटन पुलिस का होना इस तरह की घटनाओं पर रोकने में सफल हुआ है, जिससे वहाँ ऐसी घटनाऐं नहीं होती हैं। लेकिन बूँदी, कोटा, झालावाड़ में इस प्रकार की घटनाऐं बहुत कम ही होती है, जिससे यहाँ सामाजिक दृष्टि ठीक बनी हुई है।

राज्य सरकार द्वारा किये गये प्रयासः

कोटा संभाग में राज्य सरकार द्वारा किये गये प्रयास के संदर्भ मुख्यतः कोटा, बूँदी, झालावाड़, बाराँ के बारे में कोटा क्षेत्रीय कार्यालय के उपनिदेशक नंदलाल जी अलावदा से जानने का प्रयास किया गया उनका मानना है, कि अभी कोटा संभाग में पर्यटन के क्षेत्र में बहुत कुछ किया जाना बाको है। इसके लिए

जिला अधिकारी की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया है, जो पर्यटन विकास के लिये योजना तैयार करेगी।

जबकि स्थानीय लागों व उत्तरदाताओं का भी यही मानना है कि अभी सरकार द्वारा यहाँ ठोस प्रयास नहीं किये गये हैं।

इस प्रकार उक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र में पर्यटन को और अधिक विकसित किये जाने की आवश्यकता है। इसके लिए आवश्यक तौर से सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से पर्यटन विकास हेतु शहरीकरण, आधारभूत ढाँचे को और अधिक विकसित किये जाने की आवश्यकता है। खासकर बूँदी, सवाई माधोपुर, झालावाड़ जो अभी भी काफी पिछड़े हुए है, के लिए आवश्यक तौर से शहरी सुविधाओं का विकास जाना चाहिए तथा पर्यटन महत्व के स्थलों को और अधिक विकसित किया जाना चाहिए जिससे अधिक से अधिक पर्यटक यहाँ आयें और लोगों के लिए अतिरिक्त रोजगार अवसर उपलब्ध हो सके। इसके लिए राज्य सरकार द्वारा अधिक गंभीरतापूर्वक प्रयास किया जाना आवश्यक है।

संदर्भ सूचीः

1. www.rajasthantourism.org.in
2. राष्ट्रीय पर्यटन नीति, 2002 पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय, पर्यटन विभाग भारत सरकार, 2002
3. तदैव
4. तदैव
5. Tourism Sector in India, Parliament Library and Reference, Research, Documentation and information Service, August 2013.
6. www.rajasthantourism.org.in
7. तदैव
8. राव, कनक सिंह, धरोहरः राजस्थान सामान्य ज्ञान, पिंकसिटी पब्लिशर्स, जयपुर, 2013, पृष्ठ संख्या बी111, बी116
9. राजस्थान पर्यटन, साँख्यिकी वार्षिक प्रतिवेदन, वर्ष 2013
10. www.directorate of economics Statistics.html
11. Cukier, J., Tourism employment issues in developing countries, 2002, Page No. 165-201
12. Rajasthan Urban Sector Development Investment Program Bundi, Jhalawar Roads improvement sub project (Tr-02), prepared by Local Self Government Dept., Rajasthan Urban Infrastructure Development Project, 2012.
13. Economic Development Investment opportunity Study Sawai Madhopur Rajasthan, CII Report, 2014.
14. तदैव
15. Directorate of Economics statistics, 2011.
16. Affeld, D., Social Aspects of the Development of Tourism United Nation planning and development of tourist Industry in the ECE Region, New York. United Nation No. 169, 1975.
17. दैनिक भास्कर समाचार पत्र, 27 सितम्बर, 2013

अध्याय अष्टम
उपसंहार

8.1 निष्कर्ष

8.2 सुझाव

अध्याय–अष्टम

उपसंहार

प्रस्तुत शोध ''कोटा संभाग में पर्यटन उद्योग की दशा–दिशा सामाजिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य में'' शीर्षक पर किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यों व परिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया, शोधकर्ता द्वारा तीन परिकल्पनाऐं (1) कोटा संभाग के पर्यटन उद्योग से रोजगार में वृद्धि हुई है (2) कोटा संभाग में पर्यटन से होने वाली आय में वृद्धि हुई है (3) कोटा संभाग में पर्यटन के फलस्वरूप शहरी संस्थागत विकास एवं व्यक्तियों के जीवन स्तर में वृद्धि हुयी है, की गई है तथा कुछ उद्देश्य भी निर्धारित किये गयेः

1. कोटा संभाग में पर्यटन के लिए आधारभूत सुविधाओं का पता लगाना।
2. कोटा संभाग में पर्यटन के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं का पता लगाना।
3. पर्यटन का आर्थिक एंव सामाजिक प्रभाव को जानना।
4. कोटा संभाग में पर्यटन के आर्थिक प्रभावों का अध्ययन करना।
5. राजस्थान सरकार के पर्यटन विभाग द्वारा कोटा संभाग के विकास के लिए किये गये प्रयासों का पता लगाना।

शोध के उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं की सत्यता की जाँच के लिए वैयक्तिक अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया और अध्ययन से प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष प्राप्त किये गये हैं। प्राप्त निष्कर्षो को इस प्रकार देखा जा सकता हैः

8.1 निष्कर्षः

8.1.1 रोजगारः

शोध अध्ययन से पता चलता है कि कोटा संभाग में पर्यटन से रोजगार में वृद्धि हुई है। चयनित उत्तरदाताओं से प्राप्त मतों के आधार पर कहा जा सकता

है कि यहाँ रोजगार में वृद्धि हुई है। चयनित उत्तरदाताओं में से 48 उत्तरदाताओं यानी 60 प्रतिशत का मानना है कि यहाँ पर्यटन से रोजगार में वृद्धि हुई है।

रोजगार की सम्भावानाऐं:

रोजगार की संभावनाओं के बारे में जाना गया। यहाँ रोजगार के अवसर फोटोग्राफी, ट्रेवल्स ऑपरेटर, टूरिस्ट गाईड, होटल्स हैण्डीक्रफ्ट में पर्यटन रोजगार के अवसर मौजूद हैं।

8.1.2. आय:

जैसा की अध्ययन से स्पष्ट है कि उत्तरदातओं द्वारा दिये गये उत्तरों के आधार पर जिनमें चुने गये 80 उत्तरदाताओं में से 46 यानी 57.5 मानते हैं कि उनकी आय में वृद्धि हुई है। इस सम्बन्ध में सवाईमाधोपुर में ऑटोरिक्शा चालक महिपाल का मानना है कि महीने भर में वे आराम से 10 से 12 हजार कमाई कर लेते हैं। इस प्रकार बूँदी में भी एक रेस्टोरेंट संचालक यह स्वीकार करते हैं कि पर्यटन से उनका धंधा अच्छा चल रहा है। अतः इससे पता चलता है कि पर्यटन से लोगो को स्थानीय स्तर पर आय प्राप्त होती है।

8.1.3. शहरी विकास एवं जीवन स्तर:

प्रस्तुत शोध अध्ययन में कोटा संभाग में शहरी विकास जीवन स्तर के बारे में प्रतिवेदनों व उत्तरदाताओं से निष्कर्ष प्राप्त किये गये। इस अध्ययन से पता चलता है कि कोटा संभाग में शामिल कोटा, बूंदी, बाराँ, झालावाड़, सवाईमाधोपुर में पर्यटन के विकास के लिए शहरी सुविधाऐं, जैसे बिजली, पानी, सड़क व टॉयलेट जैसी शहरी सुविधाओं का विकास करना आवश्यक है। इस दृष्टि से देखा जाये तो कोटा सबसे बेहतर स्थिति में है। कोटा में विद्युत आपूर्ति की उपलब्धता 89.5 प्रतिशत, साफ पीने योग्य पानी की उपलब्धता 98.8 प्रतिशत तथा टॉयलेट की सुविधा 51.40 प्रतिशत है। जबकि बूँदी में शहरी सुविधाऐं पूरी

तरह से अभी विकसित नहीं है। यहाँ विद्युत उपलब्धता 62.20 प्रतिशत है, जो पर्याप्त नहीं है। पीने योग्य पानी की उपलब्धता में स्थिति बेहतर (97.6 प्रतिशत) नजर आती है। जबकि टॉयलेट की सुविधा केवल 19.10 प्रतिशत ही है, जो ठीक स्थिति को प्रकट नहीं करती है।

सवाईमाधोपुर जो पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यहाँ की स्थिति विद्युत उपलब्धता में बूँदी से भी कम 55.5 प्रतिशत ही है। जबकि साफ पीने योग्य पानी की उपलब्धता 97.5 प्रतिशत तथा टॉयलेट की सुविधा भी पर्याप्त (20.70 प्रतिशत) उपलब्धता नहीं है।

बाराँ जिला में विद्युत उपलब्धता 67 प्रतिशत है तथा पीने योग्य पानी की उपलब्धता 98.5 प्रतिशत है। पानी की दृष्टि से देखा जाए तो कोटा संभाग पूरी तरह से समृद्ध है।

शोध में जीवन स्तर के सम्बन्ध में राजस्थान के अर्थ एवं सांख्यिकीय विभाग द्वारा प्रकाशित HDI रिपोर्ट के आधार पर कोटा की स्थिति सबसे बेहतर है। कोटा HDI रैंक राजस्थान में 02वीं रैंक प्राप्त है। जबकि सवाईमाधोपुर की हालत सबसे खराब ह, जहाँ 28 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करते हैं और HDI रैंक 26 है, जो काफी खराब स्थिति को प्रकट करती है। जबकि बूँदी, झालावाड़ व बाराँ की HDI रैंक क्रमशः 13, 16, 12 है, जो सवाईमाधोपुर से अधिक बेहतर स्थिति को बताती है।

शोध क्षेत्र में चयनित उत्तरदाताओं से जो पर्यटन से जुड़े हुए है पर्यटन से उनके जीवन स्तर पर प्रभाव के सम्बन्ध स्पष्ट होता है। संबंधित क्षेत्र में लोगों के जीवन स्तर में सुधार आया है, जो लोग सीधे तौर से जुड़े हुए हैं उनका मुख्य व्यवसाय पर्यटन ही है और उनकी आजीविका का एक मात्र साधन है। कुल

80 उत्तरदाताओं में से 48 यानी 60 प्रतिशत मानते हैं कि पर्यटन से जुड़े रहने के कारण उनके जीवन सम्बन्धी आवश्यकताऐं पूरी हो रही हैं।

जबकि शहरी विकास के संबंध में कुल 80 उत्तरदाताओं में से 45 अर्थात 56.25 प्रतिशत का मानना है कि पर्यटन से शहरी विकास संभव नहीं हुआ है।

अतः हमारी परिकल्पना ''पर्यटन के फलस्वरूप संस्थागत शहरी विकास एवं जीवन स्तर में वृद्धि हुई है। पूरी तरह सही नहीं है।

8.1.4. कोटा संभाग में पर्यटन का सामाजिक प्रभावः

कोटा संभाग में सामाजिक प्रभाव संबंधी निष्कर्ष प्राप्त किये गये अध्ययन से पता चलता है कि सामाजिक दृष्टि से कोटा की स्थिति कोटा संभाग के अन्य जिलों से बेहतर हैं। यहाँ साक्षरता का स्तर 76.56 प्रतिशत है। जबकि सबसे खराब स्थिति सवाईमधोपुर की है। पर्यटन विकास के सामाजिक प्रभाव के संदर्भ में 80 उत्तरदाताओं में से 54 यानी 67.5 प्रतिशत का मानना है कि पर्यटन का सामाजिक प्रभाव सकारात्मक पड़ा है। यहाँ के स्थानीय लोगों का व्यवहार सकारात्मक है। पर्यटन से जुड़े जैदी भाई जो कोटा संभाग से काफी परिचित हैं, का मानना है कि यहाँ पर्यटको की आवभगत अच्छे से की जाती है। बूँदी राज्य में स्थानीय लोग विदेशी पर्यटकों के साथ मस्ती करते हैं। अतः यहाँ पर्यटक बार –बार आना चाहता है।

राज्य सरकार के द्वारा किये गये प्रयासः

राज्य सरकार द्वारा यदि सवाईमाधोपुर को छोड़ दिया जाये तो कोटा, बूँदी, झालावाड़ में अभी पर्याप्त प्रयास नहीं किये गये है।

आधारभूत सुविधाऐंः

आधारभूत सुविधाओं का अध्ययन करने पर पता चलता है कि यहाँ पर्यटन की दृष्टि से पर्याप्त रूप से मौजूद है। होटल, मॉल्स, सड़क, पानी, मनोरंजन आदि सुविधाऐं मौजूद हैं।

8.2. सुझावः

प्रस्तुत शोध विषय पर शोधकर्ता ने अध्ययन कर निष्कर्ष प्राप्त किये गये हैं कि राजस्थान राज्य पर्यटन के क्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण स्थान रखता है और सरकार द्वारा पर्यटन को बढ़ावा देने के प्रयास किये जा रहे हैं। प्रस्तुत अध्ययन कोटा संभाग व सवाईमाधोपुर पर आधारित है। जहाँ पर्यटन विकास की संभावनाऐं मौजूद ह। यहाँ पर्यटन विकास के लिए पर्याप्त आधारभूत सुविधाऐं मौजूद हैं। लेकिन पर्यटन के विकास की गति धीमी है। अतः इस क्षेत्र के विकास हेतु निम्न सुझाव प्रस्तुत किये जा सकते हैं।

1. कोटा सम्भाग के सुन्दर व आकर्षक पर्यटन स्थलों को आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया
जाना चाहिएः

राजस्थान के अन्य पर्यटक स्थलों जैसे उदयपुर, बीकानेर, जोधपुर, सवाईमाधोपुर को जिस तरह प्रस्तुत किया है। उसी प्रकार कोटा संभाग के बूँदी, झालावाड़, कोटा को भी आकर्षक ढ़ंग से प्रस्तुत किया जाना आवश्यक है। जिससे पर्यटकों को इन स्थलों के बारे में जानकारी उपलब्ध हो सके और पर्यटन विकास तीव्रता से किया जा सके।

2. पर्याप्त प्रचार किया जाना चाहिएः

कोटा संभाग के पर्यटन स्थलों का प्रचारप्रसार किया जाना आवश्यक है कोटा संभाग के पर्यटन स्थलों के प्रचारप्रसार के लिए रणनीतिपूर्वक कार्य किया

जाना चाहिए। सवाईमाधोपुर प्रमुख पर्यटन स्थल है, और यहाँ काफी संख्या में देशी व विदेशी पर्यटक आते हैं। केवल सवाईमाधोपुर तक ही उनका आगमन होता है। सवाईमाधोपुर मे कोटा, बूँदी, झालावाड़, जिलों के पर्यटन स्थलों की जानकारी उपलब्ध करायी जानी चाहिए जिससे पर्यटकों का रूख कोटा, झालावाड़, बूँदी की तरफ अधिक हो सके।

3. रेल्वे स्टेशन पर सूचना केन्द्र की स्थापना की जानी चाहिएः

कोटा रेल्वे स्टेशन जो बड़ा जंक्शन है। यहाँ अभी तक पर्यटक सूचना केन्द्र की स्थापना नहीं की गयी है। कोटा रेल्वे स्टेशन पर पर्यटन सूचना केन्द्र की स्थापना की जाए जिससे यहाँ के पर्यटन स्थलों की जानकारी उपलब्ध हो सके और पर्यटको का आना इस संभाग की ओर अधिक से अधिक हो।

4. शैक्षणिक पर्यटन को बढ़ावाः

कोटा शैक्षणिक नगरी के तौर पर जाना जाता है। इसलिये यहाँ शैक्षणिक पर्यटन की अच्छी संभावनाऐं हैं। इसके साथ ही यहाँ पर्यटन स्थलों की जानकारी ज्यादा से ज्यादा लोगों को दी जाए तथा शैक्षणिक भ्रमण को प्रोत्साहित किया जाए।

5. सरकार द्वारा अधिक प्रयास की आवश्यकताः

कोटा संभाग में सरकार द्वारा किये गये प्रयास अपर्याप्त हैं। सरकार द्वारा यहाँ के पर्यटन स्थलों की मरम्मत, साफसफाई पर वित्त की अधिक व्यवस्था की जानी चाहिए, और आवश्यक रूप से प्रचारप्रसार किया जाना चाहिए।

6. शहरी विकास पर ध्यान दिया जाना चाहिएः

कोटा संभाग व सवाईमाधोपुर में शहरी विकास पर जोर दिया जाना आवश्यक है। कोटा नगर को छोड़ दिया जाये तो अन्य पर्यटक स्थल जिनमें

बूँदी व सवाईमाधोपुर में शहरी सुविधाओं का अभाव है, पर अधिक जोर देना आवश्यक है। जिससे पर्यटकों को अधिक से अधिक सुविधाऐं मिल सकें।

7. स्थानीय उत्पादों को बढ़ावाः

कोटा संभाग के स्थानीय उत्पादों जैसे कोटा में कोटा डोरिया साड़ी जो काफी प्रसिद्ध है, बूँदी के भित्ति चित्र शैली, झालावाड़ के संतरें आदि उत्पाद हैं जिनको बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

8. पर्यटन धरोहरों का पर्याप्त संरक्षणः

कोटा संभाग की ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण किया जाना चाहिए।

9. कोटा सम्भाग में पर्यटन स्थलों का विकास किया जाना चाहिएः

कोटा संभाग में बाराँ जिला जहाँ पर्यटन की पर्याप्त संभावनाऐं मौजूद है अभी इसका विकास पर्यटन के उद्देश्य से नहीं किया गया है और ना ही यहाँ पर्यटकों के लिए आधारभूत सुविधाओं का विकास किया गया है। यहाँ सोरसन संरक्षित क्षेत्र जहाँ पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अनेक पर्यटन स्थल हैं, जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, का विकास किया जाना चाहिए। इसके अलावा घड़ियाल सेंचुरी आदि अनेक स्थान है जहाँ पर्यटन के विकास के लिए बेहतर प्रयास किया जाना चाहिए।

10. आधारभूत सुविधाओं का विकासः

पर्यटन विकास के लिए आधारभूत सुविधाओं का और अधिक विकास किया जाना आवश्यक है। सड़कें जो कोटा संभाग के अन्य जिलों को जोड़ती हैं। खस्ता हालत सड़कों को ठीक किया जाना चाहिए, जिससे पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सके।

11. मनोरंजन के साधनों को बढ़ावा देना चाहिएः

कोटा संभाग में मनोरंजन के साधनों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, कोटा का दशहरा मेला, बूँदी का बूँदी उत्सव, सवाईमाधोपुर का गणेश मेला, झालावाड़ का चन्द्रभागा मेला जो मनोरंजन के अच्छे साधन हैं, इनका प्रचार पर्याप्त मात्रा में किया जाना चाहिए जिससे पर्यटक यहाँ आकर्षित हो।

12. पर्यटन से जुड़े लोगों को सुरक्षा प्रदान करनी चाहिएः

पर्यटन से जुड़े लोगों की सुरक्षा के लिए बीमा योजना चालू करनी चाहिए जिसमें गाईडों, ट्रेवल ऐजेंटों तथा अन्य कर्मीयों को जोखिम से सुरक्षा पदान हो सके।

इस प्रकार स्पष्ट है कि कोटा संभाग में पर्यटन की दृष्टि से बहुत कुछ किया जाना बाकी है। इसके लिए गंभीर प्रयास करने होगें।

परिशिष्ट(i)
संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Affeld, D., Social aspects of the development of tourism, U.N. Planning and Development of tourist industry in the ECE Region, United Nation, New York, 1975.
2. Aima, Ashok, Manhas, Parikshat Singh and Bhasim, Jaya , Tourism Destination Management : Strategic Practices and Policies.
3. Butcher, J., The Moralisation of Tourism : Sun, Sand..and Saving the World? Routledge, London, 2003.
4. Chattopadhyaya, Kunal, Economic Impact of Tourism Development : An Indian Experience, Kanishka Publishers, New Delhi, 1995.
5. Chawla, Romila, Tourism Research Planning and Development, Sonali Publication, New Delhi, 2003.
6. Cukier, J., Tourism Employment issues in Developing Countries : Example From Indonesia In : Sharply., Rand Telfer, D.J. eds. Tourism and Development Concepts and Issues clevedon, Channel View Publication, 2002.
7. Cukier, J., Tourism Employment issues in Developing Countries, 2002
8. Dhar, Prem Nath, International Tourism (Emerging Challenges and Future Prospects, Kanishka Publisher's New Delhi, 2000.
9. Dixit K. Saurabh, Tourism Organization, Reference Press, 2005.
10. Dwyer, L., Economic Contribution of Tourism to Andhra Pradesh, India, Tourism Recreation, 2000.
11. Economic Development Investment opportunity Study, Sawai Madhopur, Rajasthan, CII Report, 2014.
12. Gjerald, O., Socio-Cultural Impact of Tourism : A case study from Norway, 2005.
13. Jha, S.M., Tourism Marketing, Himalaya Publishing House, New Delhi, 2008.
14. Kamra K. , Krishan , Economics of Tourism , Kanishka Publishers , New Delhi, 2001.
15. Lodha, R.C. Raina, A. K. Fundamentals of Tourism System, Kanishka Publishers, New Delhi 2004.
16. Malra, Renu, Tourism, Principles, Practicals, Concept and Philosophic, Anmol Publication, New Delhi, 2013.

17. Modi, Shalini , Tourism and Society , Rawat Publication, Jaipur, 2001
18. Nadda, A.L. and Sharma, L.R., Tourism Potential In: L.R. Verma : Natural Resources and Development in Himalaya, Malhotra Publishing House, New Delhi, 2000.
19. Negi, Jagmohan Manohar, G., Adventure Tourism and Sports : Rishk and Challenges, Kanishka Publishers, New Delhi, 2001.
20. Negi, JMS, Tourism Hoteliering : A World-wide Industry, Gitanjali Publishing House, New Delhi, 1988.
21. Pandey, S.V. , Impact of Tourism on Rural Life, World Leisure Journal, 2006.
22. Rahman, S.A, Beautiful India : Rajasthan, Published Preference Press, New Delhi, 2006
23. Raina, Chaman Lal Raina , Kumar Abhinav , Fundamentals of Tourism and Indian Religion (Principles and Practices), Kanishka Publishers, New Delhi, 2005.
24. Raj, Lajipathi H, Development of Tourism in India, Published by Print well, Jaipur, 1993.
25. Rajasthan Directories of Economics Statistics 2011.
26. Rajasthan Urban Sector Development Investment Program-Bundi, Jhalawar, Road Improvement Subproject (Tr-02) Prepared by Local Self Government Department, Rajasthan, Urban Infrastructure Development Project, 2012.
27. Ramacharya, Tourism and Cultural Heritage of India, RBSA Publisher’s Jaipur, 2007.
28. Reid, G, Donald, Tourism, Globalization and Development (Responsible Tourism Planning), Pluto Press, London, 2003.
29. Sarngadharan, M. Raju, G. Tourism and Sustainable Economic Development (Indian and Global Perspectives), New Century Publication, New Delhi, 2005.
30. Sebastian, L.M. and Rajagopalan, P. Socio-Cultural Transformation at two destinations in Kerala, Journal of Tourism and Cultural Change, 2009.
31. Seth, P.N., Successful Tourism Management, Sterling Publisher’s, New Delhi, 1994.
32. Seth, Pran Nath, Successful Tourism Management, S.P.R.L., New Delhi, 1985.
33. Sethi , Praveen , Hand Book of Sustainable Tourism, Anmol Publication, New Delhi 1999.
34. Sethi, Praveen , Nature and Scope of Tourism, Rajat Publication, New Delhi, 1999
35. Sethi, Praveen , Tourism the Next Generation, Anmol Publication, New Delhi, 1999.
36. Sethi, Praveen, Tourism : Today and Tomorrow, Anmol Publications, New Delhi 1999.

37. Sharma , K.K. Tourism and Development Publisher's Sarup Sons, New Delhi, 2005
38. Sharma, Ajay Kumar, Impact of Tourism on the Changing Environment of Pushkar, Unpublished, 2005.
39. Sharma, K. Jitendra, Contemporary Tourism and Hospitality Management, Kanishka Publishers, New Delhi, 2006.
40. Sharma, K.C., Tourism Policy, Planning, Strategy, Pointer Publishers, Jaipur, 1996.
41. Sharma, K.K., Tourism and Economic Development, Sarup Sons, New Delhi, 2004.
42. Sharma, K.K., Tourism and Socio-cultural Development, Sarup Sons, New Delhi, 2004.
43. Sharma, Kumar Yogesh, Rural Tourism Development, Pointer Pubnlisher's Jaipur, 2005.
44. Sharma, Shashi Prabha, Tourism Education : Principles, Theories and Practices, Kanishka Publishers's, New Delhi, 2004.c
45. Shelly, Leela, Tourism Development in India, Arihant Publication, Jaipur, 1991.
46. Singh, Anand , Tourism in Ancient India, Serials Publication , New Delhi , 2005
47. Singh, G.B. , Research Methodology, Paradise Publishers, Jaipur, 2011.
48. Singh, K. Percy, Fifty Years of Indian Tourism, Kanishka Publication, New Delhi, 1998
49. Singh, Ratandeep, Dynamics of Modern Tourism, Kanishka Publishers, New Delhi, 1996.
50. Singh, Ratandeep, Infrastructure of Tourism in India, Kanishka Publishers, New Delhi 1996.
51. Singh, Ratandeep, Tourist India : Hospitality Services, Kanishka Publishers, New Delhi, 1996.
52. Singh, Tejvir, Smith. L. Valene Fish, Mary, Tourism Environment (Nature Culture Economy), Inter-India Publication, New Delhi, 1992.
53. Sinha, P.C., Ecotourism and Mass Tourism, Anmol Publication, New Delhi, 1999.
54. Sonal, Rajasthan (Society, Art and Culture), Hastlipi, Jaipur, 2009.
55. Suntikul, W, The Effects of Tourism Development on Indigenous Populations in Luang Namtha Proviance Laos, In : Butler, R. and Hinch, T, Tourism and indigenous Peoples issues and implications, London Elsevier, 2007.
56. Todaro, M., Economic Development in the third World, New York, Longman, 1989.

57. Tourism Sector in India, Parliament Library and Reference, Research, Documentation and Information service, August 2013.
58. Wall, G. and Mathieson, A, Tourism: Change, Impact and Opportunities, Ist Edition Pearon, England, 2006.

हिन्दी संदर्भ गन्थ

1. गोयल, राजेश, भारतीय पर्यटन उद्योग, वंदना पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2011
2. गोयल, राजेश, पर्यटन सुविधाओं का प्रबंधन, वंदना पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2011
3. जोशी, अतुल, कुमार अमित और जोशी, महिमा, भारत में आधुनिक पर्यटन, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2010
4. गर्ग, बी.एल., भारद्वाज, आनन्द, राजस्थान (भौगोलिक एवं साँस्कृतिक अध्ययन), शिवा पब्लिशर्स, उदयपुर, 2000
5. रैना, ए.के. और सिंह, किशोर, पर्यटन प्रबंध और व्यवहार, अभिनव प्रकाशन, अजमेर, 2007
6. रैना, अभिनव कमल और सारण, भूराराम, पर्यटन एवं होटल उद्योग : प्रबंध, सिद्धान्त एवं व्यवहार, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2010
7. जैन, कुमार महेश, शोध विधियाँ, यूनिवर्सिटी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007
8. पाण्डेय, अरुणा और पाण्डेय, गणेश, शोध प्रविधि, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2005
9. बोहरा, बंदना, शोध प्रविधि, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2009
10. जैन, बी.एम. रिसर्च मैथ्डोलॉजी, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर 2007
11. आहूजा, राम, सामाजिक सर्वेक्षण एवं अनुसंधान, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2003
12. मिश्रा, महेन्द्र कुमार, आधुनिक शोध प्रणाली, मार्क पब्लिशर्स, जयपुर, 2009

13. सिंह, शशिभूषण, सामाजिक अनुसंधान, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2012
14. शर्मा, मानसी, सामाजिक सर्वेक्षण तथा अनुसंधान, वाईकिंग बुक्स, जयपुर, 2012
15. त्रिपाठी, विनायक, रिसर्च मैथोडोलॉजी, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2012
16. नैगी, जगमोहन, पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धान्त, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007
17. इग्नू– टी.एस–1., पर्यटन मं आधार पाठ्यक्रम उद्योग, 1997
18. आनन्द, एम.एम., टूरिज्म एण्ड होटल इण्डस्ट्री ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, 1985
19. शर्मा, के.के. टूरिज्म इन इण्डिया, सी.पी.एच. जयपुर, 1991
20. प्रताप, राणा, पर्यटन भूगोल, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008
21. भारत, वार्षिक संदर्भ ग्रन्थ, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2014
22. जैन, यशोधरा, टूरिज्म डवलपमेंट, ए.पी.एस., नई दिल्ली, 2001
23. रावत, ताज, पर्यटन का प्रभाव एवं प्रबंधन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
24. राव, कनक सिंह, धरोहर, पिंकसिटी पब्लिशर्स, जयपुर, 2013
25. व्यास, राजेश कुमार, पर्यटन उद्भव एवं विकास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2013
26. गिल, पुष्पेन्द्र एस., डायनामिक्स ऑफ टूरिज्म, अनमोल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994
27. भल्ला, एल.आर. सामयिकी राजस्थान, कुलदीप पब्लिकेशन, जयपुर, 2003
28. सक्सेना, जुगल बिहारी, क्रोनोलॉजी, राजस्थानः एक परिचय, पी.एम.सी पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यटर्स, भरतपुर।

29. राष्ट्रीय पर्यटन नीति, 2002, पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय, पर्यटन विभाग, भारत सरकार, 2002

30. राजस्थान पर्यटन सांख्यिकी वार्षिक प्रतिवेदन, 2013

31. शर्मा, वीरेन्द्र, रिसर्च मैथोडोलॉजी, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 4जी मकण, 2007।

32. श्रीवास्तव, डी.एन., अनुसंधान विधियाँ, साहित्य प्रकाशन, आगरा, 2009।

WEBSITES

1. www.kota-bundi.com
2. www.sawaimadhopur.in
3. www.tour my India.com/wildlife-Santuries/ranthambore national park
4. www.indianholiday.com/fairs and festival/Ras
5. www.hindi.nativeplanet.com/jhalawar
6. www.rajasthandirect.com/tourism/Jhalawar/places-to-sea-in-jhalawar
7. www.rajasthandirect.com/tourism/Bundi/places-to-sea-in-bundi.
8. www.kotacityinfo.com/transportation in kota.
9. www.bundicityinfo.com/transportation in bundi
10. www.sawaimadhopur.nic.in
11. www.jhalawar.nic.in
12. www.cleartrip.com/hotels/India/Kota
13. www.indiatravellist.com/Rajasthan/rtdc hotel kota.
14. www.ummedbhawanpalace.com
15. www.stayzilla.com
16. www.welcomeheritagehotels.in/hotel facilities
17. www.goibibo.com/hotels/detail/kota/sukhdham.
18. www.hotelsbundi.com
19. www.hotelbundihaveli.com
20. www.hotelbundivilas.com
21. www.hoteldevniwas.com
22. www.hotelhavelibrajbhushan.com
23. www.ishwariniwas.com
24. www.naihaveli.com
25. www.navalsagarpalace.com
26. www.tripadvisor.in
27. www.oberaivanyavilasresort.com
28. www.nahargarhranthambore.com
29. www.travelanurag,com
30. www.rtdc.rajasthanhotelvinayak.gov.in

31. www.rtdc.rajasthan/jhomabavari.gov.in

32. www.stayzilla/jhalawar.com

33. www.indiatravellist.com/rajasthan/rtdc/gavditalabjhalawar.html

34. www.holiday.com/hotels/Baran

35. www.rajasthantourism.org.in

36. www.directorateofeconomicstatistics.html

पत्रपत्रिकाऐं

1. योजना, मासिक पत्रिका, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।
2. कुरूक्षेत्र, मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार
3. रेलगाडियॉ एक दृष्टि में, रेलवे विभाग, भारत सरकार
4. एक्सल ए मन्थली टाईम टेबिल आफ एयर लाइन्स, अगस्त, 2010
5. प्रतियोगिता दर्पण, दिसम्बर 2005, प्रतियोगिता दर्पण आगरा
6. दैनिक भास्कर, समाचार पत्र
7. चम्बल संदेश
8. राजस्थान पत्रिका, समाचार पत्र
9. 11 वीं पंचवार्षीय योजना, 2007–2012
10. Kota Tourist Guide Map
11. Discover Rajasthan
12. Rajasthan Road Distance Chart, Pamphlets, Departmental of Tourism, Government of Rajasthan
13. Bhandari, R.K. Bhupesh and Sharma, Piysh Advances in Hotel, Travel Tourism Research ; A Global Perspective, February, Banarsidas Chandiala Institute of Hotel Management Catering Technology, New Delhi, 2014.

परिशिष्ट(ii)

प्रश्नावली

(अ) आर्थिक प्रभावः

1. क्या पर्यटन से रोजगार में वृद्धि हुई है?

....

....

....

2. क्या पर्यटन से आप की आय में वृद्धि हुई है?

....

....

....

3. पर्यटन के क्या नकारात्मक आर्थिक प्रभाव रहे हैं ?

....

....

....

4. क्या पर्यटन से आपके जीवन स्तर में वृद्धि हुई है?

....

....

....

5. क्या पर्यटन से यहाँ रोजगार की संभावनाऐं हैं?

----

6. क्या पर्यटन से शहरी विकास हुआ है ?

(ब) सामाजिक प्रभावः

7. क्या पर्यटन विकास का सामाजिक प्रभाव सकारात्मक रहा है?

----

8. यहाँ पर्यटन से उत्पन्न होने वाले नकारात्मक प्रभाव क्या रहे हैं?

----

9. पर्यटन की यहाँ क्या संभावनाऐ हैं?

----

10. सरकार का पर्यटन विकास में क्या योगदान रहा है?